CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

सोच माला

गीत, दोहे, ग़ज़लें

तुफ़ैल होशियारपुरी

संकल कर्त्ता

राजेन्द्र मलहोत्रा

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

© सर्वाधिकार
शामे बहार ट्रस्ट अम्बाला
1995

सुपर्विजन	:	के० एल० नांरग 'साकी'
मुद्रण	:	ए वन आफ़सैट प्रिन्ट्स कूचा चेलान, दरियागंज, दिल्ली।
प्रोडक्शन	:	मीडिया इन्टरनेशनल 3366, बग़ीची अच्छेजी बाड़ा हिन्दू राव, दिल्ली
प्रकाशक	:	शामे बहार ट्रस्ट, अम्बाला
वितरक	:	
भारत में	:	शामे बहार ट्रस्ट पो० ब० ३०, अम्बाला
पाकिस्तान में	:	एहसान अकादमी शेख़ बिल्डिंग, रायल पार्क, लाहौर
मूल्य	:	100 रु०

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

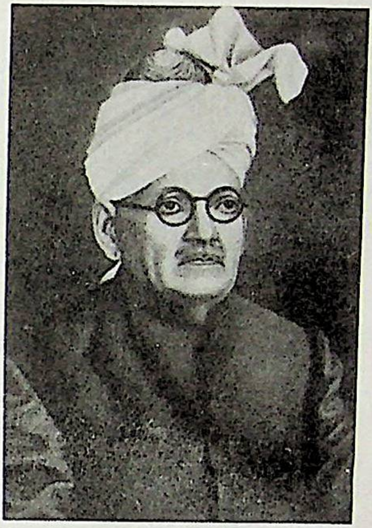

सर्मपण

अपने आदरणीय पिता स्वर्गीय वाहरी ऱाम आसरा मल मलहोत्रा

और

अपनी प्रिय माता स्वर्गीया श्रीमती लक्ष्मी देवी

के नाम

जिनके आर्शीवाद से मुझे अक्षर पढ़ने लिखने और समझने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

राजेन्द्र मलहोत्रा

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

वादा और प्यार का कर्ज़

गुज़िश्ता सालों के दौरान जब भी पाकिस्तान गया तो मरहूम तुफ़ैल होशिसारपुरी की ख़िदमत में हाज़िरी मेरे लिए एक मुक़द्दस फ़रीज़े की मानिन्द रही। तुफ़ैल साहब मरहूम की अदबी महफ़िलें जो कभी तो वितसता नदी या कभी दरिया ए जेहलम के किनारे वाक़े राम घाट में सजा करती थीं, न सिर्फ़ रौनक़े शहर हीं थीं बल्कि समाजी और अदबी तौर पर भी अपना ख़ास मुक़ाम रखती थीं - इन महफ़िलों में आंजहानी पंडित राम जवाया ख़दाँ, दर्शनसिंह आवारा, सैयद ज़मीर जाफ़री और मोहतरम जोगी जेहलमी के अलावा मरहूम तुफ़ैल होशियारपुरी की क़द आवर शख्सियत भी शरीक हुआ करती थी। इन बुज़ुर्गों की नज़रे इनायत ने मुझे हमेशा असीरे करम रखा। तुफ़ैल साहब अज़ हद वज़ेदार, फ़सी हुलबयान, सैकुलर नज़रियाती और उर्दू हिन्दी के बेहतरीन शायर थे। उनकी मुरस्सा व पाटदार आवाज का तरन्नुम ओर हिन्दी पर पूरा उबूर, आसान यानी सहले मुम्तने की शायरी, क़ाबिले फ़हम और पुरअसर जो सुनने वाले के दिलो दिमाग़ पर फ़ौरन क़ाबिज़ हो जाये - ग़र्जे कि वह बहुत सी खूबियों के हामिल थे। इसका बहुत ही कग दोस्तों को इल्म होगा कि मुनीमी पर उनको पूरा उबूर हासिल था और काफ़ी अरसे जेहलम में हिन्दी मुनीमी का स्कूल जारी रखा।

यूं तो दोहे की सनफ़े सुख़न पर बहुत से शोराये कराम ने तबआज़माई फ़रमाई है मगर जो शौहरत मरहूम तुफ़ैल साहब के दोहों को नसीब हुई, वह उन का ही हिस्सा हैं।

वह मेरे बहुत ज़्यादा ज़ोर देने पर बड़ी मुश्किल से अपने हिन्दी कलाम और दोहों को किताबी शकल अता करने पर रजामंद हुए और उसका उर्दू एडीशन पाकिस्तान से शाय फ़रमाया। साथ ही मुझ से वादा किया कि भारत में उनकी यह "सोच माला" हिन्दी ज़बान में शामे बहार ट्रस्ट अम्बाला के ज़ेरे एहतमाम शायअ हो - उधर क़िबला मरहूम की उम्र ने वफ़ा न की और इधर चन्द नागुज़ीर वजूहात की बिना पर "सोच माला" की इशाअत में ताख़ीर हुई वर्ना सोच माला की तआरफ़ी तक़रीब और रस्मे रूनमाई मरहूम के हाथों ही अन्जाम पाती।

मेरे लिए और अराकीन शामे बहार ट्रस्ट अम्बाला के लिए सोच माला की इशाअत एक अहम फ़रीज़ा था, जिस से बार आवर होने की पूरी कोशिश की गई है। मैं इस मौक़े पर बहुत खुश हूं कि मरहूम से किया हुआ वादा पूरा हुआ।

राजेन्द्र मलहोत्रा
चेयरमैन
शामे बहार ट्रस्ट अम्बाला

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

सोच माला

तुफ़ैल होशियारपुरी की ताज़ा काविश ज़ेरे नज़र आई तो ग़ैर इरादी तौर पर उसके मुताले में ऐसा महव हुआ कि दो रोज़ तक लिखने पढ़ने का कोई और काम न हो सका। ग़ालिबन इस का एक सबब यह भी होगा कि हिन्दी शायरी से मुझे बचपन ही से यकगूना दिलचस्पी रही है "सोच माला" पढ़ते वक़्त मुझे बार बार यह एहसास हुआ कि लाहौर में बैठ कर इस मायार की हिन्दी शायरी तुफ़ैल साहब किस तरह कर रहे हैं ? यह एहसास बाइसे हैरत भी था और निशात अफ़रोज़ भी। उनके हिन्दी कलाम का मुताला करते हुए रूह को एक अजीब क़िस्म की आसूदगी नसीब हुई। वजह ग़ालिबन यह है कि मैं अदबो शेर में ख़ालिस क्लासिकी तर्ज़ का दिलदादा हूँ। नेज़ ज़िन्दगी के आम मामूलात में भी उसी अन्दाज़ और रखरखाव को पसंद करता हूँ। इस किताब की वर्क़ गर्दानी के दौरान यह एहसास बराबर जागता रहा कि तुफ़ैल साहब हमारे क्लासिकी शेरोअदब और तहज़ीब की रिवायत को क़दम क़दम पर मलहूज रख रहे खुदातरसी का तसव्वुर इस तहज़ीब का वह बुनियादी उन्स्र है, जिस ने उनके कलाम को पाकीज़गी की वह जोत अता की है, जिस से मन मंदिर के दंरो बाम रौशन हो जाते हैं। यही वह तसव्वुर है जिस के एहतिराम के नतीजे में उनकी फ़िक्रो नज़र बहकने या भटकने नहीं पाती। इस मामले में उनका ज़हन आईने की तरह साफ़ व शफ़ाफ़ है। तरक्की के इस नाम निहाद दौर में जब रहगुज़ारे हयात के हर मोड़ पर हिर्स व हवस के नाग कुंडलियां मारे बैठे हैं और उनके ज़हरीले फुंकार से तमाम फ़ज़ा धुआंधार सी हो चली है, तुफ़ैल साहब बड़ी साबित क़दमी से उस डगर पर चलते चले जा रहे हैं। जिस पर फ़िक्र के सरमदी उजाले फैले हुए हैं। नूरानी किरनों की सौग़ात उनके लिए कुदरत की जानिब से एक बहुत बड़ा इनाम है। वाह वाह। क्या शेर कहा है -----

रात को कैसे दिन कह दूँ मैं, दिन को कैसे रात तुफ़ैल
अंधियारे अंधियारे ठहरे, उजियारे, उजियारे हैं

इसी मौजू के ज़ैल में उनके मुतादि्द अशआर ने मुतासिर किया है

लोभी बन्दे, काले धंधे, खोटे कारोबार मिले
सच्चाई की जिन्स से ख़ाली दुनिया के बाज़ार मिले
बात बात पर क़समें खाये, बात बात पर बोले झूठ
नाम उसका हत्यारे जग में, फिर भी रामऔतार मिले
निर्धन की कोई बात न माने, कोई न पूछे निर्बल को
कौन कौन में दुनिया के धन की जय जयकार मिले

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

मीठी मीठी, भोली भाली बातें हैं इस दुनिया की
मुंह में राम, बग़ल में छुरियां ले के सब संसार मिले।

उनकी शायरी पढ़ते वक़्त हिन्दी शायरी के भक्ति दौर के मुतादिद शोरा की गूंज सुनाई देती है, अलावा अज़ीं उर्दू और फ़ारसी के कई शोरा ज़हनी उफ़क़ पर उभरने लगते हैं। मसलन तुफ़ैल साहब फ़रमाते हैं -----

देख सके तो मूरख बन्दे, मन की आँखें खोल के देख
कौन हंसे तारों में छिप कर, फूलों में मुस्काये कौन

असग़र ने अपने आरिफ़ाना जज़्ब में डूब कर इस मफ़हूम को इस तरह अदा किया है ----

लाला व गुल तुम नहीं हो, माहो अंजुम तुम नहीं
रंगे महफ़िल बन के आख़िर कौन इस महफ़िल में है

फ़ानी ने इस खसूस में अवामुन्नास की कम निगही का मातम करते हुए ही कहा होगा ----

सामाने सद निगाह है हर ज़र्रा ख़ाक का
लेकिन यह देखना है, कोई देखता भी है

तुफ़ैल साहब के इन अशआर पर नज़र जम कर रह गई ----

यह संसार है तेरी रचना, यह जग तेरी माया है
मुख पर पर्दा डाल के तूने कैसा खेल रचाया है

यह शेर पढ़ते हुए बेसाख़ता उस्ताद अल्लामा सीमाब अकबर आबादी का यह शेर ज़हन में उभर आया ----

यह दुनियाए मजाज़ आईना ख़ाना है हक़ीक़त का
छुपा कर अपनी सूरत, फेंक दी हैं अपनी तस्वीरें

इस मफ़हूम को क़दरे वज़ाहत से तुफ़ैल साहब ने यूं बयान किया है ----

तारों की लश्कार में तूने
फूलों की महकार में तूने
कैसे कैसे भेस में तूने
अपना रूप छुपाया है

तुफ़ैल साहब ने एक जगह फ़रमाया है ----

पोथी पढ़ ले प्यार की, इल्म से मुंह को मोड़
पंडित बनना है अगर, सब ग्रन्थों का छोड़

नज़ीर अकबर आबादी ने इसी बात को दूसरे अन्दाज़ में कहा है ----

सब किताबों के खुल, गये मानी
जब से देखी नज़ीर दिल की किताब

इनसान की जिबिल्ली फ़ितरत के बारे में तुफ़ैल साहब के [illegible] हिन्दी, अरबी,

CC-0. Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

फ़ारसी और उर्दू के मुतादि्द असातज़ाए फ़न के विजदानी तहरकात से हम आहंग दिखाई देते हैं। मसलन उनके यह अशआर ----

नीच कभी बन सके न उत्तम, कितना मान बढ़ाओ
कांच का मनका बने न मोती पानी लाख चढ़ाओ।

आदाबे सियासत व हुक्मरानी के बाब में उन्होंने बड़े दर्दमंदाना अन्दाज़ में इज़हारे ख़याल किया है। कमो बेश निस्फ़ सदी से इस मुल्क में जो कुछ हो रहा है, वह उनकी नज़र में है। वह हक़ायक़ से चश्मपोशी क्योंकर कर सकते हैं। यह एक क़िस्म की बददयानती है और उन जैसे खुदातरस इन्सान से इसकी तवक़्क़ो हो भी नहीं सकती। अगर अरबाबे इख़तियार ज़रा भी इन्सानी व अख़लाक़ी अक़दार के हामिल हों, तो यह अशआर उन के लिए ताज़ियाने से कम नहीं ----

उसको राजा मत कहो, ज़र का कहो असीर
जिस राजा के राज में लुटने लगें, फक़ीर
रइयत का दिन रात हो धंधा लूट खसूट
राज वह क्या जिस राज में सच भी बोले झूठ
झूठों को साचे कहलायें, बद कहलायें नेक
राज वह क्या जिस राज में बुरा भला सब एक

तुफ़ैल साहब की सोच सही तामीरी ख़तूत पर इस्तवार है जो उनके एक सच्चे मुसलमान और एक अच्छे इन्सान होने की दलील है।

हिन्दी शायरी का एक बुनियादी वस्फ़ उसका हद दर्जा दिलगुदाज़ पैरायाए बयान है - इस में मुहब्बत का इज़हार चूंकि सनफ़े नाज़ुक की तरफ़ से होता है लिहाज़ा उसकी लताफ़त और रिक़्क़ते गुदाज़ का आलम ही कुछ और है - उनकी हिन्दी शायरी जज़बात के उन नाज़ुक व लतीफ़ तारों को एक दिलपज़ीराना अन्दाज़ में छूती और छेड़ती महसूस होती है - इस तरह के अशआर की लताफ़त से भला कोई साहबे ज़ौक कैसे इन्कार कर सकता है ----

दूर कहीं परदेस में जब से मेरा साजन रहता है
सावन रूत के बाद भी मेरी आँखों में सावन रहता है
मेरे बस में नहीं मेरा जीवन, पी के हाथों में मन की डोरी है
नैन करते हैं दिल की रखवाली, मन है क्या रूप की तिजोरी है
क्या जाने वह चरण कंवल कब महकें मेरे आंगन में
आशाओं की जोत जगा कर पग पग नैन बिछाये हैं
जलता हो जंगल में जैसे पेड़ महकते चन्दन का
फूंक रही है ऐसे मुझ में आग मिरी तन्हाई की

और जज़बात की तरंग में लहराता हुआ क्या ही उम्दा शेर कहा है ----

कौन सुने सिंगार की बातें नैनन बोली समझे कौन

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

निर्मोही ! बिन तेरे कहानी, कौन कहे अंगड़ाई की

ज़ैल के अशआर में जज़्बा व एहसास की एक और तुरफ़ा दिलकशी है -----

प्रीत जान का रोग सहेली, प्रीत का रोग लगाये कौन
कौन जलाये जल में दीपक, आग में फूल खिलाये कौन
सांसों में कलियां सी महकें, होंठों पर मुस्कायें फूल
अंग अंग से खुशबू निकले, प्यार का भेद छुपाये कौन
मन में प्रेम की जोत जली, नैनन बीच समाये नयन
कह दिया बैरी मन का भेद, मूल नहीं शरमाये नयन .

नैनन घात के बारे में यह शेर भी ख़ूब है ----

पलकों की ओट में रहते हैं
यह नैन बड़े शर्मीले हैं

इस शेर को पढ़ातो मअन फ़ानी का यह शेर याद आ गया ----

वह दिल की आड़ में रहते हैं फ़ानी
तमन्ना उन के मेरे दरमियां है

उनके बेशतर अशआर में फ़िक्रो ख़याल की वह तजल्ली मआब लताफ़तें भी है, जिन से ज़हन यक बयक रौशन हो जाता है और चश्मे तसव्वुर वह सब कुछ देख लेती है, जिसे जाने तसव्वुर कहा जाये तो ग़लत न होगा। क्या इन अशआर की मानवी फ़ज़ा इस खसूसियत की हामिल नहीं ?

घूंघट घूंघट चन्दा चमके
आंगन आंगन फूल खिले
कुंज कुंज में उसकी बातें
पनघट पनघट उसकी याद
टीका बन कर सुलग रही है
माथे पर चन्दन की आग

एक दोस्त के क़ौल के मुताबिक़ यह असल में फ़ज़ाए शेर में सितारे उछालने का फ़न है। उन हसीनो जमील हिस्सयाती दवार, ज़ाती मामलात के बैन बैन मुताल्लिक़ाते हयात की हकीमाना गिरह कुशाइयां भी अपना जवाब नहीं रखतीं - ऐसे मवाक़े पर उनका मु..शहिदाती शऊर सरबस्ता राज़ों की पर्दाकुशाई करता है, फ़िक्रो शऊर को नये बाल वपर मयस्सर आते हैं और ज़हन के गोशे यकबारगी रौशन होते दिखाई देते हैं। बज़ाहिर यह सादा से अशआर कितनी अज़ीम आफ़ाक़ी सच्चाइयों को अपने दिलों में लिये हुए हैं ----

सांस की नाज़ुक डोर पर इतना मत इतराओ
जीवन सागर में बहे, तिनके की इक नाव
क्यों सीना ताने फिरे है, ओ मूरख इन्सान

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

प्यार जो निर्बल से करे, उसे कहें बलवान
वक़्त वक़्त की बात है, समय समय के बोल
फूटें भाग तो लाल भी बिकें कौड़ियों मोल
रूप, जवानी, कोमलता, है एक सपन समान
कलियां खिल कर क्यों मुरझायीं ले इनसे तो ज्ञान
कांच के मनके बाज़ारों में बिकें मोतियों मोल

आम ज़िन्दगी के मामूलात में एक ख़ास क़िस्म की एहतियात पसंदी की रविश दरकार है। इस मामले में बाज़ औक़ात ख़फ़ीफ़ सा तवाजुन भी बिगड़ जाये तो ज़िन्दगी तलख़ियों से भर जाती है। उन्होंने इसी नुक़्ताए नज़र से यह कहा होगा-

छेड़े जो भी नीच को आख़िर को पछताये
कीच में पत्थर फेंकिये, कीच से मुंह भर जाये

कमज़र्फ़ लोगों के हाथ में दौलत की बोहतात ने जो गुल खिलाये हैं, उस से हर दर्दमंद दिल मुतासिर होता है। ज़िन्दगी के इस सानेहाती मरहले पर एक सूफ़ीमंश इन्सान क्योंकर करब और अज़ीयत से दोचार न होगा, यह अशआर ऐसे ही दुखी दिल की आवाजे हैं ----

अंगारों में लफ़ज़ ढलें और शोलों में जज़बात
लब जल उठें, आये लबों पर जब कलजुग की बात
हरफ़ हरफ़ शोलों में ढले, अग्नि बने ज़बान
कलजुग के बरतांत की जानिब जिसदम जाये ध्यान

उर्दू शोरा में इस ख़सूस में हादी मछली शहरी का यह शेर बहुत पसंद है ---

रंग किसी हालत में न बदला क़िस्मत की कोताही का
मेरी बारी जिस दम आई, टूट गया पैमाना भी

इसी मौजू पर फ़ानी मरहूम का यह शेर भी दिल को छू लिया है----

तामीरे आशियां की हवस का है नाम बर्क़
जब मैं ने कोई शाख़ चुनी, शाख जल गई

तुफ़ैल साहब ने इस जहाने फ़ानी में उम्र का एक तवील अरसा बसर किया यहां के मुतादिद नशेबो फ़राज़ उन की नज़र में रहे। इस मामले में उनकी तौजीहात और उनकी नौइयत ख़्वाह तजुरबाती हो या मुशाहिदाती, इन्तहाई गिरां माया हैं यह नौवारिदाने बिसाते हवाये दिल के लिए कुछ रहनुमा उसूल वज़ा करते हैं इस सिलसिले में सिर्फ़ एक शेर दर्ज करता हूँ ----

इस मैले संसार में यूं रख दिल को साफ़
कीच के अन्दर जिस तरह रहे कंवल शफ़ाफ़

भगत कबीर के बाज़ फ़रमूदात की तौजीह उन्होंने दूसरे जाविये से की

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

है जिसे इस खसूस में इज़ाफ़ा तसव्वुर किया जा सकता है। कबीर की तरह तुफ़ैल साहब भी वसीउलमशरबी की डगर के मुसाफ़िर है। यह चीज़ मेरे नज़दीक उनकी शायरी का एक अहम् रूख़ है। इसलिए कि यह इस्लाम की असल रूह के ऐन मुताबिक है।

गुफ़्तगू तवील हो गई है और इस क़दर तवील बयानी मुनासिब नहीं लिहाज़ा आख़िर में मुख़्तसिर तौर पर इतना अर्ज़ करते हुए इजाज़त चाहूंगा कि मुझे उन के कलाम का मुताला करते हुए बातिनी मसर्रत का एहसास हुआ। यह मजमूआ मेरे लिए एक ख़्वाने नेमत की हैसियत रखता है। यह चीज़ भी मेरे लिए बाइसे इतमीनान हुई कि उनकी फ़िक्र हमारे उन क्लासीकी शोरा से गुथी हुई है, जिन्होंने ज़िन्दगी के तामीरी पहलुओं को नज़र में रखा है और बुनियादी इन्सानी रिश्तों की बाज़याफ़्त में अपनी ज़हनी व फ़िक्री सलाहियतों को बरूए कार लाने की सई करते रहे हैं। अगर मैं यह कहूं कि हमारे यह बुज़ुर्ग शोरा इन्सानियत के अलमबरदार और सलामतीए फ़िक्र व नज़र के नक़ीब रहे हैं, तो कुछ ग़लत न होगा।

इस मौक़े पर अगर मुझे अबनाये दहर की अंगुश्त नुमाई का ख़याल न होता तो इसके साथ साथ यह भी कहता कि इस मुल्के ज़र निगार में अब एक और सुनहरी कड़ी का इज़ाफ़ा हो चला है और वह सुनहरी कड़ी है। तुफ़ैले होशियारपुरी।

डा० अहमर रिफ़ाई

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

दीबाचा

तक़सीमे मुल्क से पहले ज़िन्दगी का सफ़र मुझे सियालकोट से जेहलम ले गया। इस सफ़र की वजह जेहलम के एक अज़ीम विद्यावान पंडित पृथ्वी चन्द्र थे। वह जेहलम के हिन्दू सिख ताजिरों में बड़े ऐहतराम की निगाह से देखे जाते थे। उन्होंने ताजिरों को मशवरा दिया कि जेहलम में कारोबारी तरबियत के लिए मुनीमी स्कूल का एहतमाम करें। चुनांचे उनकी तजवीज़ पर जेहलम में मुनीमी सीखने वाले तलबा के लिए एक इदारा क़ायम हुआ और उस में तदरीस की ज़िम्मेदारी मेरे सुपुर्द की गई। यह मेरे बुज़र्गों का आबाई पेशा था। मैं ने इसे मेहनत से सरअन्जाम देने का वादा किया और सियालकोट से जेहलम चला आया।

जेहलम में कुन्दन घाट का माहौल बड़ा दिलनवाज़ था। जहाँ सुबह शाम लोग अपने अपने अक़ीदे के मुताबिक़ इबादत में मसरूफ़ रहते। यहां मस्जिद मंदिर और गुरुद्वारा बड़े एहतमाम से तामीर किये गये थे। कुन्दन घाट के एक अज़ीम मंदिर में पंडित पृथ्वी चन्द्र पुजारी की हैसियत से मज़हबी रहनुमाई का फ़रीज़ा अन्जाम देते थे।

पंडित जी ने मेरी रिहायश के लिए अपने मकान के दो कमरे वक़्फ़ करदिये चुनाचे मैं जेहलम में क़याम के दौरान वहीं मुक़ीम रहा।

मैं इस शहर में मुनीमी स्कूल के तलबा को पूरी मेहनत और खुलूस से तालीम देता रहा। इन तलबा के मुस्तक़बिल में मुनीमी की तालीम बड़ काम आई और वोह कामयाब कारोबारी शख़्सियात साबित हुए।

जेहलम के बाशिन्दों को पंडित जी से ख़ास अक़ीदत थी और हद दर्जा ऐतिमाद था। स्कूल के औक़ात के बाद मैं दोस्तों में वक़्त गुज़ारता। मेरे इन दोस्तों में अल्लामा सीमाब अकबर आबादी के नामवर शगिर्द पंडित राम जवाया खन्दाँ, हरबंस लाल और राजेन्द्र मलहोत्रा के अलावा शहर के शुरफ़ा भी थे जिनका ज़ौक़े अदब क़ाबिले सताइश था। शेरो सुखन के साथ यहां मूसीक़ी की महफ़िलें भी बरपा होतीं। इन महफ़िलों में मेरा मूसीक़ी का ज़ौक़ परवान चढ़ा और मैं संगीत के रमूज़ से आशना हुआ।

पंडित पृथ्वी चन्द्र कुन्दन घाट के एक मंदिर में उपदेश देते थे। उनका हर उपदेश रामायण और गीता पर मुशतमिल होता। लोग दूरदराज़ से उनका उपदेश सुनने के लिए ज़ौक़ व शौक़ से आते।
पंडित जी के बयान में मीराबाई का यह भजन मैंने पहली बार सुना-----

"हे री मैं तो प्रेम दीवानी मेरा दर्द न जाने को"

भक्ति रस में डूबा हुआ यह गीत आज तक मेरे ज़हन पर छाया हुआ है। कुन्दन

CC-0. Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

घाट के गुरूद्वारे में भी ग्रंथ साहब का पाठ होता और मैं उससे मुस्तफ़ीद होता। पाठ की एक महफ़िल में कबीर भगत का यह दोहा सुनो जो आज तक मेरे लिए दलीले राह है ----

"मनवा इतना शुद्ध भयो जैसे निर्मल नीर
पाछे पाछे हर फिरे कहत कबीर कबीर"

पंडित जी अपने उपदेश और पाठ में अक्सर औक़ात हिन्दी शायरों और भगत लोगों का कलाम सुनाते और बड़े खूबसूत अन्दाज़ में उनकी तशरीह भी करते। यह तशरीह मेरे दिल पर ख़ास असर करती और मैं अज़ीम लोगों के ख़यालात में यकरंगी और यकसानियत देखता।

राजेन्द्र मलहोत्रा को शेरो सुख़न से गहरा ताल्लुक़ था वह अदब से जुनून की हद तक शग़फ़ रखते थे चुनांचे मेरे और उनके ताल्लुक़ात अदब के वसीले से रोज़ बरोज़ बढ़ते चले गये। अदब आज भी उनकी ज़िन्दगी का जुज़ है उन दिनों वह अदब की खिदमत और समाजी कामों में गहरी दिलचस्पी लेते थे। चुनांचे शेरो अदब का रिश्ता मेरे उनके दरमियान इन्सानी खुलूस की बिना पर मौजूद है जिस पर मुझे ज़ाती तौर पर फ़ख्र है।

मैं शेर में पंडित राम जवाया ख़दाँ के क़ीमती मशवरों से मुस्तफ़ीद होता। उनकी महफ़िलों ने मेरे ज़ौक़े सुख़न में निखार पैदा किया और मुझे फ़न्नी बुलन्दियों का इल्म हुआ।

मीरा बाई और सहजू बाई का कलाम संगीत के रूप में मैंने सबसे पहले जेहलम में सुना और मैं हिन्दी ज़बान की कोमलता और मिठास से इतना मुतास्सिर हुआ कि मैं ने इसी रंग में दोहे कहने का आग़ाज़ किया। सबसे पहले दोहा मैंने जेहलम ही में कहा - यह दोंहा था ----

"जैसी करनी वैसी भरनी कुदरत यह बतलाये
कांटे बोने वाला जग में फूल कहां से पाये।"

ज़िन्दगी के सफ़र के साथ साथ अदबी सफ़र भी जारी रहा। पंडित राम जवाया ख़दाँ, पंडित पृथ्वीचन्द्र और राजेन्द्र मलहोत्रा की मुहब्बत और हौसला अफ़ज़ाई ने शेर कहने की तरग़ीब दी। इन दोस्तों की पुरख़ुलूस दुआओं से मेरी तख़लीक़ात हिन्दुस्तान के मारूफ़ रसाइल और अख़बारात में छपने लगीं और अदबी दुनिया में मेरा भी जिक्र आने लगा।

इस सफ़र में एक नई मंज़िल मुक़द्दर बनी और इज़्ज़त व आबरू के साथ दर्स व तदरीस से फ़ारिग़ होकर आल इंडिया रेडियो लाहौर में मुलाज़िम हो गया। मुझे यहां शौबाए मूसीक़ी में अदबी मुशीर की ख़िदमात सुपुर्द हुईं। मैं फ़नकारों के लिए शोरा की गज़लों का इनतख़ाब करता - इनतख़ाब के सिलसिले में रेडियो का अज़ीम कुतुबख़ाना मेरे लिए मशअले राह बना और मैंने हत्तुलइमकान

CC-0. Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

अज़ीम अदब का मुताला किया।

मैंने मुलाज़मत के दौरान रेडिया पर ग़िनाई फ़ीचर पेश किये जिन में सारी नज़में मेरी ज़ाती तख़लीक़ होती थीं। मैं यह कहने में हक़बजानिब हूंगा कि इस अस्लूब का आग़ाज़ मुझे से हुआ।

अज़ीम किताबों के मुताले और अज़ीम दानिशवरों की महफ़िलों ने मेरे फ़िक्रोनज़र को जिला बख़्शी। इस दौर के मोहसिनों में पंडित हरीचन्द अख़्तर का नामे नामी सरे फ़हरिस्त है।

तुलसीदास, मीराबाई, बिहारी और ख़ानेख़ानां के कलाम ने मेरे दिल पर अनमिट नक़ूश सब्त किये। मैंने उर्दू और हिंदी की आमेज़िश से ग़ज़ल को एक नई ज़बान से मुतारिफ़ कराया। ख़ुदा मौलाना सलाहुद्दीन अहमद को करवट करवट जन्नत नसीब करे उन्होंने मेरी इस ग़ज़ल को - ग़ज़ल का हिन्दी रूप - उनवान अता किया और उसे बड़े एहतिमाम से अदबी दुनिया में जगह दी। यह उनवान उनकी नवाज़िश से मेरी पहचान बन गया। इन ग़ज़लों की मक़बूलियत ने मुझे हिन्दो - पाक के मुशायरों में पढ़ने का हौसला दिया और बाज़ौक़ हज़रात ने बेहद दाद दी।

देहली के एक मुशायरे में सदर जम्हूरिया ने जो हौसला अफ़ज़ाई फ़रमाई मुझे आज तक याद है। उन्होंने फ़रमाया कि तुफ़ैल होशियारपुरी की ग़ज़लें सुन कर सौसाल के बाद अब्दुल रहीम ख़ानख़ाना की याद आ गई। पाक व हिन्द के अहले दिल और अहले नज़र बुज़ुर्ग शौराए कराम ने मुझे दुआओं से नवाज़ा। यूं मेरी हौसला अफ़ज़ाई हुई और मैं ने इस अस्लूबेकलाम और अन्दाज़े फ़िक्र को अपनी शायरी के लिए मोज़ूं समझा --- इसके नतीजे में "सोच माला" वजूद में आई।

ख़ुदाए बुज़ुर्ग व बरतर का हज़ार हज़ार शुक्र है, जिसने मुझे इस रंग में शेर कहने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाई।

तुफ़ैल होशियारपुरी

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

गीत

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

दर्द ने ली अंगड़ाई
दर्द ने ली अंगड़ाई
क्या जाने किस ओर से - नागिन बंसी की धुन आई
दर्द ने ली अंगड़ाई
रात की गहरी ख़ामोशी में
प्यार की देवी चाँद के रथ पर
अरमानों की माला पहने
सपना बन कर आई
दर्द ने ली अंगड़ाई
सपना देखा नैनों द्वारा - फूट बही इक जल की धारा
जैसे गगन से टूटे तारा
भूली बिसरी दुनिया आकर नैनों में लहराई
दर्द ने ली अंगड़ाई
क्या जाने किस ओर से - नागिन बंसी की धुन आई
दर्द ने ली अंगड़ाई

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

درد نے لی انگڑائی
درد نے لی انگڑائی
کیا جانے کس اور سے ناگن بنسی کی دھن آئی
درد نے لی انگڑائی
رات کی گہری خاموشی میں
پیار کی دیوی چاند کے رتھ پر
ارمانوں کی مالا پہنے
سپنا بن کر آئی
درد نے لی انگڑائی
سپنا دیکھا نینوں دوارا   پھوٹ بہی اک جل کی دھارا
جیسے گگن سے ٹوٹے تارا
بھولی بسری دنیا آ کر نینوں میں لہرائی
درد نے لی انگڑائی
کیا جانے کس اور سے ناگن بنسی کی دھن آئی
درد نے لی انگڑائی

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

कर जीवन सिंगार मूरख
कर जीवन सिंगार
राम नाम की मद्य का प्याला पीकर तन मन कर उजियाला
पल पल छिन छिन हरि के गुन गा
छेड़ के प्रेम सितार मूरख़
कर जीवन सिंगार
लोभ, मोह, अहंकार को प्यारे तज के बैठ जा हरि के द्वारे
आशाओं से तोड़ के नाता
नया बसा संसार मूरख
कर जीवन सिंगार
चोला पी के रंग रंगा ले - तन राधा को कृश्न बना ले
जग की पलकों के काँटों पर
तुल बन बन कर प्यार मूरख
कर जीवन सिंगार

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

کر جیون سنگار مورکھ
کر جیون سنگار
رام نام کی مدھ کا پیالہ پی کر تن من کر اُجیالا
پل پل چھن چھن ہری کے گُن گا
چھیڑ کے پریم ستار مُورکھ
کر جیون سنگار
لوبھ، موہ ، ہنکار کو پیارے تج کے بیٹھ جا ہر کے دوارے
آشاؤں سے توڑ کے ناتا
نیا بسا سنسار مُورکھ
کر جیون سنگار
بچھلا پی کے رنگ رنگالے تن رادھا کو کرشن بنالے
جگ کی پلکوں کے کانٹوں پر
تُو بن بن کر بیار مُورکھ
کر جیون سنگار

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

चाँद की नैय्या तैर रही है
जाने कौन है खेवनहार
अम्बर के नीले सागर में - रौशन है इक सुन्दर ज्योति
तैर रहे हैं हीरे मोती
सुख की देवी नाच रही है
लहराये आकाश के नीचे
पायल की झनकार
चाँद की नय्या तैर रही है
किरनों के सुन्दर तारों पर - बाजे प्रेम सितार
मधुर मधुर संगीज की लै में
खोया है संसार
सुन सुनकर यह गीत अनोखे
मन में उठे पुकार
चाँद की नैय्या तैर रही है - मेरी नैय्या है मंझधार

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

چاند کی نیا تیر رہی ہے
جانے کون ہے کھیون ہار
امبر کے نیلے ساگر میں روشن ہے اِک سُندر جیوتی
تیر رہے ہیں ہیرے موتی
سُکھ کی دیوی ناچ رہی ہے
لہرائے آکاش کے نیچے
پائل کی جھنکار
چاند کی نیا تیر رہی ہے
کرنوں کے سُندر تاروں پر باجے پریم ستار
مدھُر مدھُر سنگیت کی لے میں
کھویا ہے سنسار
سُن سُن کر یہ گیت انوکھے
من میں اُٹھے پکار
چاند کی نیا تیر رہی ہے میری نیا ہے منجدھار

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

जीवन नैय्या पार उतार
ओ मतवाले खेवनहार
लहर लहर में भवंर छुपाये - हर सू मौत की धुन लहराये
जिस को तू समझे मलहार
ओ मतवाले खेवनहार
जिन को तू जल परियां जाने मन समझाये तो नहीं माने
कुछ तो सोच विचार
ओ मतवाले खेवनहार
जीवन सागर के नज़ज़ारे-मनहर मनहर प्यारे प्यारे
इक धोका है इनका प्यार
ओ मतवाले खेवनहार
मौत का भयानक तूफ़ाँ अगर-साँस की डोरी तोड़ न जाये
प्रान का पन्छी छोड़न जाये - जीवन नैय्या के पतवार
ओ मतवाले खेवनहार

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

جیون نیا پار اتار
او متوالے کھیون ہار
لہر لہر میں بھنور چھپائے　　ہر سو موت کی دھن لہرائے
جس کو تو سمجھے ملہار
او متوالے کھیون ہار
جن کو تو جل پریاں جانے　　من سمجھائے تو نہیں مانے
کچھ تو سوچ وچار
او متوالے کھیون ہار
جیون ساگر کے نظارے　　من ہر من ہر پیارے پیارے
اک دھوکا ہے ان کا پیار
او متوالے کھیون ہار
موت کا بھیانک طوفاں اگر　　سانس کی ڈوری توڑ نہ جائے
پران کا پنچھی چھوڑ نہ جائے　　جیون نیا کے پتوار
او متوالے کھیون ہار

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

वृन्दावन के वासी
वृन्दावन के वासी
तज कर अपने और बेगाने-छोड़ के सारे ठौर ठिकाने
आई है इक प्रेम भिकारी
दर्शन जल की पियासी
वृन्दावन के बासी
पल्कों पर जल दीप जलाकर-हार यह नैनों के पहनाकर
हाथ में लेकर प्रेम आरती
गाये देवा दासी
वृन्दावन के वासी
मेरा जीवन गीत अधूरा - आओ मोहन कर दो पूरा
मन वीना के तार तार पर
छाई आज उदासी
वृन्दावन के वासी
चैन न पायें नैन बाँवरे - दर्शन दर्शन करें साँवरे
भगवा भेस देखकर दुनिया
कहे मोहे सन्यासी
वृन्दावन के वासी

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

برندابن کے باسی
برندابن کے باسی
تج کر اپنے اور بیگانے   چھوڑ کے سارے ٹھور ٹھکانے
آئی ہے اِک پریم بھکاری
درشن جل کی پیاسی
برندابن کے باسی
پلکوں پہ جل دیپ جلا کر   ہار یہ نینوں کو پہنا کر
ہاتھ میں لے کر پریم آرتی
گائے دیوا داسی
برندابن کے باسی
میرا جیون گیت ادھورا   آؤ موہن کر دو پورا
من وینا کے تار تار پر
چھائی آج اُداسی
برندابن کے باسی
چین نہ پائیں نین باورے   درشن دیں کریں ساورے
بھگوا بھیس دیکھ کر دُنیا
کہے موہے سنیاسی
برندابن کے باسی

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

चाँद के रुप में आये
सखी री
चाँद के रुप में आये
मन मन्दिर में हुआ उजाला-जागी प्रेम की सुन्दर ज्वाला
जिसका हर प्रेमी मतवाला भागे दुख के साये
सखी री - चाँद के रुप में आये
मीठा मीठा हल्का हल्का-उजियारा नैनन में छलका
हर आँसू मोती बन ढलका - आस की जोत जगाये
सखी री - चाँद के रुप में आये
प्रीत की फुलवारी महका कर-आशाओं के फूल खिलाकर
मन भंवरे मन भरमाकर - नैनों में मुस्काये
सखी री
चाँद के रुप में आये

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

چاند کے رُوپ میں آئے
سکھی ری
چاند کے رُوپ میں آئے
من مندر میں ہوا اُجالا   جاگی پریم کی سُندر جوالا
جس کا ہر پریمی متوالا   بھاگے دُکھ کے سائے
سکھی ری چاند کے رُوپ میں آئے
میٹھا میٹھا ہلکا ہلکا   اجیارا نینن میں جھلکا
ہر آنسو موتی بن ڈھلکا   آس کی جوت جگائے
سکھی ری چاند کے رُوپ میں آئے
پریت کی پھلواری مہکا کر   آشاؤں کے پھُول کھلا کر
من بھنورے من بھرما کر   نینوں میں مُسکائے
سکھی ری
چاند کے رُوپ میں آئے

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

मन मन्दिर में वास प्रभु का - मन मन्दिर में वास
मूरख बन्दे दर्शन पाले
अपने सोये भाग जगा ले
नगर नगर में और बन बन में - काहे फिरे उदास
डाल के तन मन की आहुति
प्रेम की एक जगा ले ज्योति
तेरे दुखिया व्याकुल मन की - होगी पूरी आस
काहे व्यर्थ उमर गंवाये
जिस को बन में ढूँढन जाये
जन्म जन्म के मूरख अन्धे - वह है तेरे पास
हित से हितकारी मिलता है
मोहन गिरधारी मिलता है
खोल किवड़िया और बुझा ले-दर्शन जल की प्यास
मन मन्दिर में बास प्रभु का - मन मन्दिर में वास

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

من مندر میں باس پربھو کا من مندر میں باس
مورکھ بندے درشن پالے
اپنے سوئے بھاگ جگالے
نگر نگر میں اور بن بن میں کاہے پھرے اداس
ڈال کے تن من کی آہوتی
پریم کی ایک جگالے جوتی
تیرے دُکھیا ویاکل من کی ہوگی پُوری آس
کاہے برتھا عمر گنوائے
جس کو بن میں ڈھونڈن جائے
جنم جنم کے مُورکھ اندھے وہ ہے تیرے پاس
ہت سے ہتکاری مِلتا ہے
موہن گردھاری مِلتا ہے
کھول کواڑیا اور بجھالے درشن جل کی پیاس
من مندر میں باس پربھو کا من مندر میں باس

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

मन में बसे घनश्याम

सखी री मन में बसे घनश्याम

मोर मुकुट पीतम्बर धारी-श्याम सलोने कृश्न मुरारी

अमृत रुपी याद है जिनकी

जीवन का आराम - सखी री मन में बसे घनश्याम

प्रेम लगन की धूम मची है-अंग अंग में प्रीत रची है

इक नैनाँ जमना का तट है

इक है गोकुल गाम सखी री

मन में बसे घनश्याम

तन में देखूं मन में देखूं - उनको अब दर्पनमें देखूं

जब से आली नैन मिले हैं

भाये नहीं कुछ काम सखी री-मन में बसे घनश्याम

जन्म जन्म जाऊँ बलिहारी - मेरे गोर्वधन गिरधारी

मन की माला के मनकों पर

जपूं मैं उनका नाम सखी री - मनमें बसे घनश्याम

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

من میں بسے گھنشام
سکھی ری من میں بسے گھنشام
مور مکٹ پیتمبر دھاری شام سلونے کرشن مراری
امرت روپی یاد ہے جن کی
جیون کا آرام سکھی ری من میں بسے گھنشام
پریم لگن کی دھوم مچی ہے انگ انگ میں پریت رچی ہے
اک نیناں جمنا کا تٹ ہے
اِک ہے گوکل گام سکھی ری
من میں بسے گھنشام
تن میں دیکھوں من میں دیکھوں ان کو اب درپن میں دیکھوں
جب سے آلی نین مِلے ہیں
بھلائے نہیں کچھو کام سکھی ری من میں بسے گھنشام
جنم جنم جاؤں بلہاری میرے گوور دھن گر دھاری
من کی مالا کے منکوں پر
جیوں میں اُن کا نام سکھی ری من میں بسے گھنشام

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

گیت

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

दोहे

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

कोई कहे अल्लाह बसे शाहरग के नजदीक
जाने फिर दो नैन क्यों माँगें दर्शन भीक

तारों में यह रौशनी फूलों में महकार
तेरे लाखों रंग हैं तेरे रुप हज़ार

मन की माला फेर कर कर दाता का जाप
ढल जायेंगे पुन में तेरे सिगरे पाप

जैसी करनी वैसी भरनी कुदरत यह बतलाये
काँटे बोने वाला जग में फूल कहाँ से पाये

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

کوئی کہے اللہ بسے شہ رگ کے نزدیک
جانے پھر دوبین کیوں مانگیں درشن بھیک

تاروں میں یہ روشنی پھولوں میں مہکار
تیرے لاکھوں رنگ ہیں تیرے رُوپ ہزار

مَن کی مالا پھیر کر کر داتا کا جاپ
ڈھل جائیں گے پُن میں تیرے سگرے پاپ

جیسی کرنی ویسی بھرنی قدرت یہ بتلائے
کانٹے بونے والا جگ میں پھول کہاں سے پائے

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

आज के इन्साँ का हुआ यूँ कमज़ोर ईमान
कस्में खाने के लिये रह गया है 'कुरआन'

दौलत हो तो नीच भी आज उत्तम कहलाये
ऊँचा बनने के लिये ऊँचे महल बनाये

दुनिया का ऐसे हुआ दौलत से संजोग
दौलत ही को रब कहें इस दुनिया के लोग

दौलत ही से शान है दौलत ही से आन
दौलत है इस दौर में इज़्ज़त की पहचान

दौलत ही दस्तूर है दौलत ही कानून
दौलत के सैलाब में बह जाता है ख़ून

साची बात है दोस्तों रखना हमें मआफ़
दौलत ही का नाम है इस जग में इंसाफ़

सिक्का दौलत का चले दुनिया में दिन रात
निर्धन के इस दौर में कोई न पूछे बात

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

آج کے انساں کا ہوا یوں کمزور ایمان
قسمیں کھانے کے لئے رہ گیا ہے قرآن

دولت ہو تو نیچ بھی آج اُتم کہلائے
اونچا بننے کے لئے اونچے محل بنائے

دُنیا کا ایسے ہوا دولت سے سنجوگ
دولت ہی کو رب کہیں اس دُنیا کے لوگ

دولت ہی سے شان ہے دولت ہی سے آن
دولت ہے اس دَور میں عزّت کی پہچان

دولت ہی دستور ہے دولت ہی قانون
دولت کے سیلاب میں بہہ جاتا ہے خوُن

ساچی بات ہے دوستو رکھنا ہمیں معاف
دولت ہی کا نام ہے اس جگ میں انصاف

سکّہ دولت کا چلے دُنیا میں دن رات
نردھن کی اِس دَور میں کوئی نہ پوچھے بات

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

दिल में सदहा ख़्वाहिशें जी में लाख अरमान
दुनिया में सुख किस तरह पाये आज इंसान

दौलतमंद का राज है दौलत मंद का तेज
बिन दौलत के ज़िन्दगी काँटों की है सेज

हुस्न का दिल भी कर लिया दौलत ने तस्ख़ीर
सैदे से करने लगी प्यार आज की हीर

धोखे से दौलत मिले झूठ चढ़े परवान
सच्चाई का हो गया दुनिया में फ़िकदान

आज पाप के पेड़ में फूल आयें और फल
मिल गया गिरकर ख़ाक में धर्म का ताज महल

जाने अदल को क्या हुआ गया कहाँ इंसाफ
कातिल को हर जुर्म से दौलत करे मआफ़

दौलत पाये मिम्बरी दौलत बने वज़ीर
पिघले ज़र की आँच से लोहे की जंजीर

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

دل میں صد ہا خواہشیں جی میں لاکھ ارمان
دنیا میں سُکھ کس طرح پائے آج انسان

دولت مند کا راج ہے دولت مند کا تیج
بن دولت کے زندگی کانٹوں کی ہے سیج

حُسن کا دِل بھی کر لیا دولت نے تسخیر
سیدے سے کرنے لگی پیار آج کی ہیر

دھوکے سے دولت ملے جھوٹ چڑھے پروان
سچائی کا ہو گیا دُنیا میں فقدان

آج پاپ کے پیڑ میں پھول آئیں اور پھل
مل گیا گِر کر خاک میں دھرم کا تاج محل

جانے عدل کو کیا ہوا گیا کہاں انصاف
قاتل کو ہر جرم سے دولت کرے معاف

دولت پائے ممبری دولت بنے وزیر
پگھلے زر کی آنچ سے لوہے کی زنجیر

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

धन और दौलत के लिये बिकने लगे ज़मीर
मालोज़र की जुल्फ़ में दुनिया हुयी असीर

कौन किसी का मीत है कौन किसी का यार
अपने मतलब से करे सारी दुनिया प्यार

इस मैले संसार में यूँ रख दिल को साफ़
कीच के अन्दर जिस तरह रहे कंवल शफ़ाफ़

यह जीना इक जाल है रखना इसका ध्यान
पंछी उलझे पाँव से बातों से इन्सान

सोना चाँदी बन गया इन्साँ का मायार
बिन दौलत संसार में जीना है दुश्वार

दौलत से होने लगी इन्साँ की पहचान
दौलत ही अब दीन है दौलत ही ईमान

अफ़सानों से खा गयी आज हकीकत मात
सिफ़ला होकर रह गये इन्सानी जज़्बात

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

دھن اور دولت کے لئے بکنے لگے ضمیر
مال وزر کی زُلف میں دُنیا ہوئی اسیر

کون کسی کا میت ہے کون کسی کا یار
اپنے مطلب سے کرے ساری دُنیا پیار

اس میلے سنسار میں یوں رکھ دِل کو صاف
کیچ کے اندر جس طرح رہے کنول شفاف

یہ جینا اِک جال ہے رکھنا اس کا دھیان
طائر اُلجھے پاؤں سے باتوں سے انسان

سونا چاندی بن گیا انساں کا معیار
بن دولت سنسار میں جینا ہے دشوار

دولت سے ہونے لگی انساں کی پہچان
دولت ہی اب دین ہے دولت ہی ایمان

افسانوں سے کھا گئی آج حقیقت مات
سفلہ ہو کر رہ گئے انسانی جذبات

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

कल कल, कल कल क्यों करे कल का नाम है काल
मूरख आज के काम को कल पर मोल न डाल

मालो ज़र की दौड़ में दुनिया है मसरुफ़
इज़्ज़त है इन्सान की दौलत पर मौकूफ़

याद नहीं इन्सान को मज़हब का पैग़ाम
अल्लाह और रसूल का लें सब रसमन नाम

दौलत ही सैय्यद बने दौलत बने पठान
दौलत ही का नाम है इज्ज़त शोहरत शान

दौलत के सब दोस्त हैं दौलत के सब यार
दौलत के दम से बने दुनिया रिश्तेदार

दौलत हो तो बाप से प्यार करे फ़रज़न्द
बीवी के दिल में बसे शौहर दौलत मंद

मुफ़लिस शौहर से कहे हो बीवी दिलगीर
पल्ले तेरे क्या पड़ी फूट गयी तकदीर

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

کل کل کل کل کیوں کرے کل کا نام ہے کال
مورکھ آج کے کام کو کل پر مول نہ ڈال

مال و زر کی دَوڑ میں دُنیا ہے مصروف
عزّت ہے انسان کی دولت پر موقوف

یاد نہیں انسان کو مذہب کا پیغام
اللہ اور رسول کا لیں سب رسمًا نام

دولت ہی سیّد بنے دولت بنے پٹھان
دولت ہی کا نام ہے عزّت، شہرت، شان

دولت کے سب دوست ہیں دولت کے سب یار
دولت کے دم سے بنے دُنیا رشتہ دار

دولت ہو تو باپ سے پیار کرے فرزند
بیوی کے دِل میں بسے شوہر دولت مند

مفلس شوہر سے کہے ہو بیوی دلگیر
پلّے تیرے کیا پڑی پھوٹ گئی تقدیر

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

जब कोई परदेस से पी की पतियाँ लाये
रुप रंग के बोझ से चोली मस्की जाये

मूरख को चातुर कहे निर्बल को बलवान
बात अंचभे की करे कलजुग का इन्सान

इज्ज़ का यूँ इन्सान को सच्चा गुर सिखलाये
जिस टहनी पर फल लगे वह टहनी झुक जाये

ऐसे कुछ इन्सान का बदला नसबुलऐैन
मालो ज़र की हिरस ने छीन लिया सुख चैन

जग में कर के नेकियाँ जो एहसान जताये
दौलत भी ज़ाये करे हाथ भी कुछ नहीं आये

हीरे मोती दान करे जो हीरे मोती पाये
कुदरत का कानून है इसमें हरगिज़' फर्क न आये

चेहरों से घूंघट गये नैनों से गयी लाज
क्या इस मूरख दौर की कथा कहे कोई आज

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

جب کوئی پردیس سے پی کی پتیاں لائے
رُوپ رنگ کے بوجھ سے چولی مسکی جائے

مُورکھ کو چاتر کہے نِربل کو بلوان
بات اچنبھے کی کرے کل جگ کا انسان

عجز کا یوں انسان کو سچّا گُر سِکھلائے
جس ٹہنی پر پھل لگے وہ ٹہنی جُھک جائے

ایسے کچھ انسان کا بدلا نصبُ العین
مال و زر کی حرص نے چھین لیا سُکھ چین

جگ میں کر کے نیکیاں جو احسان جتائے
دولت بھی ضائع کرے ہاتھ بھی کچھ نہیں آئے

ہیرے موتی دان کرے جو ہیرے موتی پائے
قدرت کا قانون ہے اس میں ہرگز فرق نہ آئے

چہروں سے گھونگھٹ گئے نینوں سے گئی لاج
کیا اس مُورکھ دَور کی کتھا کہے کوئی آج

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

निन्दा करना पाप है बात मेरी सच जान
मैले मन को साफ़ कर ओ मूरख इन्सान

मन मन्दिर में बैठ कर ले मालिक का नाम
तुझ को इस से क्या पड़ी कौन है किस का राम

पालन हार के प्यार का मोल न कोई पाये
बन्दे के आगे यहाँ बन्दा सीस झुक़ाये

दुख के मारों का कोई कब देता है साथ
सूखे जिस दम पेड़ तो झड़ जायें सब पात

करनी करनी सब कहें करनी करे न कोये
जब भरनी का समा हो जी भर के फिर रोये

किस का सच्चा प्यार है किसका झूठा प्यार
गुन गा अपने प्यार के छेड़ के मन के तार

बन्दे के आगे यहाँ बन्दा सीस झुकाये
कुत्ते के आगे कभी कुत्ता झुके न हाय

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

نِندا کرنا پاپ ہے بات مری سچ جان
مَیلے من کو صاف کر او مُورکھ انسان

من مندر میں بیٹھ کر لے مالک کا نام
تجھ کو اس سے کیا پڑی کون ہے کس کا رام

پالن ہار کے پیار کا مول نہ کوئی پائے
بندے کے آگے یہاں بندہ سیس جُھکائے

دُکھ کے ماروں کا کوئی کب دیتا ہے ساتھ
سُوکھے جس دم پیڑ تو جھڑ جائیں سب پات

کرنی کرنی سب کہیں کرنی کرے نہ کوئے
جب بھرنی کا سماں ہو جی بھر کے پھر روئے

کِس کا سچّا پیار ہے کِس کا جھُوٹا پیار
گُن گا اپنے پیار کے چھیڑ کے من کے تار

بندے کے آگے یہاں بندہ سیس جُھکائے
کُتّے کے آگے کبھی کُتّا جُھکے نہ ہائے

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

सच्चाई का मोल न कोई झूठ की जय जय कार
बेईमान को कहे ज़माना आज दयानतदार

बारह साल की कन्या खुद माँगे वर आज
रुप भरे है सिसकियाँ आह भरे है लाज

पी आयें जब सामने नैनों में लिये प्रीत
धड़कन के संगीत पर पायल गाये गीत

गोरी ने पी से कहा कहाँ गुज़ारी रैन
रंग रलियों के रंग में डूब रहे हैं नैन

गोरी अपने होंठ पर देख के एक निशान
भूली मारे लाज के पल भर की मुस्कान

कागा जाये बिदेसवा लाये पी को संग
सोने से करवाये दूँ सोने जैसा रंग

सच ही आख़िर सच है झूठ है आख़िर झूठ
सच से नाता जोड़ कर दुनिया का सुख लूट

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

سچائی کا مول نہ کوئی جھوٹ کی جے جے کار
بے ایمان کو کہے زمانہ آج دیانت دار

بارہ سال کی کنّیا خود مانگے بر آج
روپ بھرے ہے سسکیاں آہ بھرے ہے لاج

پی آئیں جب سامنے نینوں میں لئے پریت
دھڑکن کے سنگیت پر پائل گائے گیت

گوری نے پی سے کہا کہاں گزاری رین
رنگ رلیوں کے رنگ میں ڈوب رہے ہیں نین

گوری اپنے ہونٹ پر دیکھ کے ایک نشان
بھولی مارے لاج کے پل بھر کی مسکان

کاگا جائے بدیسوا لائے پی کو سنگ
سونے سے کروائے دوں سونے جیسا رنگ

سچ ہی آخر سچ ہے جھوٹ ہے آخر جھوٹ
سچ سے ناطہ جوڑ کر دنیا کا سکھ لوٹ

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

राम राज का गया ज़माना अब है रावन राज
सतजुग रह गया देखो होकर कलजुग की मोहताज

कितना सुन्दर कितना प्यारा बचपन का संसार
चन्दा, झूला, लोरी, निन्दया, गीतों की महकार

मात पिता की ममता के हैं कितने प्यारे रंग
साया बन कर रहे हमेशा अपने चाँद के संग

बचपन सुख का झूला झूले सुन सुन मीठे गीत
इक इक मन में चाहत देखे इक इक नैन में प्रीत

अपनी निन्दया सोये बालक अपनी निन्दया जागे
आगे आगे बच्चा, बचपन पीछे पीछे भागे

कोई दया धरम बेचे है बेचे कोई ज़मीर
कोई रुप जवानी बेचे फूटे जब तकदीर

बाज़ारों में खोटे सिक्के पायें दुगने दाम
झूठ को देती है यह दुनिया सच्चाई का नाम

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

رام راج کا گیا زمانہ اب ہے راون راج
ست جگ رہ گیا دیکھو ہو کر کل جگ کا محتاج

کتنا سُندر کتنا پیارا بچپن کا سنسار
چندا جھولا لوری نندیا گیتوں کی مہکار

مات پتا کی ممتا کے ہیں کتنے پیارے رنگ
سایا بن کر رہیں ہمیشہ اپنے چاند کے سنگ

بچپن سُکھ کا جھُولا جھولے سُن سُن میٹھے گیت
اِک اِک من میں چاہت دیکھے اِک اِک نین میں پریت

اپنی نندیا سوئے بالک اپنی نندیا جاگے
آگے آگے بچہّ، بچپن پیچھے پیچھے بھاگے

کوئی دیا دھرم بیچے ہے بیچے کوئی ضمیر
کوئی رُوپ جوانی بیچے پھُوٹے جب تقدیر

بازاروں میں کھوٹے سکّے پائیں دُگنے دام
جھُوٹ کو دیتی ہے یہ دُنیا سچّائی کا نام

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

मन मूरख ले पेड़ से जीने की तालीम
जल जल कर खुद धूप में छाँव करे तकसीम

जीने के ए बाँवरे ! पेड़ से सीख उसूल
पत्थर जो मारे उसे देता है फल फूल

बन्दा दुख की गोद में आठ आठ आँसू रोये
राज वह क्या जिस राज में बात न पूछे कोये

राज वह क्या मन मानियाँ जिस में करे वज़ीर
पिघले ज़र की आँच से कानूनी ज़ंजीर

राजा क्या वह राज क्या क्या उस का कानून
दिन को डाके रात को मारें लोग शब खून

नग़मों के माहौल में दब जाये फ़रियाद
राज वह क्या जिस राज में सच की मिले न दाद

कन्याओं को ले भागे हैं आज के साधू सन्त
काम देवता की पूजा कर मदिरा पियें महन्त

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

من مُورکھ لے پیڑ سے جینے کی تعلیم
جل جل کر خود دھوپ میں چھاؤں کرے تقسیم

جینے کے اے باؤرے پیڑ سے سیکھ اصُول
پتھر جو مارے، اُسے دیتا ہے پھل پھُول

بندہ دُکھ کی گود میں آٹھ آٹھ آنسو روئے
راج وہ کیا جس راج میں بات نہ پوچھے کوئے

راج وہ کیا من مانیاں جس میں کریں وزیر
پگھلے زر کی آنچ سے قانونی زنجیر

راجہ کیا وہ راج کیا کیا اس کا قانُون
دن کو ڈاکے رات کو ماریں لوگ شب خوُن

نغموں کے ماحول میں دب جائے فریاد
راج وہ کیا جس راج میں سچ کی ملے نہ داد

کنیاؤں کو لے بھاگیں ہیں آج کے سادھو سنت
کام دیوتا کی پوجا کر مدھرا پئیں مہنت

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

राज वह क्या जिस राज में नगर नगर हो भूख
बेचें जिस्म क्वाँरियाँ उठे कलेजे हूक

जिस राजा के देस में बेटियाँ बेचे बाप
उस राजा के राज में रहना है महा पाप

राजा वह जो प्यार से करे दिलों पर राज
तख़्त उस का इंसाफ़ हो दया हो उसका ताज

अमर रहे संसार में उस राजा का राज
पानी शेर और बकरी पियें जहाँ इक घाट

जुल्म डरे इंसाफ़ से सच से कांपे झूठ
जरका लेकर आसरा कातिल सके न छूट

राजा के दरबार में ऊँच नीच नहीं होये
बोने वाला देस में वह काटे जो बोये

क्या राजा क्या कंगला दोनों का हो मान
राज है वह जिस राज में सुख पाये इन्सान

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

راج وہ کیا جس راج میں نگر نگر ہو بھُوک
بیچیں جسم کنواریاں اُٹھے کلیجے ہُوک

جس راجہ کے دیس میں بیٹیاں بیچے باپ
اُس راجہ کے راج میں رہنا ہے مہا پاپ

راجہ وہ جو پیار سے کرے دلوں پر راج
تخت اُس کا اِنصاف ہو دَیا ہو اُس کا تاج

امر رہے سنسار میں اُس راجہ کا راج
پانی شیر اور بکری پئیں جہاں اِک گھاٹ

ظلُم ڈرے انصاف سے سچ سے کانپے جھُوٹ
زر کا لے کر آسرا قاتل سکے نہ چھُوٹ

راجہ کے دربار میں اونچ نیچ نہیں ہوئے
بونے والا دیس میں وہ کاٹے جو بوئے

کیا راجہ کیا کنگلا دونوں کا ہو مان
راج ہے وہ جس راج میں سُکھ پائے انسان

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

उस को राजा मत कहो ज़र का कहो असीर
जिस राजा के राज में लुटने लगें फ़कीर

रऐयत का दिन रात हो धन्धा लूट खसूट
राज वह क्या जिस राज में सच भी बोले झूठ

जिस राजा के राज में बरखा बाँटे आग
उस राजा के राज का धन दौलत सब त्याग

झूठों को साँचे कहें बद कहलायें नेक
राज वह क्या जिस राज में बुरा भला सब एक

दरया उगलें शोले, नदियाँ चाटें रेत
राज वह क्या जिस राज में भूख उगायें खेत

जिस राजा के राज में हर शै का इक भाव
उस राजा के राज में भूल के भी मत जाओ

राज वह क्या जिस राज की नीति अत्याचार
सब खोटे सिक्के चलें सजें चोर बाज़ार

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

اس کو راجہ مت کہو زر کا کہو اسیر
جس راجہ کے راج میں لٹنے لگیں فقیر

رعیت کا دن رات ہو دھندا لوٹ کھسوٹ
راج وہ کیا جس راج میں سچ بھی بولے جھوٹ

جس راجہ کے راج میں برکھا بانٹے آگ
اُس راجہ کے راج کا دھن دولت سب تیاگ

جھوٹوں کو ساچے کہیں بد کہلائیں نیک
راج وہ کیا جس راج میں بُرا بھلا سب ایک

دریا اگلیں شعلے ندیاں چاٹیں ریت
راج وہ کیا جس راج میں بھوک اگائیں کھیت

جس راجہ کے راج میں ہر شے کا اک بھاؤ
اس راجہ کے راج میں بھول کے بھی مت جاؤ

راج وہ کیا جس راج کی نیتی اتیا چار
سب کھوٹے سکے چلیں سجیں چور بازار

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

आज के आलिमे दीन की क्या कोई बात सुनाये
दीन में डाले तफ़रके ख़ैर दीन कहलाये

उस कंजूस की ज़ात से क्या कोई लाभ उठाये
कौड़ी पर झगड़ा करे धनपत मल कहलाये

बात बात में कपट हैं बात बात में छल
इक धेले पर जान दे नाम करोड़ी मल

कलजुग के वृतान्त हैं क़लजुग ही के साथ
कपटी धोखेबाज़ का नाम हो भोला नाथ

पुरवाई से सीख ले जीने की तू रीत
फूलों से भी प्यार कर कांटों से भी प्रीत

दर्शन जल पी कर बढ़े दर्शन जल की प्यास
दूर न जाओ आँख से रहो हमारे पास

साँस की नाज़ुक डोर पर मत करना अभिमान
इक झटके की बात है प्रानी रहे न प्रान

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

آج کے عالم دین کی کیا کوئی بات سُنائے
دین میں ڈالے تفرقے حنیر دین کہلائے

اس کنجوس کی ذات سے کیا کوئی لابھ اُٹھائے
کوڑی پر جھگڑا کرے دھنپت مل کہلائے

/

بات بات میں کپٹ ہے بات بات میں چھل
اک دھیلے پر جان دے نام کروڑی مل

کل جُگ کے برتانت ہیں کل جُگ ہی کے ساتھ
کپٹی دھوکے باز کا نام ہو بھولا ناتھ

پُروائی سے سیکھ لے جینے کی توریت
پھولوں سے بھی پیار کر کانٹوں سے بھی پریت

درشن جل پی کر بڑھے درشن جل کی پیاس
دور نہ جاؤ آنکھ سے رہو ہمارے پاس

سانس کی نازک ڈور پر مست کرنا ابھیمان
اک جھٹکے کی بات ہے پرانی رہے نہ پران

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

लहरों को नदिया यही देती है पैग़ाम
पी से मिलना है अगर लो हिम्मत से काम

कहे किनारा मौज से कर ले कुछ आराम
मौज किनारे से कहे दूर है पी का गाम

कहे किनारा मौज से क्यों है तू बेचैन
मौज कहे पी दरस को तरस गये मोरे नैन

साहिल और तूफ़ान के मौज थपेड़े खाये
पिया मिलन की आस में आगे बढ़ती जाये

कलजुग के धनवान की क्या कोई कथा सुनाये
दया न करे ग़रीब पर दया राम कहलाये

ढलते रुप को देख कर क्यों होते हो दंग
डूबते सूरज का यही हो जाता है रंग

इल्म के दुश्मन का यहाँ इल्म दीन है नाम
क्या जाने इस दौर का क्या होवे अन्जाम

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

لہروں کو ندیا یہی دیتی ہے پیغام
پی سے ملنا ہے اگر لو ہمت سے کام

کہے کنارا موج سے کر لے کچھ آرام
موج کنارے سے کہے دُور ہے پی کا گام

کہے کنارا موج سے کیوں ہے تو بے چین
موج کہے پی درس کو ترس گئے مورے نین

ساحل اور طوفان کے موج تھپیڑے کھائے
پیا ملن کی آس میں آگے بڑھتی جائے

کل جگ کے دھنوان کی کیا کوئی کتھا سنائے
دیا نہ کرے گریب پر دیا رام کہلائے

ڈھلتے رُوپ کو دیکھ کر کیوں ہوتے ہو دنگ
ڈوبتے سورج کا یہی ہو جاتا ہے رنگ

علم کے دشمن کا یہاں علم دین ہے نام
کیا جانے اس دور کا کیا ہووے انجام

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

दान करे वही बोरिया बख़्शे है वही ताज
क्या कंगला क्या बादशाह सब उसके मोहताज

काहे माथे तिलक लगाये काहे संख बजाये
अपने मन का ज्ञान हो जिस को वह ब्रहमन कहलाये

हाथ में गर इन्सान के अज़्म के हो पतवार
गर्दाबों को रौंद कर नैय्या उतरे पार

आख़िर तेरे अज़्म की मंढे चढ़ेगी बेल
गर्दाबों के वार सह तूफ़ानों से खेल

बहर के सीने से अगर मोती हैं दरकार
मंझधारों से इश्क कर तूफ़ानों से प्यार

चलती चक्की देख के काहे कबीरा रोये
इस चक्की से भगत जी पेट पूरना होये

यह चक्की चलती रहे पिसता रहे अनाज
इस चक्की की बाँवरे दुनिया है मोहताज

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

دان کرے وہی بوریا بخشے ہے وہی تاج
کیا کنگلا کیا بادشاہ سب اس کے محتاج

کاہے ماتھے تلک لگائے کاہے سنکھ بجائے
اپنے من کا گیان ہو جس کو وہ برہمن کہلائے

ہاتھ میں گر انسان کے عزم کے ہوں پتوار
گردابوں کو روند کر نیا اترے پار

آخر تیرے عزم کی منڈھے چڑھے گی بیل
گردابوں کے وار سہہ طوفانوں سے کھیل

بحر کے سینے سے اگر موتی ہیں درکار
منجدھاروں سے عشق کر طوفانوں سے پیار

چلتی چکی دیکھ کے کاہے کبیرا روئے
اس چکی سے بھگت جی پیٹ پورنا ہوئے

یہ چکی چلتی رہے پستا رہے اناج
اس چکی کی باؤرے دُنیا ہے محتاج

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

खेतों को हरियालियाँ बागों को फल फूल
तुझ को ही मालूम हैं दाता तिरे उसूल

लहरों में चाँदी बहे सोना उगलें खेत
ऊँचे महलों में ढले सहराओं की रेत

आँचल को प्रभात के फूलों से महकाये
दूधिया सारी रैन को दाता ही पहनाये

सागर से बादल उड़ें और करें जल दान
सैर हों भूखी खेतियाँ जल थल हों मैदान

मुरझाये हुये बाग़ की महके ऐसे धूल
डाली डाली पर खिलें रंग रंग के फूल

इस दाता के दान का भेद न कोई पाये
पल में एक फ़कीर के सर पर ताज सजाये

जग की नियत देख कर दाता बख़्शे दान
कौड़ी को तरसे कोई कोई बने धनवान

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

کھیتوں کو ہریالیاں باغوں کو پھل پھول
تجھ کو ہی معلوم ہیں داتا ترے اُصول

لہروں میں چاندی بہے سونا اُگلیں کھیت
اونچے محلوں میں ڈھلے صحراؤں کی ریت

آنچل کو پربھات کے پھولوں سے مہکائے
دودھیا ساری رین کو داتا ہی پہنائے

ساگر سے بادل اُڑیں اور کریں جل دان
سیر ہوں بھو کی کھیتیاں جل تھل ہوں میدان

مرجھائے ہوئے باغ کی مہکے ایسے دھول
ڈالی ڈالی پر کھِلیں رنگ رنگ کے پھول

اس داتا کے دان کا بھید نہ کوئی پائے
پل میں ایک فقیر کے سر پر تاج سجائے

جگ کی نیت دیکھ کر داتا بخشے دان
کوڑی کو ترسے کوئی، کوئی بنے دھنوان

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

दुनिया है इक बेसवा जो भी इसे अपनाये
धन दौलत सब हारकर फिर भड़वा कहलाये

झूठा सुख मिल जायेगा जग का दामन थाम
सच्चा सुख गर चाहिये ले मौला का नाम

तन की माला छोड़ कर मन की माला फेर
पिया दरस को बाँवरे इक पल लगे न देर

साँस की नाजुक डोर में मन का मनका डाल
इस माला के जाप का डाल पिया पर जाल

इल्म के धन की दैर में थाह न कोई पाये
जितना यह धन बाँटिये उतना बढ़ता जाये

उस दाता की ज़ात के सुने हैं नाम हज़ार
चन्दा, तारे, चाँदनी, नग़मे, फूल, बहार

रात को बाँटे निन्दया दिन को बाँटे काम
दाता के पुन दान के दाता ही जाने नाम

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

دنیا ہے اک بیسوا جو بھی اسے اپنائے
دھن دولت سب ہار کر پھر بھڑوا کہلائے

جھوٹا سُکھ بل جائے گا جگ کا دامن تھام
سچّا سُکھ گر چاہیئے لے مولا کا نام

تن کی مالا چھوڑ کر من کی مالا پھیر
پیا درس کو باورے اک پل لگے نہ دیر

سانس کی نازک ڈور میں من کا منکا ڈال
اِس مالا کے جاپ کا ڈال پیا پر جال

علم کے دھن کی دیر میں تھاہ نہ کوئی پائے
جتنا یہ دھن بانٹیے اُتنا بڑھتا جائے

اس داتا کی ذات کے سنے ہیں نام ہزار
چندا، تارے، چاندنی نغمے، پھول، بہار

رات کو بانٹے نندیا دن کو بانٹے کام
داتا کے پُن دان کے داتا ہی جانے نام

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

चाहत के दो रुप हैं दीपक और पतंग
एक जलाये एक जले मिले जो अंग से अंग

लोभी भंवरा फूल का रस पी कर उड़ जाये
परवाने को **देखिये शमा** पे जान लुटाये

जो कुछ भी संसार में होए तेरे हुकम से होए
तेरी बातें तू ही जाने और न जाने कोय

चाहत के दो रुप हैं चन्दा और चकोर
जाने किस ने बाँध दी उन की जीवन डोर

चन्दा को रह रह तके सारी रैन चकोर
चांद न देखे भूलकर उस पगले की ओर

बन बन में तू किस को ढूंढे काहे फिरे उदास
तेरे मन की नगरी में है तेरे पी का वास

प्यार का नाम ही ज्ञान है प्यार का नाम ही जोग
प्यार की ज्योति के बिना अन्धे हैं सब लोग

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

چاہت کے دو روپ ہیں دیپک اور پتنگ
ایک جلائے ایک جلے ملے جو انگ سے انگ

لوبھی بھنورا پھول کا رس پی کر اُڑ جائے
پروانے کو دیکھیئے شمع پہ جان لٹائے

جو کچھ بھی سنسار میں ہوئے تیرے حکم سے ہوئے
تیری باتیں تو ہی جانے اور نہ جانے کوئے

چاہت کے دو روپ ہیں چندا اور چکور
جانے کس نے باندھ دی ان کی جیون ڈور

چندا کو رہ رہ تکے ساری زین چکور
چاند نہ دیکھے بھول کر اس پگلے کی اور

بن بن میں تو کس کو ڈھونڈے کاہے پھرے اُداس
تیرے من کی نگری میں ہے تیرے پی کا باس

پیار کا نام ہی گیان ہے پیار کا نام ہی جوگ
پیار کی جوتی کے بناں اندھے ہیں سب لوگ

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

पाप भरे संसार में तन मन रख यूँ साफ़
कीच के अन्दर जिस तरह रहे कंवल शफ़ाफ़

पोथी पढ़ ले प्यार की इल्म से तू मुंह मोड़
पंडित बनना है अगर सब ग्रन्थों को छोड़

राम नाम की बावँरे हाथ में ले पतवार
जीवन सागर से तिरा बेड़ा होगा पार

दो दिन तेरा साथ है जग है एक सराय
रीझ के इस के रुप पर काहे जान गंवाये

पिया न जाओ दूर नज़र से रहो हमारे पास
दर्शन जल पीकर बढ़ती है दर्शन जल की प्यास

काम, क्रोध और लोभ की रख बन्दे पहचान
वर्ना एक समान हैं दाना और नादान

बिरहा के दो रुप हैं एक न उनको जान
दिया जले है रात को जिया जले हर आन

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

پاپ بھرے سنسار میں تن من رکھ یوں صاف
کیچ کے اندر جس طرح رہے کنول شفاف

پوتھی پڑھ لے پیار کی علم سے تو منہ موڑ
پنڈت بننا ہے اگر سب گرنتھوں کو چھوڑ

رام نام کی باؤ رے ہاتھ میں لے پتوار
جیون ساگر سے ترا بیڑا ہو گا پار

دو دن تیرا ساتھ ہے جگ ہے ایک سرائے
ریجھ کے اس کے روپ پر کاہے جان گنوائے

پیا نہ جاؤ دور نظر سے رہو ہمارے پاس
درشن جل پی کر بڑھتی ہے درشن جل کی پیاس

کام کرودھ اور لوبھ کی رکھ بندے پہچان
ورنہ ایک سمان ہیں دانا اور نادان

برہا کے دو روپ ہیں ایک نہ ان کو جان
دیا جلے ہے رات کو جیا جلے ہر آن

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

बालापन के बाद जवानी इसतकबाल को आये
सुन्दरता के. इस राही को सुन्दर छब दिखलाये

अंग अंग से मदिरा बरसे रस में डूबें नैन
जिस्म में चन्दन ऐसी खुशबू लहराये दिन रैन

पग पग पर हैं सुन्दरियों ने रुप के जाल बिछाये
रुप नगर से कोई मुसाफ़िर बच कर कभी न जाये

पग पग सुन्दर सुन्दर मुखड़े पग पग नैन कटोरे
रस छलका छलका कर डालें दिल पर प्यार के डोरे

चाँदनिया की चुनरी ओढ़े सुन्दर परियाँ आयें
मन वीना के तार छेड़ कर गीत सुहाने गायें

बच्चों वाले ही जाने हैं और न जाने कोय
जितना कच्चा होए यह फल उतना मीठा होए

दुनिया के हर जाल की मुश्किल है पहचान
पाँव से पंछी फंसे व बातों से इनसान

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

بالاپن کے بعد جوانی استقبال کو آئے
سندرتا کے اس راہی کو سندر چھب دکھلائے

انگ انگ سے مدھرا برسے رس میں ڈوبیں نین
جسم میں چندن ایسی خوشبو لہرائے دن رین

پگ پگ پر ہیں سندریوں نے روپ کے جال بچھائے
روپ نگر سے کوئی مسافر بچ کر کبھی نہ جائے

پگ پگ سندر سندر مکھڑے پگ پگ نین کٹورے
رس چھلکا چھلکا کر ڈالیں دل پر پیار کے ڈورے

چاندنیا کی چنری اوڑھے سندر پریاں آئیں
من وینا کے تار چھیڑ کر گیت سہانے گائیں

بچوں والے ہی جانے ہیں اور نہ جانے کوئے
جتنا کچّا ہوئے یہ پھل اتنا میٹھا ہوئے

دُنیا کے ہر جال کی مشکل ہے پہچان
پاؤں سے طائر پھنسے باتوں سے انسان

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

सुन्दरियां ऐसे बरसायें सुन्दरता का जादू
कोई न बचने पाये इन से चोर हो या कोई साधू

काम देवता छुपकर दिल पर मारे ऐसे तीर
रुप नगर का राही प्रेम की बन जाये तस्वीर

रुप की पूजा करते करते अपनी उमर गंवाये
किस कारन आया था जग में कुछ भी याद न आये

रुप नगर के जाल में फंस कर ग़ारत करे जवानी
यह जीवन बन कर रह जाये बिसरी हुयी कहानी

राम नाम से नाता तोड़े बने न कोई बात
अपने किये पे आप ही बन्दा पछताये दिन रात

चोर लुटेरे ज़ालिम डाकू बन बैठे प्रधान
पगले और बुज़दिल कहलायें आज के नेक इन्सान

बचपन की सरहद से आगे बचपन साथ न आये
यह जीवन का सुन्दर सपना टूट के हाथ न आये

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

سندریاں ایسے برسائیں سندرتا کا جادو
کوئی نہ بچنے پائے ان سے چور ہو یا کوئی سادھو

کام دیوتا چھپ کر دِل پر مارے ایسے تیر
روپ نگرکار اہی پریم کی بن جائے تصویر

روپ کی پوجا کرتے کرتے اپنی عمر گنوائے
کِس کارن آیا تھا جگ میں کچھ بھی یاد نہ آئے

روپ نگر کے جال میں پھنس کر غارت کرے جوانی
یہ جیون بن کر رہ جائے بسری ہوئی کہانی

رام نام سے ناتا توڑے بنے نہ کوئی بات
اپنے کئے پہ آپ ہی بندہ پچھتائے دِن رات

چور لٹیرے ظالم ڈاکو بن بیٹھے پردھان
پگلے اور بُزدل کہلائیں آج کے نیک انسان

بچپن کی سرحد سے آگے بچپن ساتھ نہ آئے
یہ جیون کا سندر سپنا لوٹ کے ہاتھ نہ آئے

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

बालापन में नैन चुरा कर गये विदेसवा मीत
दिनवा दिनवा गिन गिन आली गयी उमरया बीत

उड़न खटोले पर बादल के उड़ कर मनवा जा
पिया मिलें तो विनती करके साथ पिया को ला

टूटी रस्सी जोड़कर दुनिया काम चलाये
टूटे साँस की डोर को गिरहा कौन लगाये

देखे हैं संसार में चाहत के दो रंग
भंवरा इक का नाम है एक का नाम पतंग

इक को रुप का मान है इक को प्यार का मान
ऐसे प्यार के भेद को जाने है भगवान

कौन कहे यह चकोर से प्यार का खेल न खेल
धरती और आकाश में कब होता है मेल

चाहत के दो रुप हैं भंवरा और पतंग
इक तो रस पी कर उड़ गये इक की मौत उमंग

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

بالاپن میں نین چُرا کر گئے بدیسوا میت
دنوا دنوا گن گن آلی گئی عمریا بیت

اڑن کھٹولے پر بادل کے اُڑ کر منوا جا
پیا ملیں تو بنتی کر کے ساتھ پیا کو لا

ٹوٹی رسّی جوڑ کر دُنیا کام چلائے
ٹوٹے سانس کی ڈور کو گرہا کون لگائے

دیکھے ہیں سنسار میں چاہت کے دو رنگ
بھنورا اک کا نام ہے ایک کا نام پتنگ

اک کو روپ کا مان ہے اک کو پیار کا مان
ایسے پیار کے بھید کو جانے ہے بھگوان

کون کہے یہ چکور سے پیار کا کھیل نہ کھیل
دھرتی اور آکاش میں کب ہوتا ہے میل

چاہت کے دو روپ ہیں بھنورا اور پتنگ
اک تو رس پی کر اُڑ جائے اِک کی موت اُمنگ

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

कोयल जिस दम बाग़ में गाती है मलहार
तन में रोये मन मेरा मन में रोये प्यार

चन्दा बिरहन पर हँसे नैनाँ नीर बहायें
किरनें दुखिया रुह पर अग्नि वान चलायें

चाँदनिया के साज़ पर किरनों का संगीत
सुन कर सर्द आहें भरे मेरी पगली प्रीत

रेखाओं में हाथ की अपना जीवन लेख
ज्ञान की आँखें खोलकर देख सके तो देख

पिया मिलन की आस में रोयें निसदिन नैन
जीवन में कब आयेगी मधुर मिलन की रैन

बेदर्दी से नेहा लगा के क्या कोई फल पाये
अंगारों के हार पहन कर मनवा क्या मुस्काये

सोतन साजन के मन भाये काहे करुँ मैं बैर
मैं तो पियूँगी धो धो आली सौतनवा के पैर

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

کوئل جس دم باغ میں گاتی ہے ملہار
تن میں روئے من مرا من میں روئے پیار

چندا ابرہن پر ہنسے نیناں نیر بہائیں
کرنیں دُکھیا روح پر اگنی بان چلائیں

چاندنیا کے ساز پر کرنوں کا سنگیت
سُن کر سرد آہیں بھرے میری پگلی پریت

ریکھاؤں میں ہاتھ کی اپنا جیون لیکھ
گیان کی آنکھیں کھول کر دیکھ سکے تو دیکھ

پیا ملن کی آس میں روئیں نِس دن نین
جیون میں کب آئے گی مدھُر ملن کی رَین

بیدردی سے نیہاں لگا کے کیا کوئی پھل پائے
انگاروں کے ہار پہن کر منوا کیا مُسکائے

سوتن ساجن کے من بھائے کاہے کروں میں بَیر
مَیں تو پیوں گی دھو دھو آلی سوتنوا کے پَیر

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

अंगारों में लफ़्ज़ ढलें और शोलों में जज़बात
लब जल उठें आये लबों पर जब कलयुग की बात

नेक इन्सान है आज के युग में हर हक से मरहूम
हर ज़ालिम का नाम रखा है दुनिया ने मज़लूम

हरफ़ हरफ़ शोलों में बदले अग्नि बने ज़बान
कलजुग के वृतान्त की जानिब जिस दम जाये ध्यान

ओ परदेसी साजना भीगे जिस दम रैन
चाँद सितारों में तुझे ढूंढें मोरे नैन

निन्दया की आग़ोश में जब खोये संसार
मैं तेरी पूजा करुं छेड़ के मन के तार

तू चन्दा में चाँदनी तू सूरज में नूर
मन में बस कर किस लिये नैनों से है दूर

मन मन्दिर के बीच है साजनवा का वास
बन बन पी की खोज में काहे फिरे उदास

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

انگاروں میں لفظ ڈھلیں اور شعلوں میں جذبات
لب جل اٹھیں آئے لبوں پر جب کلجگ کی بات

نیک انساں ہے آج کے یگ میں ہر حق سے محروم
ہر ظالم کا نام رکھا ہے دُنیا نے مظلوم

حرف حرف شعلوں میں بدلے اگنی بنے زبان
کلجگ کے برتانت کی جانب جس دم جائے دھیان

او پردیسی ساجنا بھیگے جس دم رین
چاند ستاروں میں تجھے ڈھونڈیں مورے نین

نندیا کی آغوش میں جب کھوئے سنسار
مَیں تیری پُوجا کروں چھیڑ کے من کے تار

تو چندا میں چاندنی تو سُورج مَیں نُور
مَن میں بس کر کس لئے نینوں سے ہے دُور

مَن مندر کے بیچ ہے ساجنوا کا باس
بن بن پی کی کھوج میں کاہے پھرے اُداس

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

क्यों सीना ताने फिरे ओ मूरख नादान
प्यार जो निर्बल से करे उसे कहें बलवान

वक्त वक्त की बात है समय समय के बोल
फूटें भाग्य तो लाल भी बिकें कौड़ियों मोल

रूप जवानी की कोमलता है इक सपन समान
कलियाँ खिल कर क्यों मुरझायें ले इन से तू ज्ञान

छेड़े जो भी नीच को आख़िर को पछताये
कीच में पत्थर फेंकिये कीच से मुंह भर जाये

काँच के मनके बाज़ारों में बिकें मोतियों मोल
कंकर कहलाते हैं हीरे यह डिबिया मत खोल

भूल गयी है बैरी दुनिया धरम करम का नाम
राम ही जाने क्या होगा इस जग का अंजाम

मरमर ऐसे जिस्म सजा कर कर के हार सिंगार
बिकती है हव्वा की बेटी आज सरे बाज़ार

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

کیوں سینہ تانے پھرے او موُرکھ نادان
پیار جو نربل سے کرے اُسے کہیں بلوان

وقت وقت کی بات ہے، سہمے سہمے کے بول
پھوٹیں بھاگ تو لعل بھی بکیں کوڑیوں مول

رُوپ جوانی کی کوملتا ہے اک سپن سمان
کلیاں کھِل کر کیوں مُرجھائیں لے ان سے تو گیان

پھیرے جو بھی پیچ کو آخر کو پچھتائے
کیچ میں پتھر پھینکئے کیچ سے منہ بھر جائے

کانچ کے منکے بازاروں میں بکیں موتیوں مول
کنکر کہلاتے ہیں ہیرے یہ ڈبیا مت کھول

بھول گئی ہے بیری دُنیا دھرم کرم کا نام
رام ہی جانے کیا ہوگا اس جگ کا انجام

مرمرا ایسے جسم سجا کر کرکے ہار سنگار
بکتی ہے حوا کی بیٹی آج سرِ بازار

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

मन है मरकज़ मन है महवर मन है इक परकार
मन के चक्कर में देखा है हमने कुल संसार

इस चक्की के फेर में किस्मत का है फेर
माँग दुआ चलती रहे चक्की साँझ सवेर

इस चक्की की भगत जी नेकी कौन भुलाये
अपना सीना फूंक कर जग की भूख मिटाये

चलती चक्क़ी देख कर खुश हो भगत कबीर
यह चक्की चलती रहे बनी रहे तकदीर

इस दाता के देन की कौन सुनाये बात
जो सारे संसार को गुप्त करे खै़रात

दाता के दरबार से दान ज़माना पाये
देने वाला कौन है हाथ नज़र न आये

साँस की नाजुक डोर पर इतना मत इतराओ
जीवन सागर में बहे तिनके की इक नाव

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

من ہے مرکز من ہے محور من ہے اِک پرکار
مَن کے چکر میں دیکھا ہے ہم نے کُل سنسار

اس چکی کے پھیر میں قسمت کا ہے پھیر
مانگ دُعا چلتی رہے چکی سانجھ سویر

اس چکی کی بھگت جی نیکی کون بھُلائے
اپنا سینہ پھونک کر جگ کی بھوک مٹائے

چلتی چکی دیکھ کر خوش ہو بھگت کبیر
یہ چکی چلتی رہے بنی رہے تقدیر

اس داتا کے دین کی کون سُنائے بات
جو سارے سنسار کو گپت کرے خیرات

داتا کے دربار سے دان زمانہ پائے
دینے والا کون ہے ہاتھ نظر نہ آئے

سانس کی نازک ڈور پر اِتنا مت اتراؤ
جیون ساگر میں بہے تنکے کی اِک ناؤ

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

डूबे कोई ताल में खाट पे इक मर जाये
गिरकर कोई पेड़ से अपनी जान गँवाये

इक को चीता फाड़ दे इक को डस ले नाग
दुश्मन किसी की जान की बन जाती है आग

चलती चक्की देखकर काहे मचाये शोर
इस चक्की से है बंधी जग की जीवन डोर

नीच कभी बन सके न उत्तम कितना मान बढ़ाओ
काँच का मनका बने न मोती पानी लाख चढ़ाओ

नानक भी मन गौतम भी मन, मन रामा मन कृश्न मुरार
यह सृष्टि यह दुनिया तो है मन का ही सारा विस्तार

मन की जोति का है सारी दुनिया में प्रकाश
मन के अन्दर सिमटे देखे धरती और आकाश

तोल सके तो अपने मन के ज्ञान तराजू तोल के देख
मन का भेद भी खुल जायेगा ध्यान की आँखें खोल के देख

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

ڈوبے کوئی تال میں کھاٹ پہ اِک مرجائے
گِر کر کوئی پیڑ سے اپنی جان گنوائے

اک کو چیتا پھاڑ دے اک کو ڈس لے ناگ
دشمن کسی کی جان کی بن جاتی ہے آگ

چلتی چکّی دیکھ کر کاہے مچائے شور
اس چکّی سے ہے بندھی جگ کی جیون ڈور

نیچ کبھی بن سکے نہ اُتّم کتنا مان بڑھاؤ
کانچ کا منکا بنے نہ موتی پانی لاکھ چڑھاؤ

نانک بھی من گوتم بھی من من راما من کرشن مُرار
یہ سرشٹی یہ دُنیا تو ہے من کا ہی سارا بِستار

من کی جوتی کا ہے ساری دُنیا میں پرکاش
من کے اندر سمٹے دیکھے دھرتی اور آکاش

تول سکے تو اپنے من کو گیان ترازو تول کے دیکھ
من کا بھید بھی کھل جائیگا دھیان کی آنکھیں کھول کے دیکھ

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

जल कर ठंडी आग में राख भये इन्सान
साची बात है दोस्तो ! चिन्ता चिता समान

अज्ञानी मन बावरा फिर भी भेद न पाये
पेड़ से पत्ता टूट कर जीवन कथा सुनाये

दुख में घिर कर बाँवरे काहे नीर बहाये
काँटों की आग़ोश में फूल सदा मुसकाये

भर भर प्याले मद पिये दुख का करे उपाय
मूरख है मन बाँवरा आग से आग बुझाये

जितनी है मासूम चकोरी उतना चाँद कठोर
अम्बर पर बैठा मुस्काये तके न उस की ओर

नदिया की आग़ोश में पानी बहता जाये
जीवन क्या है भेद यह जग से कहता जाये

चलती चक्की देख कर रोने की क्या बात
जीवन मरन 'कबीर जी' है दाता के हाथ

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

جل کر ٹھنڈی آگ میں راکھ بھئے انسان
ساچی بات ہے دوستو چلتا پھرتا سمان

اگیانی من باوُرا پھر بھی بھید نہ پائے
پیڑ سے پتّہ ٹوٹ کر جیون کتھا سُنائے

دُکھ میں گھر کر باورے کاہے نیر بہائے
کانٹوں کی آغوش میں پھول سدا مُسکائے

بھر بھر پیالے مد پیئے دُکھ کا کرے اُپائے
مُورکھ ہے من باورا آگ سے آگ بجھائے

جتنی ہے معصوم چکوری اُتنا چاند کٹھور
امبر پر بیٹھا مُسکائے تکے نہ اُس کی اور

ندیا کی آغوش میں پانی بہتا جائے
جیون کیا ہے بھید یہ جگ سے کہتا جائے

چلتی چکّی دیکھ کر رونے کی کیا بات
جیون مرن کبیر جی ہے داتا کے ہات

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

कोई कहे रहीम तू कोई कहे तू राम
इक मालिक के रख लिये जग ने लाखों नाम

कोई कहे मौला तेरा मस्जिद में है वास
किसी की मन्दिर में बुझे दर्शन जल से प्यास

चन्द्रमा से मेल कठिन है ओ नादान चकोर
दूर गगन में वास है उसका पंख तिरे कमज़ोर

रुप रंग पर अपने गोरी क्यों इतना इतराये
प्यारे के गीत सुनाकर दो दिन यह पंछी उड़ जाये

दिल टूटे तो क्यों न पिरोयें नैनाँ अँसुअन हार
पर्वत पर जब चोट पड़े तो निकले जल की धार

बिरहा की अग्नि से तन मन अग्नि में ढल जाये
बिरंहन के जो आँसू पोंछे हाथ उसका जल जाये

आहें भर भर दिनवा काटूँ तारे गिन गिन रैन
रुठ गयी निन्दया बिरहन से जब से लागे नैन

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

کوئی کہے رحیم تو کوئی کہے تو رام
اک مالک کے رکھ لئے جگ نے لاکھوں نام

کوئی کہے مولا تیرا مسجد میں ہے باس
کسی کی مندر میں بجھے درشن جل سے پیاس

چندرماں سے میل کٹھن ہے او نادان چکور
دور گگن میں باس ہے اس کا پنکھ ترے کمزور

روپ رنگ پر اپنے گوری کیوں اتنا اترائے
پیار کے گیت سنا کر دو دن یہ پنچھی اڑ جائے

دل ٹوٹے تو کیوں نہ پروئیں نیناں انسوئن ہار
پربت پر جب چوٹ پڑے تو نکلے جل کی دھار

برہا کی اگنی سے تن من اگنی میں ڈھل جائے
برہن کے جو آنسو پونچھے ہاتھ اس کا جل جائے

آہیں بھر بھر دنوا کاٹوں تارے گن گن رین
روٹھ گئی نندیا برہن سے جب سے لاگے نین

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

लौटे इस संसार में रहकर सपन समान
इक रमते जोगी की सूरत आये हर इन्सान

दुनिया है इक सुन्दर सपना जो देखे खो जाये
भूल के अपना आप बाँवरा दुनिया का हो जाये

रंग रंग की बोली बोलें भाँति भाँति के लोग
अपने मन दर्पन में देखें दुख सुख का संजोग

मोहित कर लें हर राही को सजे सजे बाजार
हाट हाट पर होते देखे खोटे कारोबार

मूरख बन्दा कदम कदम पर माटी से घबराये
माटी खाये माटी ओढ़े माटी में मिल जाये

मौत से बचने का कोई कैसे करे उपाय
साँस इक नाज़ुक सी कली बिकसे तो मुरझाये

साँस एक जलता दीप है साँस इक महका फूल
आँधी से लें टक्करें दोनों की है भूल

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

تُو نے اس سنسار میں رہ کر سین سمان
اک رمتے جوگی کی صورت آئے ہر انسان

دُنیا ہے اک سندر سپنا جو دیکھے کھو جائے
بھول کے اپنا آپ باؤرا دُنیا کا ہو جائے

رنگ رنگ کی بولی بولیں بھانت بھانت کے لوگ
اپنے من درپن میں دیکھیں دُکھ سُکھ کا سنجوگ

موہت کر لیں ہر راہی کو سجے سجے بازار
ہاٹ ہاٹ پر ہوتے دیکھے کھوٹے کاروبار

مُورکھ بندہ قدم قدم پر ماٹی سے گھبرائے
ماٹی کھائے ماٹی اوڑھے ماٹی میں رل جائے

مُوت سے بچنے کا کوئی کیسے کرے اُپائے
سانس اک نازک سی کلی بکسے تو مرجھائے

سانس اک جلتا دیپ ہے سانس اک مہکا پھُول
آندھی سے لیں ٹکریں دونوں کی ہے بھُول

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

कुंज कुंज बेलें फैलाईं पग पग पेड़ सजाये
डाली डाली रंग रंग के फल और फूल सजाये

तूने मालिक खूब बनाया यह सुन्दर संसार
सेज पे फूलों की इक सोये एक पहने अंगार

सुख की कहीं से ठंडी छाँव दुख की कहीं से धूप
कैसे कैसे रंग हैं तेरे कैसे कैसे रुप

दाने दाने को कोई तरसे भरे कहीं भंडार
फिर भी कहलाये तू दाता सब का पालन हार

राज करे संसार पे कोई पहन के शाही ताज
इक इक दाने का दुनिया में है कोई मोहताज

रुखी सूखी खाकर कोई सुख की निन्दया सोये
सोने चाँदी की छाँव में दुखिया कोई रोये

हर बन्दा है एक मुसाफ़िर दुनिया एक सराय
साँझ सवेरे लगा है ताँता इक आये इक जाये

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

کنج کنج بیلیں پھیلائیں پگ پگ پیڑ سجائے
ڈالی ڈالی رنگ رنگ کے پھل اور پھول سجائے

تو نے مالک خوب بنایا یہ سُندر سنسار
سیج پہ پھولوں کی اک سوئے اک پہنے انگار

سُکھ کی کہیں ہے ٹھنڈی چھاؤں دُکھ کی کہیں ہے دھوپ
کیسے کیسے رنگ ہیں تیرے کیسے کیسے رُوپ

دانے دانے کو کوئی ترسے بھرے کہیں بھنڈار
پھر بھی کہلائے تو داتا سب کا پالن ہار

راج کرے سنسار پہ کوئی پہن کے شاہی تاج
اِک اِک دانے کا دنیا میں ہے کوئی محتاج

روکھی سوکھی کھا کر کوئی سُکھ کی نندیا سوئے
سونے چاندی کی چھاؤں میں دُکھیا کوئی روئے

ہر بندہ ہے ایک مسافر دُنیا ایک سرائے
سانجھ سویرے لگا ہے تانتا اِک آئے اِک جائے

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

तेरी दुनिया में जो आये सुध बुध बिसराये
तेरा नाम भी लेना भूले यूं मोहित हो जाये

लाखों तेरे रुप हैं मौला लाखों तेरे रंग
इन रंगों को देखने वाला रह जाता है दंग

कतरे में दरिया दिखलाये ज़र्रे में सहरा
तुझ बिन भेद न जाने कोई तेरी कुदरत का

दाने की आग़ोश में मलिक तू ही पेड़ छिपाये
पत्थर के सीने में तू ही चिंगारी दहकाये

तेरे हुकम से सूरज निकले तेरे हुकम से चाँद
तेरे नूर के आगे सारी रोशनियाँ हैं माँद

तेरे हुकम से ही लहरायें सहराओं में फूल
तू चाहे तो उड़ सकती है दरियाओं में धूल

नदियाँ, नाले, दरिया, सागर यह बन यह गुलज़ार
तेरी कुदरत के हैं मौला अदना से शहकार

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

تیری دُنیا میں جو آئے سُدھ بُدھ بسرائے
تیرا نام بھی لینا بھُولے یوں موہت ہو جائے

لاکھوں تیرے روپ ہیں مولا لاکھوں تیرے رنگ
ان رنگوں کو دیکھنے والا رہ جاتا ہے دنگ

قطرے میں دریا دکھلائے ذرّے میں صحرا
تجھ بن بھید نہ جانے کوئی تیری قدرت کا

دانے کی آغوش میں مالک تو ہی پیڑ چھُپائے
پتھّر کے سینے میں تو ہی چنگاری دہکائے

تیرے حُکم سے سُورج نکلے تیرے حُکم سے چاند
تیرے نوُر کے آگے ساری روشنیاں ہیں ماند

تیرے حکم سے ہی لہرائیں صحراؤں میں پھول
تو چاہے تو اُڑ سکتی ہے دریاؤں میں دھُول

ندیاں نالے دریا ساگر یہ بن یہ گلُزار
تیری قدرت کے ہیں مولا ادنیٰ سے شہکار

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

नेक काम में बाँट के धन कुछ यूं दुगुना हो जाता है
सूखे पत्ते झड़कर जैसे पेड़ हरा हो जाता है

इक को विद्या दान दे इक को राज और पाट
महल दो महले एक को इक को घर न घाट

साधू, सन्त, महात्मा, चोर को ठग को दे
उस दाता से माँगिये जो सब जग को दे

उस दाता के देन की कैसे करे कोई बात
सारी दुनिया को मिले जिस दर से खैरात

किस मुंह से कोई भला उसके गुन न गाये
सारी दुनिया माँग कर जिस के दर से खाये

जीवन सागर में तिरे मोती हैं अनमोल
जान पे अपनी खेलकर तहें भंवर की खोल

तू ही ख़ालिक तू ही मालिक तू ही पालन हार
तेरे एहसानों का मौला कोई नहीं शुमार

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

نیک کام میں بانٹ کے دھن کچھ یوں دوگنا ہو جاتا ہے
سوکھے پتے جھڑ کر جیسے بسنز ہرا ہو جاتا ہے

اک کو ودیا دان دے اک کو راج اور پاٹ
محل دو محلے ایک کو اک کو گھر نہ گھاٹ

سادھو، سنت، مہاتما، چور کو ٹھگ کو دے
اُس داتا سے مانگیئے جو سب جگ کو دے

اس داتا کے دین کی کیسے کرے کوئی بات
ساری دُنیا کو مِلے جس در سے خیرات

کِس مُنہ سے کوئی بھلا اُس کے گُن نہ گائے
ساری دُنیا مانگ کر جس کے در سے کھائے

جیون ساگر میں ترے موتی ہیں انمول
جان پہ اپنی کھیل کر تہیں بھنور کی کھول

تو ہی خالق تو ہی مالک تو ہی پالن ہار
تیرے احسانوں کا مولا کوئی نہیں شمار

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

तू सच्चा रब सच्चा साई सच्ची तेरी ज़ात
बाकी सारी बातें झूठी सच्ची है यह बात

फ़ानी दुनिया की हर इक शै बाकी तेरा नाम
यह है एक हकीकत मौला इस में नहीं कलाम

धरती पर भी हुकम है तेरा अम्बर पर भी राज
सूरज चाँद सितारे ज़र्रे सब तेरे मोहताज

तेरे जैसा आप है तू ही दूजा नाहिं कोये
बिन देखे बिन जाने मालिक तेरी पूजा होये

कोई नहीं है तेरा सानी कोई नहीं शरीक
तेरे दर से पाये दाता सारी दुनिया भीख

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

تو سچّا رب سچّا سائیں سچّی تیری ذات
باقی ساری باتیں جھوٹی سچّی ہے یہ بات

فانی دُنیا کی ہر اک شئے باقی تیرا نام
یہ ہے ایک حقیقت مولا اس میں نہیں کلام

دھرتی پر بھی حکم ہے تیرا امبر پر بھی راج
سورج چاند ستارے ذرّے سب تیرے محتاج

تیرے جیسا آپ ہے تو ہی دُوجا ناہیں کوئے
بِن دیکھے بِن جانے مالِک تیری پوُجا ہوئے

کوئی نہیں ہے تیرا ثانی کوئی نہیں شریک
تیرے در سے پائے داتا ساری دُنیا بھیک

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

دوہے

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

ग़ज़लें

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

रुप रंग की फुलवारी में आयी नयी बहार सखी
मोरे सांसों में लहरायी फूलों की महकार सखी
नैनों की मिज़राब से छेड़े किस ने मन के तार सखी
मधुर मधुर संगीत सुनाये पायल की झनकार सखी
रुपवती मधुमाती गोरी प्रीत नगर की रांह तके
मधुर मिलन के सपने देखे कर के हार सिंगार सखी
अपने बस का रोग नहीं यह अपने बस की बात नहीं
प्यार नहीं खुद करता कोई हो जाता है प्यार सखी
नैन किवड़िया खोल संवरिया मन नगरी में आन बसे
मैं भोली थी एक नज़र में जीवन बैठी हार सखी
भूल गयी मैं सब चतुराई डूब के पीके सपनों में
साँवरिया ने नैन मिलाकर देखा जो इक बार सखी
इक जाकर वापिस नहीं आये इक रस पीकर उड़ जाये
क्या परदेसी की है चाहत क्या भौंरे का प्यार सखी
राम करे वोह शुभ दिन आये पी डोली लेकर आयें
लाज का घूंघट डाल के मुख पर जाऊँ पी के द्वार सखी

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

رُوپ رنگ کی پھلواری میں آئی نئی بہار سکھی
مورے سانسوں میں لہرائی پھولوں کی مہکار سکھی
نینوں کی مضراب سے چھیڑے کس نے من کے تار سکھی
مدھر مدھر سنگیت سُنائے پائل کی جھنکار سکھی
روپ وتی مدھ ماتی گوری پریت نگر کی راہ تکے
مدھر ملن کے سپنے دیکھے کر کے ہار سنگار سکھی
اپنے بس کا روگ نہیں یہ اپنے بس کی بات نہیں
پیار نہیں خود کرتا کوئی ہو جاتا ہے پیار سکھی
نین کو ڑیا کھول سنوریا من نگری میں آن بسے
مئں بھولی تھی ایک نظر میں جیون بیٹھی ہار سکھی
بھول گئی نیں سب چترائی ڈوبکے پی کے سپنوں میں
سانوریا نے نین ملا کر دیکھا جو اک بار سکھی
اک جا کر واپس نہیں آئے اک رس پی کر اُڑ جائے
کیا پردیسی کی ہے چاہت کیا بھنورے کا پیار سکھی
رام کرے وہ شبھ دن آئے پی ڈولی لے کر آئیں
لاج کا گھونگھٹ ڈال کے مُکھ پر جاؤں پی کے دوار سکھی

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

लोभी बन्दे काले धन्धे खोटे कारोबार मिले
सच्चाई की जिन्स से खाली दुनिया के बाज़ार मिले
इस संसार के भव सागर में पाप की नैय्या उतरे पार
धर्म की नैय्या से टकराया पग पग पर मंझधर मिले
बात बात पर कसमें खाये बात बात पर बोले झूठ
नाम उसका हथियारे जग में फिर भी राम अवतार मिले
कलयुग का यह दौर है यारों कर जुग की यह दुनिया है
फूल जो बोये उस को जलते अंगारों का हार मिले
रावन राम को कथा सुनाये सीता जी माँगें वरदान
निर आदर हो नेक मनुष का पापी को सत्कार मिले
निर्धन की कोई बात न माने कोई न पूछे निर्बल को
कोने कोने में दुनिया के धन की जय जय कार मिले
मीठी मीठी भोली भाली बातें हैं इस दुनिया की
मुंह में राम बग़ल में छुरियाँ लेकर यह संसार मिले
सूरज उभरे पश्चिम से या चन्दा निकले पूरब से
इस झूठे संसार में प्यारे कहीं न सच्चा प्यार मिले
आज का इन्साँ तोला जाये दौलत के काँटे पे 'तुफ़ैल'
निर्धन विद्यावान हो कितना दर दर पर फटकार मिले

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

لوبھی بندے کالے دھندے کھوٹے کاروبار ملے
سچائی کی جنس سے خالی دُنیا کے بازار ملے
اس سنسار کے بھوساگر میں پاپ کی نیا اُترے پار
دھرم کی نیا سے ٹکرایا یگ یگ پر منجدھار ملے
بات بات پر قسمیں کھائے بات بات پر بولے جھوٹ
نام اس کا ہتیارے جگ میں پھر بھی رام اوتار ملے
کل جُگ کا یہ دور ہے یارو کر جگ کی یہ دُنیا ہے
پھول جو بوئے اس کو جلتے انگاروں کا ہار ملے
راون رام کو کتھا سُنائے سیتا جی مانگیں بردان
نر-آدر ہو نیک منش کا پاپی کو ستکار ملے
نردھن کی کوئی بات نہ مانے کوئی نہ پوچھے نربل کو
کونے کونے میں دُنیا کے دھن کی جے جے کار ملے
میٹھی میٹھی بھولی بھالی باتیں ہیں اس دُنیا کی
منہ میں رام بغل میں چھریاں لے کر یہ سنسار ملے
سورج اُبھرے پچھم سے یا چندا نکلے پورب سے
اس جھوٹے سنسار میں پیارے کہیں نہ سچا پیار ملے
آج کا انساں تولا جائے دولت کے کانٹے پہ طفیل
نردھن ودّیاوان ہو کتنا در در پر پھٹکار ملے

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

इस दुनिया में यूं तो मिले हैं प्यार के दावेदार बहुत
मुशकिल में काम एक न आया देखे हम ने यार बहुत
प्यार की राहें अव्वल अव्वल सहल दिखायी देती थीं
आख़िर आख़िर इल्म हुआ ये मंजिल है दुश्वार बहुत
मुंह के मीठे मन के खोटे जान के वोह दुश्मन निकले
इस नगरी में जिन को हम ने समझा था ग़म ख़्वार बहुत
जिन आँखों में डूब के हमने चाहा था सुख पायेंगे
उन आँखों में डूब के हमने पाये है आज़ार बहुत
किस्मत से मिलता है साहिल उम्मीदों की किश्ती को
साहिल से साहिल तक वरना फैले हैं मंझधार बहुत
आपके गीतों की दुनिया में बात अनोखी है प्यारे
शेर इस रंग में कहने वाले देखे हैं फ़नकार बहुत

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

اس دُنیا میں یوں تو ملے ہیں پیار کے دعویدار بہت
مُشکل میں کام ایک نہ آیا دیکھے ہم نے یار بہت
پیار کی راہیں اوّل اوّل سہل دکھائی دیتی تھیں
آخر آخر علم ہُوا یہ منزل ہے دشوار بہت
مُنہ کے میٹھے من کے کھوٹے جان کے وہ دُشمن نکلے
اس نگری میں جن کو ہم نے سمجھا تھا غمخوار بہت
جن آنکھوں میں ڈوب کے ہم نے چاہا تھا سُکھ پائیں گے
اُن آنکھوں میں ڈوب کے ہم نے پائے ہیں آزار بہت
قسمت سے مِلتا ہے ساحل امیدوں کی کشتی کو
ساحل سے ساحل تک ورنہ پھیلے ہیں منجدھار بہت
آپ کے گیتوں کی دُنیا میں بات انوکھی ہے پیارے
شعر اس رنگ میں کہنے والے دیکھے ہیں فن کار بہت

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

लाखों दुख हैं जान अकेली
जीवन क्या है एक पहेली
मन की इक इक आशा जैसे
दुलहन कोई नयी नवेली
रस भरता है जब नैनों में
रुत होती है क्या अलबेली
पल का हँसना उमर का रोना
प्रीत की रीत न पूछ सहेली
भर लिया दामन रूसवाई से
अपने सर पर तोहमत ले ली
हँस हँस कर दुख के दिन काटे
हँस हँस कर हर आफ़त झेली
मन बसिया रसिया नहीं आया
मन की सूनी रही हवेली
फूलों ने जब फाग बनाया
हम ने खून से होली खेली
विनती सुन ले भगवन मेरी
है तू ही सब जग का बेली
पी सुख के झूले में झूले
शाख़ पे जैसे फूल चमेली

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

لاکھوں دُکھ ہیں جان اکیلی
جیون کیا ہے ایک پہیلی
من کی اِک اِک آشا جیسے
دُلہن کوئی نئی نویلی
رَس بھرتا ہے جب نینوں میں
رُت ہوتی ہے کیا البیلی
پَل کا ہنسنا عمر کا رونا
پریت کی ریت نہ پوچھ سہیلی
بھر لیا دامن رسوائی سے
اپنے سر پر تہمت لے لی
ہنس ہنس کر دُکھ کے دن کاٹے
ہنس ہنس کر ہر آفت جھیلی
من بسیا رسیا نہیں آیا
من کی سونی رہی حویلی
پھولوں نے جب پھاگ بنایا
ہم نے خون سے ہولی کھیلی
بنتی سُن لے بھگون میری
ہے تو ہی سب جگ کا بیلی
پی سُکھ کے جھولے میں جھولے
شاخ پہ جیسے پھول چنبیلی

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

किस बैरी भरमाये नयन
बस में नहीं फिर आये नयन
प्यार में हार के 'हीरा मन'
मूल नहीं पछताये नयन
ध्यान महल में कौन आया
दिल रोया भर आये नयन
प्रेम डगर पथरीली थी
रो रो कर पथराये नयन
ध्यान लगा कर ज्ञान मिला
खोये हैं तो पाये नयन
पी आये कुछ कह न सकी
बैठी रही झुकाये नयन
परदेसी कब आते हैं
पग पग लाख बिछाये नयन
बरखा रुत में बिरहा ने
बिन बादल बरसाये नयन

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

کِس بیری بھرمائے نین
بس میں نہیں پھر آئے نین
پیار میں ہار کے "ہیرا من"
مول نہیں پچھتائے نین
دھیان محل میں کون آیا
دِل رویا بھر آئے نین
پریم ڈگر پتھریلی تھی
رو رو کر پتھرائے نین
دھیان لگا کر گیان ملا
کھوئے ہیں تو پائے نین
پی آئے کچھ کہہ نہ سکی
بیٹھی رہی جھکائے نین
پردیسی کب آتے ہیں
یگ یگ لاکھ بچھائے نین
برکھا رُت میں برہا نے
بِن بادل برسائے نین

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

माथे की रेखा ने मुझको, यह भी दिन दिखलाये
हँसना चाहा आँख भर आयी, सुख माँगे दुख पाये
आस निरास भयी री आली, आये नहीं साँवरिया
दर्शन जल के प्यासे नैनाँ, रो रो कर पथराये
मन के अंधियारे मन्दिर में, जली न आस की जोत
कितने दीप जलाये मैंने कितने दीप बुझाये
दूर न होने पाया दिल से, लोक लाज का ध्यान
अँसुअन के अंगारे पी कर, निसदिन हम मुसकाये
पतझढ़ ने वोह रंग जमाया, खिला न मन का फूल
कितने फागुन कितने सावन, लौट लौटकर आये
नैनों की तकदीर बनी है, दर्शन जल की प्यास
कहने को बेदर्दी सैय्याँ मन के बीच समाये

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

ماتھے کی ریکھا نے مجھ کو یہ بھی دِن دکھلائے
ہنسنا چاہا آنکھ بھر آئی سُکھ مانگے دُکھ پائے
آس نراس بھئی ربی آلی آئے نہیں سانوریا
درشن جل کے پیاسے نیناں رو رو کر پتھرائے
مَن کے اندھیارے مندر میں جلی نہ آس کی جوت
کتنے دیپ جلائے مَیں نے کتنے دیپ بجھائے
دُور نہ ہونے پایا دِل سے لوک لاج کا دھیان
انسوئن کے انگارے پی کر نِدن ہم مُسکائے
بیت جھڑ نے وہ رنگ جمایا کِھلا نہ من کا پھُول
کتنے پھاگن کتنے ساون لوٹ لوٹ کر آئے
نینوں کی تقدیر بنی ہے درشن جل کی پیاس
کہنے کو بیدردی سیاں من کے بیچ سمائے

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

होनी ने दिखलाये मुझ को क्या अनहोने खेल
जिस दीपक से काजल माँगा बाती रही न तेल
पगले मन काहे को की थी परदेसी से प्रीत
चन्दा और चकोर का जग में मेल निरा अनमेल
उड़ते उड़ते थक जायेगा झड़ जायेंगें पंख
धरती होकर अम्बर से तू प्यार का खेल न खेल
निर्मोही से तू दुनिया में मत रख मोह की आस
कौन चढ़ाता है कीकर पर अंगूरों की बेल
काहे नीर बहाये काहे रो रो नैन गँवाये
प्रीत की रीत यही है मूरख हँस हँस कर दुख झेल
कोई न जाने कब आयेगी पिया मिलन की रैन
कोई न जाने मंढे चढ़ेगी कब आशा की बेल
पी चरनन की धूल मिले तो जीवन का सिंगार
पी से दूरी जीवन तो है पगले दुख की जेल
आर पार है चकवा चकवी बीच नदी का पाट
रोते रोते रैनाँ बीते भोर समय हो मेल

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

ہونی نے دکھلائے مجھ کو کیا انہونے کھیل
جس دیپک سے کاجل مانگا باقی رہی نہ تیل
پگلے من کاہے کو کی تھی پردیسی سے پریت
چندا اور چکور کا جگ میں میل نرا ان میل
اڑتے اُڑتے تھک جائے گا جھڑ جائیں گے پنکھ
دھرتی ہو کر امبر سے تو پیار کا کھیل نہ کھیل
نرموہی سے توُ دنیا میں مت رکھ موہ کی آس
کون چڑھاتا ہے کیکر پر انگوروں کی بیل
کاہے نیر بہائے کاہے رو رو نین گنوائے
پریت کی ریت یہی ہے مورکھ ہنس ہنس کر دُکھ جھیل
کوئی نہ جانے کب آئے گی پیا ملن کی رین
کوئی نہ جانے منڈھے چڑھے گی کب آشا کی بیل
پی چرنن کی دھول ملے تو جیون کا سنگھار
پی سے دُوری جیون تو ہے پگلے دُکھ کی جیل
آر پار ہیں چکوا چکوی بیچ ندی کا پاٹ
روتے روتے ریناں بیتے بھور سمے ہو میل

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

मन मूरख है डाँवां डोल
पतरी वाले पतरी खोल
मेरे हाथ की रेखा देख
साची साची बतियाँ बोल
पी नैनों की मान के बात
लुट गयी मैं आली अनमोल
कब तक रोलूँ माटी में
अँसुअन के मोती अनमोल
ऐसा कोई टोना कर
साजन डालें प्रीत का मोल
ज्ञान की आहुति सुलगा
मेरे भाग की गिरहें खोल
पी से कह दे प्यार मेरा
चाहत के काँटे पर तोल
पिया मिलन का दे सन्देस
कानों में अमृत रस घोल

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

مَن مورکھ ہے ڈانواڈول
پتری والے پتری کھول
میرے ہاتھ کی ریکھا دیکھ
ساچی ساچی بتیاں بول
پی نینوں کی مان کے بات
لٹ گئی میں آئی۔ انمول
کب تک رولوں مائی میں
آنسوؤں کے موتی انمول
ایسا کوئی ٹونا کر
ساجن ڈالیں پریت کا مول
گیان کی آہوتی سلگا
میرے بھاگ کی گرہیں کھول
پی سے کہدے پیار مرا
چاہت کے کانٹے پر تول
پیا ملن کا دے سندیس
کانوں میں امرت رس گھول

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

क्या पूछो हो दुनिया वालों दिल आने की बात
प्रीत न देखे महल दो महले प्रीत न पूछे ज़ात
दुख में ऐसे फेर के नज़रें चल देते हैं लोग
पेड़ों से पतझड़ में जैसे रुठें सूखे पात
आशाओं की फुलवारी में खिले थे क्या क्या फूल
आए थे जब साजन बन कर जीवन की प्रभात
नैनाँ करें निछावर मोती मन में दीप जलें
ध्यान नगर से जब भी गुज़रे यादों की बारात
जीत की कीमत काँच के मनके मात का मोती मोल
दुनिया का अंजाम जो सोचा हँसकर खा ली मात
सोचों के झूलों में झूले जब साजन की याद
छम छम छम अंखियन से बरसे बिन बादल बरसात
लग जाती है चुप सी जब भी साजन पूछें हाल
नैनों में लहरा जाते हैं दर्द भरे जज़्बात

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

अंग अंग में लहराती है यूँ बिरहा की आग
आते आते होंठों तक ही जल जाती है बात
डूब गया है जब से मेरे सुख का सुन्दर चाँद
आँसू दीप जलाकर काटूँ दुख की काली रात
देख न सुख के झूठे सपने बात न सुख की सोच
सुख की रेखा से है खाली पगले तेरा हाथ
अपनी तो चुप रहते रहते गुज़री उमर *'तुफ़ैल'*
कहना भी चाहा तो किसी से कह न सके हालात

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

انگ انگ میں لہراتی ہے یوں برہا کی آگ
آتے آتے ہونٹوں تک ہی جل جاتی ہے بات
ڈوب گیا ہے جب سے میرے سُکھ کا سُندر چاند
آنسو دیپ جلا کر کاٹوں دکھ کی کالی رات
دیکھ نہ سُکھ کے جھوٹے سپنے بات نہ سُکھ کی سوچ
سُکھ کی ریکھا سے ہے خالی پگلے تیرا ہات
اپنی تو چُپ رہتے رہتے گزری عمر طفیل
کہنا بھی چاہا تو کسی سے کہہ نہ سکے حالات

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

کیا پوچھو ہو دُنیا والو دِل آنے کی بات
پریت نہ دیکھے محل دو محلے پریت نہ پوچھے ذات
دکھ میں ایسے پھیر کے نظریں چل دیتے ہیں لوگ
پیڑوں سے پت جھڑ میں جیسے روٹھیں سوکھے پات
آشاؤں کی پھلواری میں کھلے تھے کیا کیا پھول
آئے تھے جب ساجن بن کر جیون کی پربھات
نیناں کریں نچھاور موتی من میں دیپ جلیں
دھیان نگر سے جب بھی گزرے یادوں کی بارات
جیت کی قیمت کانچ کے منکے مات کا موتی مول
دُنیا کا انجام جو سوچا ہنس کر کھالی مات
سوچوں کے جھولے میں جھولے جب ساجن کی یاد
چھم چھم چھم انکھیَن سے برسے بن بادل برسات
لگ جاتی ہے چُپ سی جب بھی ساجن پُوچھیں حال
نینوں میں لہرا جاتے ہیں درد بھرے جذبات

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

चाँद सा सुन्दर मुख है उसका नैनाँ रस के प्याले हैं
रुप नगर की रुपवती है हम जिसके मतवाले हैं
घायल होकर भी मन उसके नाम की माला जपता है
उस मधुमाती सुकुमारी के नैना वान निराले हैं
क्योंकर हो मालूम किसी को उस गोरी के मन का भेद
रुप का घूंघट है चेहरे पर लब पर लाज के ताले हैं
नैनों की उजली थाली में अँसुअन के यह दीप नहीं
प्रेम पुजारी ने पलकों पर जल के मन्दिर ढाले हैं
नदिया में लहराये जैसे चन्दा पूरनमाशी का
ध्यान में ऐसे उस गोरी की याद ने झूले डाले हैं
ज़हर न फैले क्यों नस नस में ज़ख़्म पे ज़ख़्म न खायें क्यों
मन में आशाओं के हम ने नाग हज़ारों पाले हैं
प्यार का रंग भरा है जब से तेरे नैन कटोरों में
रुप सुरुप ने तेरे गोरी क्या क्या रंग निकाले हैं
रो रो हाथ मलोगे इक दिन हीरा मन उड़ जायेगा
परदेसी पंछी पे पगले काहे डोरे डाले हैं
जिस चन्दा ने मेरे मन में प्यार की जोत जलाई है
सूरज चाँद सितारे सारे उस चन्दा के हाले हैं
रात को कैसे दिन कह दूँ मैं दिन को कैसे रात 'तुफ़ैल'
अंधियारे अंधियारे ठहरे उजियाले उजियाले हैं

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

چاند سا سُندر مُکھ ہے اس کا نیناں رس کے پیالے ہیں
رُوپ نگر کی رُوپ وتی ہے ہم جس کے متوالے ہیں
گھائل ہو کر بھی من اس کے نام کی مالا جپتا ہے
اس مدھ ماتی سکماری کے نیناں بان نرالے ہیں
کیونکر ہو معلوم کسی کو اس گوری کے من کا بھید
رُوپ کا گھونگٹ ہے چہرے پر لب پر لاج کے تالے ہیں
نینوں کی اُجلی تھالی میں انسوئن کے یہ دیپ نہیں
پریم پجاری نے پلکوں پر جل کے مندر ڈھالے ہیں
ندیا میں لہرائے جیسے چندا پورن ماشی کا
دھیان میں ایسے اس گوری کی یاد نے جھولے ڈالے ہیں
زہر نہ پھیلے کیوں نس نس میں زخم پہ زخم نہ کھائیں کیوں
من میں آشاؤں کے ہم نے ناگ ہزاروں پالے ہیں
پیار کا رنگ بھرا ہے جب سے تیرے نین کٹوروں میں
رُوپ سروپ نے تیرے گوری کیا کیا رنگ نکالے ہیں
رو رو ہاتھ ملو گے اک دن ہیرا من اڑ جائے گا
پردیسی پنچھی پہ پگلے کاہے ڈورے ڈالے ہیں
جس چندا نے میرے من میں پیار کی جوت جلائی ہے
سورج، چاند، تارے سارے اس چندا کے ہالے ہیں
رات کو کیسے دن کہدوں میں دن کو کیسے رات طفیلؔ
اندھیارے اندھیارے ٹھہرے اُجیالے اُجیالے ہیں

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

इक निर्मोही के संग ज़ब से मोरे नैनाँ लागे हैं
बिरहन के दुखियारे मन में दुनिया के दुख जागे हैं
दर्शन जल की प्यास लगी है दर्शन जल की आस नहीं
मेरे लेख हैं मेरे बैरी मेरे नैन अभागे हैं
क्या जाने कब इस दुनिया से तेरे बन्धन कट जायें
नाज़ुक है जीवन की डोरी नाज़ुक इसके धागे हैं
दुनिया को जब से छोड़ा है पीछे पीछे फिरती है
आगे आगे भाग रही थी जब हम पीछे भागे हैं
मतलब के हैं सारे रिश्ते मतलब की सब दुनिया है
सोच समझ कर हमने जग में अपने पराये त्यागे हैं

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

اِک نرموہی کے سنگ جب سے مورے نیناں لاگے ہیں
برہن کے دُکھیارے من میں دُنیا کے دُکھ جاگے ہیں
درشن جل کی پیاس لگی ہے درشن جل کی آس نہیں
میرے لیکھ ہیں میرے بیری میرے نین ابھاگے ہیں
کیا جانے کب اس دُنیا سے تیرے بندھن کٹ جائیں
نازک ہے جیون کی ڈوری نازک اس کے دھاگے ہیں
دُنیا کو جب سے چھوڑا ہے پیچھے پیچھے پھرتی ہے
آگے آگے بھاگ رہی تھی جب ہم پیچھے بھاگے ہیں
مطلب کے ہیں سارے رشتے مطلب کی سب دُنیا ہے
سوچ سمجھ کر ہم نے جگ میں اپنے پرائے تیاگے ہیں

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

साँवरिया नहीं आये उमरिया बीत गयी
राह में नैन बिछाये उमरिया बीत गयी
बिन देखे बिन जाने जिन से प्यार किया
मन में उन्हें समाये उमरिया बीत गयी
पथराये हैं रोते रोते नैन सखी
याद में उनकी हाय उमरिया बीत गयी
मन बसिया वोह रसिया निर्मोही निकला
प्रीत का रोग लगाये उमरिया बीत गयी
काग उड़ाऊँ निसदिन बैठी आँगन में
दरस की आस लगाये उमरिया बीत गयी
आशाओं के सारे बन्धन टूट गये
निराशा के साये उमरिया बीत गयी
पिया मिलन की रैन न आयी जीवन में
मन की सेज 'बिछाये उमरिया बीत गयी
नैनन रीत से शायद वोह अनजाने हैं
जिन से नैन मिलाये उमरिया बीत गयी
कब उतरेगा मन से दुख का बोझ *'तुफ़ैल'*
दुख का बोझ उठाये उमरिया बीत गयी

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

سانوریا نہیں آئے عُمریا بیت گئی
راہ میں نین بچھائے عمریا بیت گئی
بن دیکھے بن جانے جن سے پیار کیا
مَن میں اُنہیں سمائے عُمریا بیت گئی
پتھرائے ہیں روتے روتے نین سکھی
یاد میں اُن کی ہائے عُمریا بیت گئی
من بسیا وہ رسیا نرموہی نکلا
پریت کا روگ لگائے عُمریا بیت گئی
کاگ اُڑاؤں بندن بیٹھی آنگن میں
درس کی آس لگائے عُمریا بیت گئی
آشاؤں کے سارے بندھن ٹوٹ گئے
نر آشا کے سائے عُمریا بیت گئی
پیا ملن کی رَین نہ آئی جیون میں
من کی سیج بچھائے عُمریا بیت گئی
نین ریت سے شاید وہ انجانے ہیں
جن سے نین ملائے عُمریا بیت گئی
کب آریگا من سے دُکھ کا بوجھ طفیل
دُکھ کا بوجھ اُٹھائے عُمریا بیت گئی

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

रोती छोड़ के बिरहन को तुम कौन से देस सिधार गये
तकते तकते राह तुम्हारी नैन हमारे हार गये
डूब गया हर एक किनारा बिरहा के अंधियारों में
बीच भंवर में छोड़ के नैय्या तुम कित खेवनहार गये
मन से मन का सौदा करके जीवन का सुख छीन लिया
तुम झूठे सौदागर निकले झूठा कर व्यौपार गये
पलकों पर जल दीप जलाकर नैंन बिछे हैं राहों में
आ जाओ परदेसी बालम तुम जीते हम हार गये
नैन मिलाये थे तो रखते लाज भी नैन मिलाने की
नैन चुराकर क्यों बिरहन के तीर कलेजे मार गये
माँग मेरी सिंदूर को तरसे नैनाँ तरसें काजल को
रुठ के मुझ से संग तुम्हारे सारे हार सिंगार गये।
साहिल से टकरा टकरा कर नैय्या अपनी डूब गयी
मंज़िल पाकर मंज़िल खोयी जीत के बाज़ी हार गये
नैनाँ जादू डार के किस के रुप ने तुमको भरमाया
किस बैरन के बस में आये किस सौतन के द्वार गये

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

روتی چھوڑ کے برہن کو تم کون سے دیس سدھار گئے
تکتے تکتے راہ تمہاری نین ہمارے ہار گئے
ڈوب گیا ہر ایک کنارا برہا کے اندھیاروں میں
بیچ بھنور میں چھوڑ کے نیا تم کت کھیون ہار گئے
من سے من کا سودا کر کے جیون کا سکھ چھین لیا
تم جھوٹے سوداگر نکلے جھوٹا کر بیوپار گئے
پلکوں پر جل دیپ جلا کر نین بچھے ہیں راہوں میں
آجاؤ پردیسی بالم تم جیتے ہم ہار گئے
نین ملائے تھے تو رکھتے لاج بھی نین ملانے کی
نین چرا کر کیوں برہن کے تیر کلیجے مار گئے
مانگ مری سیندور کو ترسے نیناں ترسیں کاجل کو
روٹھ کے مجھ سے سنگ تمہارے سارے ہار سنگار گئے
ساحل سے ٹکرا ٹکرا کر نیا اپنی ڈوب گئی
منزل پا کر منزل کھوئی جیت کے بازی ہار گئے
نیناں جادو ڈار کے کس کے روپ نے تم کو بھرمایا
کس بیرن کے بس میں آئے کس سوتن کے دوار گئے

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

किस बैरन संग नैन मिलाय, पी नहीं आये देस
चिन्ता बन कर चिता जलाये, पी नहीं आये देस
किस के नैनाँ रस में डूबे भूली हमरी याद
किस सौतन के बस में आये, पी नहीं आये देस
पीतम लोभी रस का भौंरा कली कली से प्रीत
अब गोरी काहे पछताये, पी नहीं आये देस
सावन की घनघोर घटायें आयें और तड़पायें
बादल बरसे आग लगाये, पी नहीं आये देस
चाँद सितारे आँख मिचौली खेलें और तड़पाये
बिरहन छम छम नीर बहाये, पी नहीं आये देस
बैरी अपने बैरी पराये, बैरी है तकदीर
अब बिछड़ों को कौन मिलाये, पी नहीं आये देस
एक सांवरी भयी बाँवरी, लागा बिरहा रोग
कोई न आ कर धीर बंधाये, पी नहीं आये देस
हीरा चाट के जान गँवाऊं, या बिस खाय मरुँ
इक आये मन में इक जाये, पी नहीं आये देस
नैनों को डस जाये कजरा, चुभें गले में फूल
मैं को हार सिंगार न भाये, पी नहीं आये देस

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

کس بیرن سنگ نین ملائے پی نہیں آئے دیس
چنتا بن کر چتا جلائے پی نہیں آئے دیس
کِس کے نیناں رس میں ڈوبے بھولی ہمری یاد
کِس سوتن کے بس میں آئے پی نہیں آئے دیس
پیتم لو بھی رس کا بھنورا کلی کلی سے پریت
اب گوری کاہے پچھتائے پی نہیں آئے دیس
ساون کی گھنگھور گھٹائیں آئیں اور تڑپائیں
بادل برسے آگ لگائے پی نہیں آئے دیس
چاند ستارے آنکھ مچولی کھیلیں اور تڑپائیں
برہن چھم چھم نیر بہائے پی نہیں آئے دیس
بیری اپنے بیری پرائے بیری ہے تقدیر
اب بچھڑوں کو کون مِلائے پی نہیں آئے دیس
ایک سانوری بھئی باوری لاگا برہا روگ
کوئی نہ آکر دھیر بندھائے پی نہیں آئے دیس
ہیرا چاٹ کے جان گنواؤں یا بِس کھائے مروں
اِک آئے من میں اِک جائے پی نہیں آئے دیس
نینوں کو ڈس جائے کجرا چبھیں گلے میں پھول
میکو ہار سنگار نہ بھائے پی نہیں آئے دیس

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

सूखे नैनां नीर बहाते प्रीत रीत के मारे लोग
जीवन की राहों में क्या क्या देखे हैं दुखयारे लोग
प्यार की राहों में देखा है यह भी हम ने प्यार का रुप
जान के दुश्मन बन जाते हैं अक्सर जान से प्यारे लोग
कोई भी उम्मीद न रखना इस बेदर्द जमाने से
फूल दिखा कर भर देते हैं दामन मं अंगारे लोग
इक तिनके का भेस बदल कर बह जाती है हर दीवार
रोक नहीं सकते हैं हरगिज़ प्रीत नदी के धारे लोग
प्यार के खेल की रीत अनोखी प्यार के खेल की चाल नई
हार हार कर जीते प्रेमी जीत जीत कर हारे लोग
इस दुनिया में कौन किसी के दुख का साथी बनता है
डूबे जब मंझधार में कोई देखें बैठे किनारे लोग
ज़ालिम दुनिया वालों की ये रीत भी कितनी ज़ालिम है
प्यार का सब के दिल में घर है प्यार के दुश्मन सारे लोग
दुनिया की मीठी बातों पर ध्यान न देना कभी 'तुफ़ैल'
आँख से ओझल हो जाते हैं बनकर आँख के तारे लोग

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

سُوکھے نیناں نیر بہاتے پریت ریت کے مارے لوگ
جیون کی راہوں میں کیا کیا دیکھے ہیں دکھیارے لوگ
پیار کی راہوں میں دیکھا ہے یہ بھی ہم نے پیار کا رُوپ
جان کے دشمن بن جاتے ہیں اکثر جان سے پیارے لوگ
کوئی بھی اُمید نہ رکھنا اِس بے درد زمانے سے
پھول دکھا کر بھر دیتے ہیں دامن میں انگارے لوگ
اک تنکے کا بھیس بدل کر بہہ جاتی ہے ہر دیوار
روک نہیں سکتے ہیں ہرگز پریت ندی کے دھارے لوگ
پیار کے کھیل کی ریت انوکھی پیار کے کھیل کی چال نئی
ہار ہار کر جیتے پریمی جیت جیت کر ہارے لوگ
اس دُنیا میں کون کسی کے دُکھ کا ساتھی بنتا ہے
ڈوبے جب منجدھار میں کوئی دیکھیں بیٹھ کنارے لوگ
ظالم دُنیا والوں کی یہ ریت بھی کتنی ظالم ہے
پیار کا سب کے دِل میں گھر ہے پیار کے دُشمن سارے لوگ
دُنیا کی میٹھی باتوں پر دھیان نہ دینا کبھی طفیلؔ
آنکھ سے اوجھل ہو جاتے ہیں بن کر آنکھ کے تارے لوگ

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

प्रीत जान का रोग सहेली प्रीत का रोग लगाये कौन
कौन जलाये जल में दीपक आग में फूल खिलाये कौन
पूजा कारन पलक पलक पर जल के मन्दिर कौन सजाये
बिरहा के अंधियारे पथ पर आँसू दीप जलाये कौन
सुन्दर सुन्दर सपन दिखा कर जीवन भर तड़पाते हैं
यह नैनाँ हैं मन के दुश्मन, दुश्मन को समझायें कौन
साँसों में कलियां सी महकें होंठों पर मुस्कायें फूल
अंग अंग से ख़ुश्बू निकले प्यार का भेद छुपाये कौन
देख सके तो मूरख बन्दे मन की आँखें खोल के देख
कौन हँसे तारों में छुपकर फूलों में मुस्काये कौन
प्रेम डगर में जब तक कोई धार न ले राधा का रुप
अपना खोज नहीं मिलता है साँवरिया को पाये कौन
पगले मन काँटों के बन में देख न सपने फूलों के
दुख ही दुख हों जिस दुनिया में सुख की आस लगाये कौन
अंगारों की जय माला है प्यार है इक काँटों की सेज
इक पल की मुस्कान की ख़ातिर रो रो उमर गँवाये कौन
पी रुठे तो सब जग रुठे कोई न पूछे बात 'तुफ़ैल'
कोन सुलगते आँसू पोंछे मन की धीर बंधाये कौन

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

پریت جان کا روگ سہیلی پریت کا روگ لگائے کون
کون جلائے جل میں دیپک آگ میں پھول کھلائے کون
پوجا کارن پلک پلک پر جل کے مندر کون سجائے
برہا کے اندھیارے پتھ پر آنسو دیپ جلائے کون
سُندر سُندر سپن دکھا کر جیون بھر تڑپاتے ہیں
یہ نیناں ہیں من کے دُشمن دشمن کو سمجھائے کون
سانسوں میں کلیاں سی مہکیں ہونٹوں پر مُسکائیں پھول
انگ انگ سے خوشبو نکلے پیار کا بھید چھُپائے کون
دیکھ سکے تو مُورکھ بندے من کی آنکھیں کھول کے دیکھ
کون ہنسے تاروں میں چھُپ کر پھولوں میں مُسکائے کون
پریم ڈگر میں جب تک کوئی دھار نہ لے رادھا کا رُوپ
اپنا کھوج نہیں مِلتا ہے سانوریا کو پائے کون
پگلے من کانٹوں کے بن میں دیکھ نہ سپنے پھولوں کے
دُکھ ہی دُکھ ہوں جس دُنیا میں سُکھ کی آس لگائے کون
انگاروں کی جے مالا ہے پیار ہے اک کانٹوں کی سیج
اک پل کی مُسکان کی خاطر رو رو عمر گنوائے کون
پی رُوٹھے تو سب جگ روٹھے کوئی نہ پوچھے بات طفیل
کون سلگتے آنسو پونچھے من کی دھیر بندھائے کون

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

मैं कुटिया में रहने वाला, तुम वासी हो रंग भवन क़े
नैनों की मिज़राव से देखो, तार न छेड़ों मेरे मन के
इस संसार में रुप की कलियाँ, धन के तराज़ू में तुलती हैं
धनवालों में बट जाते हैं सुन्दर सपने हर निर्धन के
अपनी राह में कितनी ऊँची सोने की दीवार खड़ी है
मैं हूँ बेपर तुम हो बेबस गीत न छेड़ो मधुर मिलन के
मेरे नैनों का उजियारा बन न सकेगी माँग तुम्हारी
तोड़ के ले आऊँ मैं बेशक चाँद सितारे नील गगन के
सोने चाँदी के फूलों से पूजेगा जग रुप तुम्हारा
मेरे जीवन की झोली में ले दे के हैं हार अँसुअन के
मेरे कारन हों न परेशाँ अपनी जुल्फ़ों को समझा लो
मुझ से सब कुछ कह देते हैं झौंके आकर मस्त पवन के
फूल समझ कर शोलों को तुम अपने आँचल में मत डालो
गुलकर दो सब आस की शमयें दीप बुझादो प्रेमगगन के

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

ہَیں کُٹیا میں رہنے والا تُم باسی ہو رنگ بھون کے
نینوں کی مضراب سے دیکھو، تار نہ چھیڑو میرے من کے
اس سنسار میں رُوپ کی کلیاں دھن کے ترازو میں تُلتی ہیں
دھن والوں میں بٹ جاتے ہیں سندر سپنے ہر نرِ دھن کے
اپنی راہ میں کتنی اونچی سونے کی دیوار کھڑی ہے
مَیں ہوں بے پریتم ہو بے بس گیت نہ چھیڑو مدھر ملن کے
میرے نینوں کا اُجیارا بن نہ سکے گی مانگ تمہاری
توڑ کے لے آؤں مَیں بیشک چاند ستارے نیل گگن کے
سونے چاندی کے پھولوں سے پُوجے گا جگ رُوپ تمہارا
میرے جیون کی جھولی میں لے دے کے ہیں ہار انسوئن کے
میرے کارن ہوں نہ پریشاں اپنی زلفوں کو سجھالو
مجھ سے سب کچھ کہدیتے ہیں جھونکے آکر مست پون کے
پھُول سمجھ کر شعلوں کو تم اپنے آنچل میں مت ڈالو
گُل کردو سب آس کی شمعیں دیپ بجھا دو پریم گگن کے

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

दिल में प्रीत बसायी जब से मैंने किसी हरजाई की
कूचे कूचे फैल गयी है बात मेरी रूसवाई की
तारे बरसायें अंगारे किरनें तीर चलाती हैं
नागिन बन कर डस लेती है दिल को रात जुदाई की
जलता हो जंगल में जैसे पेड़ महकते चन्दन का
फूँक रही है ऐसे मुझ को आग मेरी तन्हाई की
जिन की ख़ातिर दुनिया छोड़ी गली गली बदनाम हुये
वोह कहते है हम न सुनेंगे बात किसी सौदाई की
भूले सपने बिसरी यादें आँखों में फिर जाती हैं
सोये दर्द जगा देती है लै सौतन शहनाई की
कौन सुने सिंगार की बातें नैनन बोली समझे कौन
निर्मोही ! बिन तिरे कहानी कौन कहे अंगड़ाई की
तेरे नाम का दीप जलाया मन की सूनी नगरी में
प्यार से मैंने माँग में भर ली धूल तेरी अंगनाई की
शाम के मन में कौन बसा है यह तो शाम ही जाने है
राधा के नैनन में बसी है सूरत शाम कन्हाई की

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

دل میں پریت بسائی جب سے مَیں نے کسی ہرجائی کی
کوچے کوچے پھیل گئی ہے بات مری رسوائی کی

تارے برسائیں انگارے کرنیں تیر چلاتی ہیں
ناگن بن کر ڈس لیتی ہے دِل کو رات جُدائی کی

جلتا ہو جنگل میں جیسے پیڑ مہکتے چندن کا
پھونک رہی ہے ایسے مجھ کو آگ مری تنہائی کی

جن کی خاطر دُنیا چھوڑی گلی گلی بدنام ہوئے
وہ کہتے ہیں ہم نہ سُنیں گے بات کسی سودائی کی

بھُولے سپنے بسری یادیں آنکھوں میں بھر جاتی ہیں
سوئے درد جگا دیتی ہے لَے سوتن شہنائی کی

کون سنے سنگار کی باتیں نینن بولی سمجھے کون
نرموہی! بن ترے کہانی کون کہے انگڑائی کی

تیرے نام کا دیپ جلایا من کی سونی نگری میں
پیار سے مَیں نے مانگ میں بھر لی دھول تری انگنائی کی

شام کے من میں کون بسا ہے یہ تو شام ہی جانے ہے
رادھا کے نینن میں بسی ہے صُورت شام کنہائی کی

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

रैन चाँदनी नदी किनारे नील कँवल के साये हैं
बैठ के चन्दा की नैय्या में, किस के पी घर आये हैं
चाँदनिया बन ठन के उतरी किस के सूने आँगन में
पूजा कारन किस बैरन ने मन के दीप जलाये हैं
एक समय से दर्शन जल की प्यास बसी है नैनों में
बिन सावन कितने ही सावन आँखों ने बरसाये हैं
जिन अँसुअन को लोक लाज ने पीने पर मजबूर किया
उन अँसुअन ने अंग अंग में अंगारे छलकाये हैं
दुखिया दिल ने बुन रखे हैं कितने जाल फ़सानों के
पलकों की छांव में हमने कितने ख़वाब सजाये हैं
दिल को उन से कितना गहरा प्यार है यह मालूम न था
जितना उनको भूलना चाहा उतना ही वोह याद आये हैं
क्या जाने वोह चरन कँवल कब महकें मेरे आँगन में
आशाओं की जोत जगा कर पग पग नैन बिछाये हैं

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

رَین چاندنی ندی کنارے نیل کنول کے سائے ہیں
بیٹھ کے چندا کی نیّا میں کِس کے پی گھر آئے ہیں
"چاندنیا" بن ٹھن کے اتری کِس کے سونے آنگن میں
پوُجا کارن کس بیرن نے من کے دیپ جلائے ہیں
ایک سمے سے درشن جل کی پیاس بسی ہے نینوں میں
بن ساون کتنے ہی ساون آنکھوں نے برسائے ہیں
جن انسوئن کو لوک لاج نے پینے پر مجبور کیا
اُن انسوئن نے انگ انگ میں انگارے چھلکائے ہیں
دُکھیا دِل نے بُن رکھے ہیں کتنے جال فسانوں کے
پلکوں کی چھاؤں میں ہم نے کتنے خواب سجائے ہیں
دل کو ان سے کتنا گہرا پیار رہے یہ معلوم نہ تھا
جتنا اُن کو بھوُلنا چاہا اُتنا ہی وہ یاد آئے ہیں
کیا جانے وہ چرن کنول کب مہکیں میرے آنگن میں
آشاؤں کی جوت جگا کر پگ پگ نین بچھائے ہیں

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

नींद से बोझल रात की पलकें ऊंघ रहे हैं तारे
छम छम बरसें नींद को तरसें नैन मिरे दुखयारे
ओ हरज़ाई प्रीत लगाई किस सौतन के संग
मेरे मन के दुश्मन बन के तुम किस देस सिधारे
प्रीत है मोरी एक चकोरी, चन्दा हाथ न आये
भर भर आहें चाँद की राहें देखे साँझ सकारे
तुम क्या रुठे भाग ही फूटे रुठी है सब दुनिया
टूटे सपने ले कर अपने जाऊँ किस के द्वारे
दुनिया मेरी हुयी अंधेरी राह न सूझे कोई
दे के धोखे उम्मीदों के डूबे आस के तारे
दिन और रतियाँ प्यार की बतियाँ याद आयें तड़पायें
जागते सोते हँसते रोते देखूँ सपन तुम्हारे
चुप चुप रहना कुछ भी न कहना काम है मुझ बिरहन का
भर भर आहें तक तक राहें हारे नैन बिचारे
तुम बिन साजन ज़हर है जीवन साँस कटारी जैसे
फिर भी हाय मौत न आये बिगड़ी कौन सँवारे
प्यार की नैय्या बिना खिवैय्या पार उतरेगी कैसे
हाथ पसारे हैं अंधियारे रह गये दूर किनारे

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

نیند سے بوجھل رات کی پلکیں، اونگھ رہے ہیں تارے
چھم چھم برسیں نیند کو ترسیں، نین مرے دکھیارے
او ہرجائی پریت لگائی کس سوتن کے سنگ
میرے من کے دشمن بن کے تم کس دیس سدھارے

پریت ہے موری ایک چکوری، چندا ہاتھ نہ آئے
بھر بھر آہیں چاند کی راہیں دیکھے سانجھ سکارے
تم کیا روٹھے بھاگ ہی پھوٹے روٹھی ہے سب دنیا
ٹوٹے سپنے لے کر اپنے جاؤں کس کے دوارے

دنیا میری ہوئی اندھیری راہ نہ سوجھے کوئی
دے کے دھوکے امیدوں کے ڈوبے آس کے تارے
دن اور رتیاں پیار کی بتیاں یاد آئیں تڑپائیں
جاگتے سوتے ہنستے روتے دیکھوں سپن تمہارے

چپ چپ رہنا کچھ بھی نہ کہنا کام ہے مجھ برہن کا
بھر بھر آہیں تک تک راہیں ہارے نین بچارے
تم بن ساجن زہر ہے جیون سانس کٹاری جیسے
پھر بھی ہائے موت نہ آئے بگڑی کون سنوارے

پیار کی نیا بناں کھویا پار اترے گی کیسے
ہاتھ پسارے ہیں اندھیارے رہ گئے دور کنارے

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

पिरोये अश्कों के रो रो के हार गोरी ने
तड़प तड़प के गुज़ारी बहार गोरी ने
बिछा के आस की पलकें किसी की राहों में
तमाम उम्र किया इन्तिज़ार गोरी ने
तरस गये हैं हँसी के लिये गुलाब से होंठ
किया था कौन घड़ी जाने प्यार गोरी ने
तरस गयी है हसीं माँग मोतियों के लिये
सिंगार कर दिया किस पर निसार गोरी ने
हसीन फूल सा चेहरा है ख़ोया खोया हुआ
कहाँ लुटा दिया दिल का करार गोरी ने
लगी की आग में जल जल के रुप राख हुआ
ज़ुबाँ तक आने नहीं दी पुकार गोरी ने
न आँसुओं की ज़ुबाँ से भी दिल का भेद कहा
किया न आहों का भी एतबार गोरी ने
बिरह की रात में फूटी न एक भी तो किरन
सजाये पलकों पे तारे हज़ार गोरी ने
गिला किया न किसी से कठोर साजन का
जहाँ के तीर सहे बेशुमार गोरी ने

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

پروئے اشکوں کے رو رو کے ہار گوری نے
تڑپ تڑپ کے گزاری بہار گوری نے
بچھا کے آس کی پلکیں کسی کی راہوں میں
تمام عمر کیا انتظار گوری نے
ترس گئے ہیں ہنسی کے لئے گلاب سے ہونٹ
کیا تھا کون گھڑی جانے پیار گوری نے
ترس گئی ہے حسیں مانگ موتیوں کے لئے
سنگار کر دیا کس پر نثار گوری نے
حسین پھول سا چہرہ ہے کھویا کھویا ہوا
کہاں لٹا دیا دل کا قرار گوری نے
لگی کی آگ میں جل جل کے روپ راکھ ہوا
زباں تک آنے نہیں دی پکار گوری نے
نہ آنسوؤں کی زباں سے بھی دل کا بھید کہا
کیا نہ آہوں کا بھی اعتبار گوری نے
برہ کی رات میں پھوٹی نہ ایک بھی تو کرن
سجائے پلکوں پہ تارے ہزار گوری نے
گلہ کیا نہ کسی سے کٹھور ساجن کا
جہاں کے تیر سہے بے شمار گوری نے

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

आये न लौट कर सजन फूलों की रूत बदल चली
कांटों के रुप में मुझे आयी नज़र कली कली
आहें न कुछ बना सकीं आँसू न काम आ सके
अपने ही दिल की आग में जल गयी मैं जनम जली
देखा है भेस भेस में ढूंढ़ा है देस देस में
तुम न मिले मुझे कहीं छान फिरी गली गली
किस का बसा है मन में प्यार किससे उलझ गये है नैन
तुमने मुझे भुला- दिया तुम ने मेरी ख़बर न ली
आयीं रूतें गयी रूते दिन न फिरे ग़रीब के
दुख की न धूप कम हुयी ग़म की न दोपहर ढली
खो गयी तेरी राह में आस की आख़िरी किरन
नैनों के दीप बुझ चले आस की डोर कट चली
बिरहा की आँधियाँ उठीं नाव भवंर में आ गयी
डूब रहा है दिल मेरा राम ही अब करें भली
कौन कहे पहेलियाँ पूछती हैं सहेलियाँ
पहने हैं काहे गेरूवे राख बदन पे क्यों मली

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

آئے نہ لوٹ کر سجن پھولوں کی رُت بدل چلی
کانٹوں کے روپ میں مجھے آئی نظر کلی کلی

آہیں نہ کچھ بنا سکیں آنسو نہ کام آ سکے
اپنے ہی دل کی آگ میں جل گئی میں جنم جلی

دیکھا ہے بھیس بھیس میں ڈھونڈا ہے دیس دیس میں
تم نہ ملے مجھے کہیں چھان پھری گلی گلی

کس کا بسا ہے من میں پیار کس سے اُلجھ گئے ہیں نین
تُم نے مجھے بھلا دیا، تُم نے مری خبر نہ لی

آئیں رُتیں گئیں رُتیں دِن نہ پھرے غریب کے
دُکھ کی نہ دھوپ کم ہوئی غم کی نہ دوپہر ڈھلی

کھو گئی تیری راہ میں آس کی آخری کرن
نینوں کے دیپ بجھ چلے آس کی ڈور کٹ چلی

برہا کی آندھیاں اُٹھیں ناؤ بھنور میں آ گئی
ڈوب رہا ہے دِل مرا، رام ہی اب کریں بھلی

کون کہے پہیلیاں پوچھتی ہیں سہیلیاں
پہنے ہیں کاہے گیروے راکھ بدن پہ کیوں ملی

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

नहा के आज किया है सिंगार गोरी ने
भरा है नैनों में दुनिया का प्यार गोरी ने
महक रहा है ख़ुशी से गुलाब का चेहरा
लिया बहार को दिल में उतार गोरी ने
जला के जोत मुहब्बत की मन के मन्दिर में
चढ़ाये आशा की कलियों के हार गोरी ने
उतारने के लिये आरती कन्हैया की
लिया है रुप ही राधा का धार गोरी ने
सितारे टाँक लिये हैं तमाम आँचल में
लगायी नैनों में काजल की धार गोरी ने
हसीन मुखड़े से घूंघट उतार कर पल में
ज़मीं पे चाँद लिया है उतार गोरी ने
लगन से प्यार की लौ दे रहा है गोरा बदन
किया है आज अनोखा सिंगार गोरी ने
हवायें रस भरे गीतों में डूब डूब गयीं
कुछ ऐसे छेड़ा है मन का सितार गौरी ने

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

نہا کے آج کیا ہے سنگار گوری نے
بھرا ہے نینوں میں دُنیا کا پیار گوری نے
مہک رہا ہے خوشی سے گلاب کا چہرہ
لیا بہاروں کو دل میں اتار گوری نے
جلا کے جوت محبت کی من کے مندر میں
چڑھائے آشا کی کلیوں کے ہار گوری نے
اتارنے کے لئے آرتی کنہیا کی
لیا ہے روپ ہی رادھا کا دھار گوری نے
ستارے ٹانک لئے ہیں تمام آنچل میں
لگائی نینوں میں کاجل کی دھار گوری نے
حسین مکھڑے سے گھونگھٹ اتار کر پل میں
زمیں پہ چاند لیا ہے اتار گوری نے
لگن سے پیار کی لو دے رہا ہے گورا بدن
کیا ہے آج انوکھا سنگار گوری نے
ہوائیں رس بھرے گیتوں میں ڈوب ڈوب گئیں
کچھ ایسے چھیڑا ہے من کا ستار گوری نے

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

धीरे धीरे तन को फूंके दुख में डूबे तन की आग
पानी बन बन कर पलकों पर लहराती है मन की आग
आग कहां है कहां है शोला दिल की लगी का देखो रंग
टीका बन कर सुलग रही है माथे पर चन्दन की आग
मन में मन की आशाओं का ऐसे जले ख़मोश अलाव
कुंज कुंज तक फैल गयी हो जैसे बन में बन की आग
फागुन की महकी पुरवाई दिल में गहरे डाले घाव
बरखा बन कर फूंक रही है बिरहन को सावन की आग
कोई आह का शोला समझा कोई समझा आँसू दीप
नैनन को पथरा गयी आख़िर दुखियारे नैनन की आग
हम ने समझा हमीं दुखी हैं सुख में डूबा है संसार
ग़ौर किया तो घर घर पायी दुखियारे जीवन की आग
जलते जलते साँस की डोरी आख़िर को जल जायेगी
इस डोरी में फैल रही है जीवन के बन्धन की आग

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

دھیرے دھیرے تن کو پھونکے دُکھ میں ڈوبے تن کی آگ
پانی بن بن کر پلکوں پر لہراتی ہے من کی آگ
آگ کہاں ہے کہاں ہے شعلہ دل کی لگی کا دیکھو رنگ
ٹیکہ بن کر سُلگ رہی ہے ماتھے پر چندن کی آگ
من میں من کی آشاؤں کا ایسے جلے خموش الاؤ
کنج کنج تک پھیل گئی ہو جیسے بن میں بن کی آگ
پھاگن کی مہکی پروائی دل میں گہرے ڈالے گھاؤ
برکھا بن کر پھونک رہی ہے برہن کو ساون کی آگ
کوئی آہ کا شعلہ سمجھا کوئی سمجھا آنسو دیپ
نینن کو بھڑکا گئی آخر دُکھیارے نینن کی آگ
ہم نے سمجھا ہمیں دُکھی ہیں سُکھ میں ڈوبا ہے سنسار
غور کیا تو گھر گھر پائی دُکھیارے جیون کی آگ
جلتے جلتے سانس کی ڈوری آخر کو جل جائے گی
اس ڈوری میں پھیل رہی ہے جیون کے بندھن کی آگ

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

कौन अलबीला रमता जोगी रुप नगर में आया है
दर्शन जल की प्यास बढ़ी है जिस ने दर्शन पाया है
रुप अनूप है उसका आली मतवाले मतवाले नैन
चन्दा एसा मुखड़ा उस का राम ने आप बनाया है
अंग अंग से मस्ती बरसे नैनों से रस की बूँदे
किस बैरन ने जोबन रूत में उसका चैन उड़ाया है
घूँघट घूँघट चन्दा चमके आँगन आँगन फूल खिले
रुप नगर की जिन गलियों में उस ने अलख जगाया है
कुंज कुंज में उसकी बातें पनघट पनघट उसकी याद
रुप नगर में उस जोगी के रुप ने रंग जमाया है
इक इक मन में हूक उठाए उसकी बंसी का संगीत
किस सजनी का साजन है वोह किस माता का जाया है
कोई न समझे कोई न जाने उसके दुखिया मन का रोग
ऐसा लगता है माटी में उसने लाल गंवाया है
कोई न पूछे उस जोगी से जोगी मन की बात बता
किस के कारन जोग लिया है क्यों जग को ठुकराया है

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

کون البیلا رمتا جوگی روپ نگر میں آیا ہے
درشن جل کی پیاس بڑھی ہے جس نے درشن پایا ہے
رُوپ انوپ ہے اُس کا آلی متوالے متوالے نین
چندا ایسا مکھڑا اُس کا رام نے آپ بنایا ہے
انگ انگ سے مستی برسے نینوں سے رس کی بوندیں
کس بیرن نے جوبن رت میں اُس کا چین اُڑایا ہے
گھونگھٹ گھونگھٹ چندا چمکے آنگن آنگن پھول کھلے
رُوپ نگر کی جن گلیوں میں اس نے الکھ جگایا ہے
کنج کنج میں اس کی باتیں پنگھٹ پنگھٹ اُس کی یاد
روپ نگر میں اس جوگی کے رُوپ نے رنگ جمایا ہے
اک اک من میں ہُوک اُٹھائے اس کی بنسی کا سنگیت
کس سجنی کا ساجن ہے وہ کس ماتا کا جایا ہے
کوئی نہ سمجھے کوئی نہ جانے اس کے دُکھیا من کا روگ
ایسا لگتا ہے ماٹی میں اس نے لعل گنوایا ہے
کوئی نہ پوچھے اس جوگی سے جوگی من کی بات بتا
کس کے کارن جوگ لیا ہے کیوں جگ کو ٹھکرایا ہے

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

आग में बिरहा की यूं बिरहन जले
आँसुओं की आँच से दामन जले
आग चाहत की भी कैसी आग है
रोशनी चेहरे पे हो और मन जले
प्यार करके यूँ चले इक कामनी
जोग लेकर जैसे बैरागन जले
कामनाऐं भस्म हों आशाऐं राख
मन जले तो मन का हर बन्धन जले
नाम रखे क्या कोई उस आग का
रात दिन जिस आग में जीवन जले
देखकर बेरुप मेरे रुप को
थाल में सिंदूर और चन्दन जले
वोह लगाकर चल दिये बिरहा की आग
अब किसी का तन जले या मन जले

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

आग बिरहा की अनोखी आग है
चाँदनी की छाँव में आँगन जले
लाज रख ली है पिया ने प्यार की
लाख जलती है कोई बैरन जले
बन के दीपक और कभी बनकर पतंग
बाँवरे मन हम तेरे कारन जले
सामने आया है किस्मत का लिखा
अब तो मुखड़ा देखकर दर्पण जले
जलने वाला ही समझता है *'तुफ़ैल'*
कौन किस के ग़म में किस कारन जले

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

آگ برہا کی انوکھی آگ ہے
چاندنی کی چھاؤں میں آنگن جلے
لاج رکھ لی ہے پیا نے پیار کی
لاکھ جلتی ہے کوئی بیرن جلے
بن کے دیپک اور کبھی بن کر پتنگ
باورے من ہم ترے کارن جلے
سامنے آیا ہے قسمت کا لکھا
اب تو مکھڑا دیکھ کر درپن جلے
جلنے والا ہی سمجھتا ہے طفیلؔ
کون کس کے غم میں کس کارن جلے

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

آگ میں برہا کی یوں برہن جلے
آنسوؤں کی آنچ سے دامن جلے
آگ چاہت کی بھی کیسی آگ ہے
روشنی چہرے پہ ہو اور من جلے
پیار کر کے یوں چلے اِک کامنی
جوگ لے کر جیسے بیراگن جلے
کامنائیں بھسم ہوں آشائیں راکھ
من جلے تو من کا ہر بندھن جلے
نام رکھے کیا کوئی اُس آگ کا
رات دِن جس آگ میں جیون جلے
دیکھ کر بے رُوپ مدھکر روپ کو
تھال میں سیندھور اور چندن جلے
وہ لگا کر چل دیئے برہا کی آگ
اب کسی کا تن جلے یا من جلے

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

वोह नैनाँ अमृतसागर हैं वोह नैनाँ बड़े अनीले हैं
जो इन नैनों से बान चलें वोह बान बहुत ज़हरीले हैं।
नैनों में नैन समोये हैं हम जिन नैनों में खोये हैं
वोह नैन बड़े मधमाते हैं वोह नैनाँ बड़े नशीले हैं
रंग उनका कुन्दन रुप सजल नैन उनके जैसे नील कंवल
देखे तो चन्दा शरमाये वोह सैंय्याँ बड़े सजीले हैं
वोह यूँ आते हैं दर्पन में चाँद उतरे जैसे आंगन में
मैं क्या बतलाऊँ तोहे सखी वोह किस दर्जा शर्मीले है
उस रंग में डूबे नैन सखी ध्यान उनका है दिन रैन सखी
जो नैन खुले देखूँ दिन भर वोह सपने रंग रंगीले हैं
वोह ध्यानमेंदर्स दिखाते हैं वोह सपनों में मिल जाते हैं
ए आली पी से मिलने के सौ हीले लाख वसीले हैं
पग पग पर ऊँचे पर्वत हैं पग पग पर गहरे अंधियारे
ऐ राही रुप नगरिया के सब रस्ते ही पथरीले हैं
मन चुपके चुपके हरते हैं लाखों में घायल करते हैं
पलकों की ओट में रहते हैं वोह नैन बड़े शरमीले हैं

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

وہ نیناں امرت ساگر ہیں وہ نیناں بڑے انیلے ہیں
جو ان نینوں سے بان چلیں وہ بان بہت زہریلے ہیں
نینوں میں نین سموئے ہیں ہم جن نینوں میں کھوئے ہیں
وہ نین بڑے مدھ ماتے ہیں وہ نیناں بڑے نشیلے ہیں
رنگ اِن کا کندن روپ سجل نین اُن کے جیسے نیل کنول
دیکھے تو چندا شرمائے وہ سیّاں بڑے سجیلے ہیں
وہ یوں آتے ہیں درپن میں چاند اترے جیسے آنگن میں
مَیں کیا بتلاؤں تو ہے سکھی وہ کس درجہ شرمیلے ہیں
اس رنگ میں ڈوبے نین سکھی دھیان ان کا ہے دِن رین سکھی
جو ''نین کھُلے'' دیکھوں دِن بھر وہ سپنے رنگ رنگیلے ہیں
وہ دھیان میں درس دکھاتے ہیں وہ سپنوں میں مِل جاتے ہیں
اے آلی، پی سے ملنے کے سَو حیلے لاکھ وسیلے ہیں
پگ پگ پر اونچے پربت ہیں پگ پگ پر گہرے اندھیارے
اے راہی رُوپ نگریا کے سب رستے ہی پتھریلے ہیں
مَن چُپکے چپکے ہرتے ہیں لاکھوں میں گھائل کرتے ہیں
پلکوں کی اوٹ میں رہتے ہیں وہ نین بڑے شرمیلے ہیں

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

प्रीतम से इक बार सखी
नैन हुये थे चार सखी
मुस्काना तक भूल गयी
मैं अलबीली नार सखी
खोज खोज कर हार गयी
मिला न पी का द्वार सखी
इक बैरी से कर बैठी
नैनों का व्यापार सखी
पी ने ऐसी चाल चली
जीवन बैठी हार सखी
डूब के पी के नैनों में
भूल गयी संसार सखी
प्रीत की कोमल माला में
काँटों के हैं तार सखी
जीवन तो इक नैय्या है
नैय्या बिन पतवार सखी
प्यार का जीवन जोखम है
सोच के करना प्यार सखी

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

پریتم سے اک بار سکھی
نین ہوئے تھے چار سکھی
مسکانا تک بھول گئی
میں البیلی نار سکھی
کھوج کھوج کر ہار گئی
ملا نہ پی کا دوار سکھی
اک بیری سے کر بیٹھی
نینوں کا بیوپار سکھی
پی نے ایسی چال چلی
جیون بیٹھی ہار سکھی
ڈوب کے پی کے نینوں میں
بھول گئی سنسار سکھی
پریت کی کومل مالا میں
کانٹوں کے ہیں تار سکھی
جیون تو اک نیّا ہے
نیّا بن پتوار سکھی
پیار کا جیون جوکھم ہے
سوچ کے کرنا پیار سکھی

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

तुम हो मेरे मन की शोभा तुम हो मेरे मन की लाज
जिन नैनों में आन बसे हो रखना उन नैनन की लाज
एक साँवरी भई बाँवरी ऐसे लागा प्रेम का रोग
कुल की मर्यादा ठुकराई भूल गयी आँगन की लाज
प्रेम का कजरा है नैनों में प्रीत का माँग में है सिंदूर
पिया तुम्हारे बस में है अब प्यार के इस बंधन की लाज
मेरी धीर बंधाने साजन आओ न अपने देस मगर
दुनिया ही के कारन आओ रख लो इस बिरहन की लाज
ज्ञान है जिनको वोह तो जग में एक समान समझते हैं
धनवाले की आन हो सजनी या हो इक निर्धन की लाज

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

تم ہو میرے من کی شوبھا تم ہو میرے من کی لاج
جن نینوں میں آن بسے ہو رکھنا ان نینن کی لاج
ایک سانوری بھئی باوری ایسے لاگا پریم کا روگ
کل کی مریادا ٹھکرائی بھول گئی آنگن کی لاج
پریم کا کجرا ہے نینوں میں پریت کا مانگ میں ہے سیندھور
پیا تمہارے بس میں ہے اب پیار کے اس بندھن کی لاج
میری دھیر بندھانے ساجن آؤ نہ اپنے دیس مگر
دنیا ہی کے کارن آؤ رکھ لو اس برہن کی لاج
گیان ہے جن کو وہ تو جگ میں ایک سمان سمجھتے ہیں
دھن والے کی آن ہو سجنی یا ہو اِک نردھن کی لاج

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

कितना है निदर्यी कठोर
देख सखी री साजन मोर
नगरी नगरी देस विदेस
खोज खोज हारी चहूँ ओर
पी और मन का एक सुभाव
पी और मन पर किस का ज़ोर
प्रेम की रीत पतंग से पूछ
भँवरा तो है रस का चोर
प्रेम की माला का सिंगार
मन के मनके साँस की डोर
पी दर्शन है जीवन जोत
चाँद के रुप का नाम चकोर
मन के बृन्दावन में ढ़ंढ
मिल जायेंगे नन्द किशोर
क्या क्या आँसू दीप जलाये
हुयी न बिरहा रैन की भोर
नैन खुले तो ज्ञान हुआ
मन बसिया है मन का चोर

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

کتنا ہے نردئی کٹھور
دیکھ سکھی ری ساجن مور
نگری نگری دیس بدیس
کھوج کھوج ہاری چہوں اور
پی اور من کا ایک سبھاؤ
پی اور من پر کس کا زور
پریم کی ریت پتنگ سے پوچھ
بھنورا تو ہے رس کا چور
پریم کی مالا کا سنگھار
من کے منکے سانس کی ڈور
پی درشن ہے جیون جوت
چاند کے روپ کا نام چکور
من کے بندرابن میں ڈھونڈ
مل جائیں گے نند کشور
کیا کیا آنسو دیپ جلائے
ہوئی نہ برہا رین کی بھور
نین کھلے تو گیان ہوا
من بسیا ہے من کا چور

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

पी संग मिल कर आए नयन
काजर बिन कजराये नयन
नैनन बोली सुनते ही
झूमे और लहराये नयन
लाज के मारे देख सखी
मुझ से भी शरमाये नयन
मन में प्रेम की जोत जली
नैनन बीच समाये नयन
पी बिन कुछ सूझत नाँहिं
जब से राम मिलाये नयन
हाय रे जुल्मी सैंय्या के
अलसाए अलसाए नयन
कह दिया बैरी मन का भेद
भूल नहीं शरमाये नयन
नाम न जानूँ धाम सखी
जाने किस भरमाये नयन

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

پی سنگ مل کر آئے نین
کاجر بِن کجرائے نین
نینن بولی سنتے ہی
جھومے اور لہرائے نین
لاج کے مارے دیکھ سکھی
مجھ سے بھی شرمائے نین
من میں پریم کی جوت جلی
نینن بیچ سمائے نین
پی بن کچھ نہ سوجھت ناہیں
جب سے رام ملائے نین
ہائے رے جلمی سیاں کے
السائے السائے نین
کہہ دیا بیری من کا بھید
مول نہیں شرمائے نین
نام نہ جانوں دھام سکھی
جانے کس بھرمائے نین

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

काम जिसका दिलों की चोरी है
ध्यान में एक ही तो गोरी है
चाँद से भी है उस का रुप सजल
चाँदनी रात से भी गोरी है
रंग गालों पे है गुलाबों का
मध भरी आँखों की कटोरी है
रह के धरती पे प्रीत चन्दा से
किस कदर बाँवरी चकोरी है
आँख में बस के आखँ से ओझल
येह भी साजन की सीना ज़ोरी है
दर्द भरता है उसके सुर में कौन
बाँसुरी बाँस ही की पोरी है
मेरे बस में नहीं मिरा जीवन
पी के हाथों में मन की डोरी है
नैन करते हैं मिल के रखवाली
मन है क्या रुप की तिजोरी है
ज़िन्दगी आँसुओं की है माला
नर्म साँसों की जिस में डोरी है

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

کام جس کا دِلوں کی چوری ہے
دھیان میں ایک ہی تو گوری ہے
چاند سے بھی ہے اس کا رُوپ سجل
چاندنی رات سے بھی گوری ہے
رنگ گالوں پہ ہے گلابوں کا
مدھ بھری آنکھوں کی کٹوری ہے
رہ کے دھرتی پہ پریت چندا سے
کس قدر باوری چکوری ہے
آنکھ میں بس کے آنکھ سے اوجھل
یہ بھی ساجن کی سینہ زوری ہے
درد بھرتا ہے اُس کے سُر میں کون
بانسری بانس ہی کی پوری ہے
میرے بس میں نہیں مرا جیون
پی کے ہاتھوں میں من کی ڈوری ہے
نین کرتے ہیں مل کے رکھوالی
من ہے کیا رُوپ کی تجوری ہے
زندگی آنسوؤں کی ہے مالا
نرم سانسوں کی جس میں ڈوری ہے

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

चाँदनिया है रुप की देवी चन्द्रमा है प्रेम अवतार
सदियाँ बन बनकर जुग बीते अमर है इन दोनों का प्यार
जोत में जोत समाई ऐसे रंग एक है एक है रुप
जाने कौन सी शुभ घड़ियों में नैन हुये दोनों के चार
प्रीत रीत की सच्चाई को मन की आँखे खोल के देख
चंद्रमा और चाँदनिया की नैय्या तैरे बिन पतवार
नील गगन मंडल बन जाये काहकशाँ बन जाये सेज
चाँदनिया जब पूजा कारन खोले रंग भवन के द्वार
करके रुप सिंगार सखी जब दिन के गिरवा लागे रैन
चाँद का मन बहलाये चँदनिया छेड़ के मन वीना के तार
चाँद के मन में रहे चँदनिया चाँदनिया के मन में चाँद
मधुर मिलन हो तो ऐसा हो प्यार हो तो ऐसा हो प्यार
चाँदनिया की चुनरी ओढूँ टाँकूं काहकशाँ के फूल
चाँद के रुप में आयें सजनवा तन मन दूँ चरनन परवार

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

چاندنیا ہے رُوپ کی دیوی چندرماں ہے پریم اوتار
صدیاں بن بن کر جگ بیتے امر ہے ان دونوں کا پیار
جوت میں جوت سمائی ایسے رنگ ایک ہے، ایک ہے، روپ
جانے کونسی شبھ گھڑیوں میں نین ہوئے دونوں کے چار
پریت ریت کی سچائی کو من کی آنکھیں کھول کے دیکھ
چندرماں اور چاندنیا کی نیا تیرے بن پتوار
نیل گگن منڈل بن جائے کاہکشاں بن جائے سیج
چاندنیا جب پُوجا کارن کھولے رنگ بھون کے دوار
کر کے روپ سنگار سکھی جب دن کے گرد لاگے رین
چاند کا من بہلائے چندنیا چھیڑ کے من وینا کے تار
چاند کے من میں رہے چندنیا چاندنیا کے من میں چاند
مدھر ملن ہو تو ایسا ہو! پیار ہو تو ایسا ہو پیار
چاندنیا کی چنری اوڑھوں ٹانکوں کاہکشاں کے پھول
چاند کے رُوپ میں آئیں سجنوا تن من دوں چرنن پر وار

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

छोड़ कर चल दिया है बाला पन
रस में डूबा है कामनी का बदन
रुप के बोझ से कमर बल खाये
हुआ मुश्किल संभालना जोबन
रंग में चाँदनी समोई हुयी
रुप में चाँद रात की सी फबन
गोरे मुखड़े पे लट अरे तौबा
जैसे लहराये चाँद पर नागन
गाल जैसे गुलाब के दो फूल
होंठ इस तरह जैसे लाले यमन
देख कर मस्त नैन गोरी के
चौकड़ी भूल भूल जायें हिरन
जिस्म है या महक बहारों की
चाल है या है मस्त मस्त पवन
जिस तरफ जाये रोशनी हो जाये
कामनी है के चाँद की है किरन

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

बस गया अंग अंग मस्ती में
मन की वीना पे छिड़ गया एमन
रस में डूबे हैं ऐसे नैन कंवल
होश में तन है ओर न बस में है मन
रुप ही रुप बन गया संसार
प्यार ही प्यार बन गया है बदन
सादगी है बनाव से बढ़ कर
है कयामत सिंगार बिन जोबन
आस के दीप हैं के: नैन *'तुफ़ैल'*
नैन की जोत है के: प्रेम लगन

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

بس گیا انگ انگ مستی میں
مَن کی وینا پہ چھڑ گیا ایمن
رس میں ڈُوبے ہیں ایسے نین کنول
ہوش میں تن ہے اور نہ بس میں ہے مَن
رُوپ ہی رُوپ بن گیا سنسار
پیار ہی پیار بن گیا ہے بدن
سادگی ہے بناو سے بڑھ کر
ہے قیامت سنگار بِن جوبن
آس کے دیپ ہیں کہ نین طفیلؔ
نین کی جوت ہے کہ پریم لگن

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

چھوڑ کر چل دیا ہے بالاپن
رس میں ڈوبا ہے کامنی کا بدن
روپ کے بوجھ سے کمر بل کھائے
ہوا مشکل سنبھالنا جوبن
رنگ میں چاندنی سموئی ہوئی
روپ میں چاندرات کی سی پھبن
گورے مکھڑے پہ لٹ ارے توبہ
جیسے لہرائے چاند پر ناگن
گال جیسے گلاب کے دو پھول
ہونٹ اس طرح جیسے لعلِ یمن
دیکھ کر مست نین گوری کے
چوکڑی بھول بھول جائیں ہرن
جسم ہے یا مہک بہاروں کی
چال ہے یا ہے مست مست پون
جس طرف جائے روشنی ہو جائے
کامنی ہے کہ چاند کی ہے کرن

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

किस ने जोग की जोत जगाई जोगनिया
काहे अंग भभूत रमाई जोगनिया
भगुवीं चोली है और भगुवीं सारी है
किस ने मन में आग लगाई जोगनिया
किस बैरी ने फूँक दिये संजोग तिरे
कौन है वोह ज़ालिम हरजाई जोगनिया
तजकर अपना देसचली परदेस की ओर
बात तिरे मन में क्या आई जोगनिया
दया न आई अपने नैन कटोरों पर
अंसुअन मदिरा क्यों छलकाई जोगनिया
रंग उड़ा है काहे फूल से चेहरे का
केसर क्यारी क्यों मुरझाई जोगनिया
सास ससुर ने दुख कोई पहुँचाया है
ठेस ननद ने या पहुँचाई जोगनिया
खोल ज़रा लब अपने मुंह से कुछ तो बोल
काहे चुप की मोहर लगाई जोगनिया
किस का है आदर्श निगाहों में तेरी
सहजू है या मीराबाई जोगनिया
मेरा सहजू है तो जोग मुबारक हो
मिल जायेंगें कृष्न कन्हाई जोगनिया

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

کس نے جوگ کی جوت جگائی جوگنیا
کاہے انگ بھبوت رمائی جوگنیا
بھگویں چولی ہے اور بھگویں ساری ہے
کس نے من میں آگ لگائی جوگنیا
کس بیری نے پھونک دیئے سنجوگ ترے
کون ہے وہ ظالم ہرجائی جوگنیا
تج کر اپنا دیس چلی پردیس کی اور
بات ترے من میں کیا آئی جوگنیا
دیا نہ آئی اپنے نین کٹوروں پر
انسوئن مدھرا کیوں چھلکائی جوگنیا
رنگ اڑا ہے کاہے پھول سے چہرے کا
کیسر کیاری کیوں مرجھائی جوگنیا
ساس سسر نے دکھ کوئی پہنچایا ہے
ٹھیس نند نے یا پہنچائی جوگنیا
کھول ذرا لب اپنے منہ سے کچھ تو بول
کاہے چپ کی مہر لگائی جوگنیا
کس کا ہے آدرش نگاہوں میں تیری
سمجھو ہے یا میرا بائی جوگنیا
میرا سمجھو ہے تو جوگ مبارک ہو
مل جائیں گے کرشن کنھائی جوگنیا

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

मनमोहन को पाना है तो अपने मन से प्रीत करो
राधा जी का रुप बदल कर बृन्दावन से प्रीत करो
ज्ञान के पंख लगा कर पहुंचो साँवरिया के मन्दिर तक
चन्द्रमा की जोत जगाओ नील गगन से प्रीत करो
जो बिरहा की काली काली रैन को उजियारा कर दें
पलकों पर वोह दीप जलाओ इन अंसुअन से प्रीत करो
जिन चरनों की धूल के कारन धरती और आकाश बने
उन चरनन से ध्यान लगाओ उन चरनन से प्रीत करो
इक का मोहन मन्दिर में है इक का मौला मस्जिद में
जिस साजन को सब जग चाहे उस साजन से प्रीत करो
धनवालों से प्रीत लगा कर जन्म अकारत जायेगा
जीवन सफल बनाना है तो तुम निर्धन से प्रीत करो
किस दुविधा में दिन कटते हैं किस विपता में गुज़रे रैन
घायल मन में हरि बसता है घायल मन से प्रीत करो
ठंडी आहें जिन होठों पर उन होंठों की बात सुनो
अंसुअन से जो नैन भरे हों उन नैनन से प्रीत करो
जान अगर जाती है जाये प्रेम का बन्धन किहूं न टूटे
इस बन्धन पर जान लुटा दो इस बन्धन से प्रीत करो
तेरा ही मन मन्दिर तो है सैंय्या जी का रंग भवन
करना है तो प्रीतम के इस रंग भवन से प्रीत करो

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

من موہن کو پانا ہے تو اپنے من سے پریت کرو
رادھا جی کا روپ بدل کر بندرابن سے پریت کرو
گیان کے پنکھ لگا کر پہنچو ساںوریا کے مندر تک
چندرماں کی جوت جگاؤ نیل گگن سے پریت کرو
جو برہا کی کالی کالی رین کو اُجیارا کر دیں
پلکوں پر وہ دیپ جلاؤ ان انسوئن سے پریت کرو
جن چرنوں کی دھول کے کارن دھرتی اور آکاش بنے
اُن چرنن سے دھیان لگاؤ اُن چرنن سے پریت کرو
اِک کا موہن مندر میں ہے اِک کا مولا مسجد میں ہے
جس ساجن کو سب جگ چاہے اس ساجن سے پریت کرو
دھن والوں سے پریت لگا کر جنم اکارت جائے گا
جیون سپھل بنانا ہے تو تم نردھن سے پریت کرو
کس دُبدا میں دن کٹتے ہیں کس بپتا میں گزرے رَین
گھائل من میں ہر بستا ہے گھائل من سے پریت کرو
ٹھنڈی آہیں جن ہونٹوں پر اُن ہونٹوں کی بات سنو
انسوئن سے جو نین بھرے ہوں اُن نینن سے پریت کرو
جان اگر جاتی ہے جائے پریم کا بندھن کبھوں نہ ٹوٹے
اس بندھن پر جان لٹا دو اس بندھن سے پریت کرو
تیرا ہی من مندر تو ہے سیّاں جی کا رنگ بھون
کرنا ہے تو پریتم کے اس رنگ بھون سے پریت کرو

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

मन मन्दिर में प्यार की निर्मल जोत जलाये बैठे हैं
नैन बाँवरे पी दर्शन की आस लगाये बैठे हैं
चन्दा के उजियारे रथ में जाने पी कब आयेंगे
बिरहा के अंधियारे पथ पर नैन बिछाये बैठे हैं
नील गगन के रंग भवन में है अपने पीतम का वास
हम धरती पर आशाओं की सेज सजाये बैठे हैं
सांसों के कोमल तारों में फूल पिरो कर अँसुअन के
साजन की पूजा के कारन हार बनाये बैठे हैं
क्या जाने क्यों वोह निर्मोही 'याद हमारी भूल गया
जिसके कारन हम तन मन की सुध बिसराये बैठे हैं
सारी दुनिया की रूसवाई भर के अपने दामन में
प्रेम की ठोकर खाकर हम खुद को ठुकराये बैठे हैं
जिन नैनों में प्रेम की मदिरा रस बन कर लहराती है
उन नैनों में खोकर अपना आप भुलाये बैठे हैं
ध्यान महल के खुल जाने से रुप महल खुल जाता है
ऐसा लगता है साजनवा सामने आये बैठे हैं
बिरहन को नींद आये कैसे सूना देश सुहाये कैसे
मन में बसने वाले ही परदेस बसाये बैठे हैं

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

من مندر میں پیار کی نرمل جوت جلائے بیٹھے ہیں
نین باورے پی درشن کی آس لگائے بیٹھے ہیں
چندا کے اُجیارے رتھ میں جانے پی کب آئیں گے
برہا کے اندھیارے پتھ پر نین بچھائے بیٹھے ہیں
نیل گگن کے رنگ بھون میں ہے اپنے پریتم کا باس
ہم دھرتی پر آشاؤں کی سیج سجائے بیٹھے ہیں
سانسوں کے کومل تاروں میں پھول پرو کر انسوئن کے
ساجن کی پوجا کے کارن ہار بنائے بیٹھے ہیں
کیا جانے کیوں وہ نرموہی یاد ہماری بھول گیا
جس کے کارن ہم تن من کی سُدھ بسرائے بیٹھے ہیں
ساری دُنیا کی رسوائی بھر کے اپنے دامن میں
پریم کی ٹھوکر کھا کر ہم خود کو ٹھکرائے بیٹھے ہیں
جن نینوں میں پریم کی مدھرا رس بن کر لہراتی ہے
ان نینوں میں کھو کر اپنا آپ بھلائے بیٹھے ہیں
دھیان محل کے کھل جانے سے رُوپ محل کھل جاتا ہے
ایسے لگتا ہے ساجنوا سامنے آئے بیٹھے ہیں
برہن کو نیند آئے کیسے سونا دیس سہائے کیسے
من میں بسنے والے ہی پردیس بسائے بیٹھے ہیں

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

दूर कहीं परदेस में जब से मेरा साजन रहता है
सावन रूत के बाद भी मेरी आँख में सावन रहता है
ए घंघोर घटाओं बरसो सौतन ही की दुनिया में
दूर देश में मेरा साजन जिसके कारन रहता है
सब के बालम बरखा रूत में लौट के घर आ जाते हैं
झूलों की रूत में भी मेरा सूना आँगन रहता है
कितने सावन और लिखा है रोना मेरी किस्मत में
साँसों का आहों से देखें कब तक बन्धन रहता है
तकते तकते बाट पिया की पत्थर बन गये नैन मिरे
आस के दीप जलाये फिर भी दुखियारा मन रहता है

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

دور کہیں پردیس میں جب سے میرا ساجن رہتا ہے
ساون رُت کے بعد بھی میری آنکھ میں ساون رہتا ہے
اے گھنگھور گھٹاؤ برسو، سوتن ہی کی دُنیا میں
دُور دیس میں میرا ساجن جس کے کارن رہتا ہے
سب کے بالم برکھا رُت میں لَوٹ کے گھر آجاتے ہیں
جھولوں کی رُت میں بھی میرا سُونا آنگن رہتا ہے
کتنے ساون اور لِکھا ہے رونا میری قسمت میں
سانسوں کا آہوں سے دیکھیں کب تک بندھن رہتا ہے
تکتے تکتے باٹ پیا کی پتھر بن گئے نین مرے
آس کے دیپ جلائے پھر بھی دُکھیارا مَن رہتا ہے

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

दीप की लौ पर जल कर तूने सारी रैन रूलाया है
सोच ज़रा नादान पतंगे हाथ तिरे क्या आया है
अपनी आग में जलकर हमने अपना तन मन फूंक लिया
सूखे नैनाँ नीर बहाकर पी का भेद छुपाया है
तू है धरती चाँद गगन है कौन चकोरी को समझाये
कौन सी आस पे तू ने पगली चाँद से नेहाँ लगाया है
रोते रोते जीवन बीता मन से रुठा मन का चैन
बैरी जग के हाथों हमने प्रीत का यह फल पाया है
दुख भी तेरी देन है दाता दर्द भी है तेरा ही दान
प्यार से प्यार किया है हमने दर्द को भी अपनाया है
इस कुटनी के रुप का जादू चल न सका दिलवालों पर
दिलवालों ने इस दुनिया को पग पग पर ठुकराया है
कोई सुख की आस नहीं है जिस इनसाँ को इनसाँ से
उस इन्सान का जीवन तो इक सूखे पेड़ की छाया है

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

دیپ کی لَو پر جَل کر تو نے ساری رَین رُلایا ہے
سوچ ذرا نادان پتنگے ہاتھ ترے کیا آیا ہے
اپنی آگ میں جل کر ہم نے اپنا تن من پھونک لیا
سوکھے نیناں نیر بہا کر پی کا بھید چھُپایا ہے
تو ہے دھرتی چاند گگن ہے کون چکوری کو سمجھائے
کونسی آس پہ تو نے پگلی چاند سے نیہاں لگایا ہے
روتے روتے جیون بیتا من سے رُوٹھا من کا چین
بَیری جگ کے ہاتھوں ہم نے پریت کا یہ پھل پایا ہے
دُکھ بھی تیری دَین ہے داتا درد بھی ہے تیرا ہی دان
پیار سے پیار کیا ہے ہم نے درد کو بھی اپنایا ہے
اس کٹنی کے رُوپ کا جادو چل نہ سکا دِل والوں پر
دِل والوں نے اس دُنیا کو یگ یگ پر ٹھکرایا ہے
کوئی سُکھ کی آس نہیں ہے جس انسان کو انساں سے
اُس انسان کا جیون تو اِک سُوکھے پیڑ کی چھایا ہے

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

अम्बर के नीले सागर में रोशनियों की पड़े फुहार
रोये और पिरोये बिरहन आँसुअन के उजियारे हार
जल बिन सोना ताल न भाये फल बिन उजड़ा लागे पेड़
गोद में जिस की बाल न खेले काहे की वोह सुन्दर नार
हर इक रैन को कब लगते हैं पूनम रैन के सुन्दर भाग
हर राधा को कब मिलता है मुरली मनोहर कृश्न मुरार
कैसा सावन कैसा फागुन कैसे झूले कैसे गीत
रुठ गया हो जिस नारी से जोबन रूत में उसका प्यार
प्यार ही आली हीरा मन है प्यारी आशाओं का ताज
प्यार ही मेरे रुप की शोभा प्यार ही मेरा चन्दन हार
नाम नहीं है जिसका कोई मन को लागो ऐसा रोग
नैनों की थाली में मोती मन की थाली में अंगार
ध्यान के सागर में लहरायें सोचों के तूफ़ान
सौंप गये हैं जब से सैंय्या मेरी नैंय्या को मंझधार

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

امبر کے نیلے ساگر میں روشنیوں کی پڑے پھوار
روئے اور پروئے برہن آنسوئن کے اُجیارے ہار
جل بن سُوناتال نہ بھائے پھل بن اُجڑا لاگے پیڑ
گود میں جس کی بال نہ کھیلے کا ہے کی وہ سندر نار
ہر اِک رَین کو کب لگتے ہیں پُونم رین کے سُندر بھاگ
ہر رادھا کو کب مِلتا ہے مُرلی منوہر کرشن مرار
کیسا ساون کیسا پھاگن کیسے جھُولے کیسے گیت
روٹھ گیا ہو جس ناری سے جوبن رُت میں اس کا پیار
پیار ہی آلی ہیرا من ہے پیار ہی آشاؤں کا تاج
پیار ہی میرے روپ کی شوبھا پیار ہی میرا چندن ہار
نام نہیں ہے جس کا کوئی من کو لاگو ایسا روگ
نینوں کی تھالی میں موتی من کی تھالی میں انگار
دھیان کے ساگر میں لہرائیں سوچوں کے طوفان
سونپ گئے ہیں جب سے سیاں میری نیا کو منجدھار

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

प्रेम की आग में ऐसे जल
माथे पर भी पड़े न बल
दुख और सुख की बात न छेड़
दुख सुख है कर्मों का फल
जीवन आख़िर सपना है
क्या कुटिया क्या शीश महल
प्रेम की अग्नि में इक दिन
आँसू भी जाते है जल
विरहा में बन जाता है
साल साल का इक इक पल
जो करना है कर ले आज
आज न फिर आयेगी कल
होनी होकर रहती है
सोच न इस का कोई हल
प्रेम की राह में काँटे हैं
तू फूलों से भी कोमल
मैं बनवासी दुखियारा
रूक जा मेरे साथ न चल
रुप रंग पर नाज़ न कर
जायेगा ये सूरज ढल
होना चाहे तू जो अमर
पी ले प्रेम का गंगा जल

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

پریم کی آگ میں ایسے جل
ماتھے پر بھی پڑے نہ بل
دُکھ اور سُکھ کی بات نہ چھیڑ
دُکھ سُکھ ہے کرموں کا پھل
جیون آخر سپنا ہے
کیا کٹیا کیا شیش محل
پریم کی اگنی میں اِک دِن
آنسو بھی جاتے ہیں جل
برہا میں بن جاتا ہے
سال سال کا اِک اِک پل
جو کرنا ہے کر لے آج
آج نہ پھر آئے گی کل
ہونی ہو کر رہتی ہے
سوچ نہ اس کا کوئی حل
پریم کی راہ میں کانٹے ہیں
تو پھولوں سے بھی کومل
میں بن باسی دُکھیارا
رُک جا میرے ساتھ نہ چل
رُوپ رنگ پر ناز نہ کر
جائے گا یہ سُورج ڈھل
ہونا چاہے تو جو امر
پی لے پریم کا گنگا جل

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

रुठ गया सिंदूर माँग से नैनों से बिछड़ा काजल
इक इक करके टूट गये हैं सपनों के सब रंग महल
चन्दन सी काया जल जल कर अपनी आग में राख हुयी
दर्शन जल की प्यास के मारे सूख गये हैं नैन कँवल
नैन लगाकर ए मन काहे सुख की आस लगाता है
ठंडी आहें देन प्रीत की जलते आँसू प्रेम का फल
प्रीत का चाँद छुपा है जब से आस के तारे डूब गये
मन की मन से ओर नैनों की जोत है नैनों से ओझल
पलक पलक पर जल के मन्दिर ढाल लिये आशाओं ने
प्रेम पुजारन बन कर कब से माँग रही हूँ प्रेम का फल
कौन सुने पायल की छन छन कौन सुने कोयल के गीत
आग लगे फागुन की रूत को सावन की रूत जाये जल
बीती बातें याद दिलाकर ज़ुल्म न कर मुझ बिरहन पर
पीहू पीहू कर न पपीहे गीत न गा पगली कोयल
सुख आये तो साल महीने दिन घड़ियां बन जाते हैं
दुख में डूबके बन जाता है साल साल का इक इक पल
सुख है एक पवन का झोंका सुख है इक सुन्दर सपना
दिन को भी जो रैन बना दे दुख है वोह काला बादल
काँटे बन गये फूल सेज के नागिन बन गई काली रैन
पी बिन टूटा हाथ से कंगना, पाँव से रुठी है पायल

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

روٹھ گیا سیندور مانگ سے نینوں سے بچھڑا کاجل
اِک اِک کر کے ٹوٹ گئے ہیں سپنوں کے سب رنگ محل
چندن سی کایا جل جل کر اپنی آگ میں راکھ ہوئی
درشن جل کی پیاس کے مارے سُوکھ گئے ہیں نین کنول
نین لگا کر اے من کاہے سُکھ کی آس لگاتا ہے
ٹھنڈی آہیں دین پریت کی جلتے آنسو پریم کا پھل
پریت کا چاند چھُپا ہے جب سے آس کے تارے ڈوب گئے
من کی من سے اور نینوں کی جوت ہے نینوں سے اوجھل
پلک پلک پر جل کے مندر ڈھال لئے آشاؤں نے
پریم پجارن بن کر کب سے مانگ رہی ہوں پریم کا پھل
کون سُنے پائل کی چھن چھن کون سُنے کوئل کے گیت
آگ لگے پھاگن کی رُت کو ساون کی رُت جائے جل
بیتی باتیں یاد دِلا کر، ظُلم نہ کر مجھ برہن پر
پیہو پیہو کر نہ پپیہے، گیت نہ گا پگلی کوئل
سُکھ آئے تو سال مہینے دِن گھڑیاں بن جاتے ہیں
دُکھ میں ڈوب کے بن جاتا ہے سال سال کا اِک اِک پل
سُکھ ہے ایک پون کا جھونکا سُکھ ہے اِک سُندر سپنا
دِن کو بھی جو رَین بنا دے دُکھ ہے وہ کالا بادل
کانٹے بن گئے پھول سیج کے ناگن بن گئی کالی رَین
پی بن ٹوٹا ہاتھ سے کنگنا، پاؤں سے روٹھی ہے پائل

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

साँझ सवेरे नैन बिछा कर राह तकूं मैं साजन की
राम ही जाने कब चमकेगी किस्मत मेरे आँगन की
घर घर मेरी प्रीत का चर्चा घर घर मेरे प्रेम की बात
पंख बिना ही उड़ जाती है बात दिलों के बन्धन की
अखियाँ जब से नैन बनी हैं पूछ न जी का हाल सखी
अंग अंग से फूट फूट कर खुश्बू निकले चंदन की
नैन चुरा कर जब से सैंय्या दूर कहीं परदेस गये
बिरहन की अंखियन से बरसे बिन सावन रुत सावन की
परदेसी के संग गयी थी भूल न जाये राह कहीं
लौट के आना भूल गयी है जोत हमारे नैनन की
सब सखियों ने फाग मनाया घर घर प्रेम का रास रचा
मेरे घर में गीत न आये और न कभी पायल छनकी
माथे पर चन्दन का टीका बनकर मन का दीप जले
आँखों में रो रो कर कजरा कहे कहानी बिरहन की
पीतम का मन मेरा मन है उसकी आशा मेरी है
पीके नैनाँ मेरे नैनाँ दासी हूँ मैं सौतन की
हाल परीशाँ बाल परीशाँ खोई खोई रहती हूँ
ऐसा जादू डार गये हैं सुध बिसराई तन मन की

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

سانجھ سویرے نین بچھا کر راہ تکوں میں ساجن کی
رام ہی جانے کب چمکے گی قسمت میرے آنگن کی
گھر گھر میری پریت کا چرچا گھر گھر میرے پریم کی بات
پنکھ بناں ہی اُڑ جاتی ہے بات دلوں کے بندھن کی
اکھیاں جب سے نین بنی ہیں پوچھ نہ جی کا حال سکھی
انگ انگ سے پھوٹ پھوٹ کر خوشبو نکلے چندن کی
نین چُرا کر جب سے سیّاں دور کہیں پردیس گئے
برہن کی اکھین سے برسے بن ساون رُت ساون کی
پردیسی کے سنگ گئی تھی بھول نہ جائے راہ کہیں
لوٹ کے آنا بھول گئی ہے جوت ہمارے نینن کی
سب سکھیوں نے بھاگ منایا گھر گھر پریم کا راس رچا
میرے گھر میں گیت نہ آئے اور نہ کبھی پائل چھنکی
ماتھے پر چندن کا ٹیکا بن کر من کا دیپ جلے
آنکھوں میں رو رو کر کجرا لکھے کہانی برہن کی
پیتم کا من میرا من ہے اس کی آشا میری ہے
پی کے نیناں میرے نیناں داسی ہوں میں سوتن کی
حال پریشاں، بال پریشاں، کھوئی کھوئی رہتی ہوں
ایسا جادو ڈار گئے ہیں سُدھ بسرائی تن من کی

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

पहले अपनी बात को तोल
पगले फिर कुछ मुँह से बोल
जीना है तो जीवन में
सच्चाई का ज़हर न घोल
प्यार का तू सौदागर है
हक कांटे पर मन को तोल
दुनिया धोखा देती है
बोल के मीठे मीठे बोल
रो रो कर मत नैन गंवा
माटी में मत मोती रोल
सीप में जो भी होते हैं
मोती होते हैं अनमोल
अपने नैनों पर भी 'तुफ़ैल'
अपने मन का भेद न खोल

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

پہلے اپنی بات کو تول
پگلے پھر کچھ منہ سے بول
جینا ہے تو جیون میں
سچائی کا زہر نہ گھول
پیار کا تو سوداگر ہے
حق کانٹے پر من کو تول
دُنیا دھوکا دیتی ہے
بول کے میٹھے میٹھے بول
رو رو کر مت نین گنوا
ماٹی میں مت موتی رول
سیپ میں جو بھی ہوتے ہیں
موتی ہوتے ہیں انمول
اپنے نینوں پر بھی طفیل
اپنے من کا بھید نہ کھول

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

तन राधा है मन घनश्याम
अंग अंग है गोकुल धाम
मन मथुरा मन अयोध्या है
मन मोहन है मन है राम
राधा के नैनों से देख
ज़र्रे ज़र्रे में घनश्याम
दुख ही दुख है यह जीवन
सुख ही सुख है पीका का नाम
राधा के दो नैन सखी
इक मथुरा एक गोकुल धाम
प्रीत की रीत अनोखी है
नाम मिलेगा हो बदनाम
पी से पी का प्यार न माँग
प्यार किये जा तू निष्काम
घायल करना है मन को
काम देवता का है काम
प्रीत का फल मिल जायेगा
रख सैंय्या की याद से काम
प्यार अमर हो जाता है
राधा जब बन जाये शाम

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

تن رادھا ہے من گھنشام
انگ انگ ہے گوکل دھام
من متھرا من اجودھیا ہے
مَن موہن ہے من ہے رام
رادھا کے نینوں سے دیکھ
ذرّے ذرّے میں گھنشام
دُکھ ہی دُکھ ہے یہ جیون
سُکھ ہی سُکھ ہے پی کا نام
رادھا کے دو نین سکھی
اِک متھرا اِک گوکل دھام
پریت کی ریت انوکھی ہے
نام ملے گا ہو بدنام
پی سے پی کا پیار نہ مانگ
پیار کئے جا تو نشکام
گھائل کرنا ہے من کو
کام دیوتا کا ہے کام
پریت کا پھل مل جائے گا
رکھ ستیاں کی یاد سے کام
پیار امر ہو جاتا ہے
رادھا جب بن جائے شیام

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

साँसों की माला पर सुमरुं निस दिन पी का नाम
अपने मन की मैं जानूं और पी के मन की राम
प्रेम रंग में ऐसे डूबी बन गया एक ही रुप
शाम की माला जपते जपते आप बनी मैं शाम
अंग अंग में रची हुयी है यूँ मोहन की प्रीत
एक आँख वृन्दावन मेरी दूजी गोकुल धाम
प्रेम प्याला जब से पिया है जी का है येह हाल
अंगारों पर नींद आ जाये काँटों पर आराम
पीतम का क़ुछ दोष नहीं है वोह तो हैं निर्दोष
अपने आप से बातें कर के हो गयी मैं बदनाम
जाग उठती है जब हृदय में प्रेम की सच्ची जोत
इस नगरी में हो जाता है पीतम का विसराम
जी ने जब से जान लिया है दुख भी है उनकी देन
पाप समझ रखा है मैंने लेना सुख का नाम
जीवन का श्रृंगार है प्रीतम माँग का है सिंदूर
प्रीतम की नज़रों से गिर कर जीना है किस काम
दर्शन जल की प्यासी आँखें रो रो कर गयीं सूख
अंधियारों में डूब गये बिरहन के सुब्हो शाम

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

سانسوں کی مالا پر سمروں نندن پی کا نام
اپنے من کی مَیں جانوں اور پی کے من کی رام
پریم رنگ میں ایسے ڈوبی بن گیا ایک ہی رُوپ
شام کی مالا جپتے جپتے آپ بنی مَیں شام
انگ انگ میں رچی ہوئی ہے یوں موہن کی پریت
ایک آنکھ بندرابن میری دوجی گوکل دھام
پریم پیالہ جب سے پیا ہے جی کا ہے یہ حال
انگاروں پر نیند آجائے کانٹوں پر آرام
پیتم کا کچھ دوش نہیں ہے وہ تو ہیں نردوش
اپنے آپ سے باتیں کر کے ہوگئی مَیں بدنام
جاگ اٹھتی ہے جب ہردے میں پریم کی سچی جوت
اس نگری میں ہوجاتا ہے پیتم کا بسرام
جی نے جب سے جان لیا ہے دُکھ بھی ہے اُن کی دین
پاپ سمجھ رکھا ہے مَیں نے لینا سُکھ کا نام
جیون کا سنگار ہے پریتم مانگ کا ہے سیندور
پریتم کی نظروں سے گر کر جینا ہے کس کام
درشن جل کی پیاسی آنکھیں رو رو کر گئیں سُوکھ
اندھیاروں میں ڈوب گئے برہن کے صبح و شام

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

धार कर श्याम रुप काजल का
प्यार राधा के नैन से छलका
रंग में अंग अंग डूब गया
आँचल इस तरह रुप का ढलका
ऐसी खुशबू बदन में लहराई
महके जिस तरह पेड़ सन्दल का
सोज़ ही सोज़ उस का हर नग़मा
उसका हर गीत, गीत कोयल का
कर लिया है सिंगार गोरी ने
सुन के सन्देस काले बादल का
माँग में काहे भर लिया सिंदूर
काहे टीका लगाया संदल का
तारे मोती हैं उस की चोली के
चाँद है फूल उस के आँचल का
क्या कहूँ उसके रुप की मैं बात
चाँदनी का तो रंग है हलका
बाल किस ने हवा में लहराये
रंग उड़ने लगा है बादल का
कल का वादा न कीजिये मुझसे
याँ भरोसा नहीं है इक पल का
जिस की किस्मत में हो वहीं पाये
जाने है मोल पीत के फल का

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

دھار کر شیام رُوپ کا جل کا
پیار رادھا کے نین سے چھلکا
رنگ میں انگ انگ ڈوب گیا
آنچل اس طرح رُوپ کا ڈھلکا
ایسی خوشبو بدن میں لہرائی
مہکے جس طرح پیڑ صندل کا
سوز ہی سوز اس کا ہر نغمہ
اس کا ہر گیت، گیت کوئل کا
کر لیا ہے سنگار گوری نے
سُن کے سندیس کالے بادل کا
مانگ میں کاہے بھر لیا سیندور
کاہے ٹیکا لگایا صندل کا
تارے موتی ہیں اس کی چولی کے
چاند ہے پھول اُس کے آنچل کا
کیا کہوں اُس کے روپ کی میں بات
چاندنی کا تو رنگ ہے ہلکا
بال کس نے ہوا میں لہرائے
رنگ اڑنے لگا ہے بادل کا
کل کا وعدہ نہ کیجئے مجھ سے
یاں بھروسہ نہیں ہے اک پل کا
جس کی قسمت میں ہو وہی پائے
جان ہے مول پیت کے پھل کا

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

पलकों पर तारों के दीप जले, शाम ढले
फिर दिल पर किरनों के तीर चले, शाम ढले
जाने क्या बात हुयी फिर दिन से रात हुयी
होठों पे आहों की आग जले, शाम ढले
बिरहा का दर्द सहूँ कब तक ख़ामोश रहूँ
रो रो के प्यार मिरा हाथ मले शाम ढले
सपनों के जाल बुनें सखियाँ संगीत सुनें
रोऊँ मैं चन्दा की छाँव तले, शाम ढले
दर्शन की प्यास लिये नैनों में आस लिये
बाट तकूं आहों की छाँव तले, शाम ढले
तरपत है मोरा जिया आकर तो देख पिया
चन्दा और चाँदनिया मिले गले, शाम ढले
चाहत का खेल कहाँ किस्मत में मेल कहाँ
शायद ये जान ले कर दर्द टले शाम ढले

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

پلکوں پہ تاروں کے دیپ جلے، شام ڈھلے
پھر دل پہ کرنوں کے تیر چلے، شام ڈھلے
جانے کیا بات ہوئی پھر دن سے رات ہوئی
ہونٹوں پہ آہوں کی آگ جلے، شام ڈھلے
برہا کا درد سہوں کب تک خاموش رہوں
رو رو کے پیار مرا ہاتھ ملے، شام ڈھلے
سپنوں کے جال بُنیں سکھیاں سنگیت سُنیں
روؤں میں چندا کی چھاؤں تلے، شام ڈھلے
درشن کی پیاس لئے نینوں میں آس لئے
باٹ تکوں آہوں کی چھاؤں تلے، شام ڈھلے
تڑپت ہے مورا جیا آ کر تو دیکھ پیا
چندا اور چاندنیا ملیں گلے، شام ڈھلے
چاہت کا کھیل کہاں قسمت میں میل کہاں
شاید یہ جان لے کر درد ٹلے، شام ڈھلے

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

इस दुनिया से तू दिल न लगा येह दुनिया रैन बसेरा है
सब रिश्ते नाते झूठे हैं तेरा है न कोई मेरा हैं
आया है अकेला दुनिया में जायेगा अकेला दुनिया से
येह दुनिया एक सराय है जग जोगी वाला फेरा है
पग पग पर बैरी दुनिया ने माया के जाल बिछाये हैं
हर पगडंडी है रंग भरी हर रस्ता रुप ने घेरा है
मोह माया का है रुप सजल ए राही रास्ता देख के चल
यह जग जादू की नगरी है येह जग सपनों का डेरा है
आशा है पिया से मिलने की नैनों में ज्ञान की जोत जगा
नैनाँ अज्ञानी अन्धे हैं मन में तेरे घोर अन्धेरा है
संसार के दुख की धूप कड़ी तेरे नजदीक न आयेगी
तू नाम का पेड़ लगा मन में येह साया बड़ा घनेरा है
दुख आते हैं दुख जाते हैं दुख जाते हैं दुख आते हैं
हर दिन के बाद है रात यहाँ हर रात के बाद सेवेरा है

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

اِس دُنیا سے تو دِل نہ لگا یہ دُنیا رَین بسیرا ہے
سب رشتے ناطے جھوٹے ہیں تیرا ہے نہ کوئی میرا ہے
آیا ہے اکیلا دُنیا میں جائے گا اکیلا دُنیا سے
یہ دُنیا ایک سرائے ہے جگ جوگی والا پھیرا ہے
پگ پگ پر بیری دُنیا نے مایا کے جال بچھائے ہیں
ہر پگڈنڈی ہے رنگ بھری ہر رستہ رُوپ نے گھیرا ہے
موہ مایا کا ہے رُوپ سجل اے راہی رستہ دیکھ کے چل
یہ جگ جادو کی نگری ہے یہ جگ سپنوں کا ڈیرا ہے
آشا ہے پیا سے ملنے کی نینوں میں گیان کی جوت جگا
نیناں اگیانی اندھے ہیں من میں تمرے گھور اندھیرا ہے
سنسار کے دُکھ کی دھوپ کڑی تیرے نزدیک نہ آئے گی
تو نام کا پیڑ لگا من میں یہ سایہ بڑا گھنیرا ہے
دُکھ آتے ہیں دُکھ جاتے ہیں دُکھ جاتے ہیں دُکھ آتے ہیں
ہر دن کے بعد ہے رات یہاں ہر رات کے بعد سویرا ہے

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

देस देस में नगर नगर में द्वारे द्वारे फिरते हैं
दिल का दर्द छुपाकर दिल में हम दुखियारे फिरते हैं
प्यार की राहों में जिस दिन से छोड़ गया है संग कोई
दुनिया के ग़म साया बन कर साथ हमारे फिरते हैं
आंसू बन बन कर ऐसे मन पलकों पर लहराता हैं
आसमान पर रात को जैसे चांद सितारे फिरते हैं
इन आँखों की शह पर मान के अपने बाँवरे दिल की बात
प्यार की बाज़ी पर हम अपना जीवन हारे फिरते हैं
पलकों तक आने से पहले पी लिया जिनको आँखों ने
अंग अंग में शोला बन कर वोह अंगारे फिरते हैं
एक ज़माना हो गया लेकिन उनके संग जो बीते थे
अब तक आँखों में वोह सुन्दर मस्त नज़ारे फिरते हैं
जिन की याद में डूब के हमने सारी उम्र बितायी है
क्या जाने किस देस में वोह चित चोर हमारे फिरते है
क्या जाने कब बुझेगी आख़िर दर्शन जल की प्यास 'तुफ़ैल'
इक मुद्दत से आस लगाये मारे मारे फिरते हैं

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

دیس دیس میں نگر نگر میں دوارے دوارے پھرتے ہیں
دل کا درد چھپا کر دل میں ہم دُکھیارے پھرتے ہیں
پیار کی راہوں میں جس دن سے چھوڑ گیا ہے سنگ کوئی
دُنیا کے غم سایہ بن کر ساتھ ہمارے پھرتے ہیں
آنسو بن بن کر ایسے من پلکوں پر لہراتا ہے
آسمان پر رات کو جیسے چاند ستارے پھرتے ہیں
ان آنکھوں کی شہ پر مان کے اپنے باورے دِل کی بات
پیار کی بازی پر ہم اپنا جیون ہارے پھرتے ہیں
پلکوں تک آنے سے پہلے پی لیا جن کو آنکھوں نے
انگ انگ میں شعلہ بن کر وہ انگارے پھرتے ہیں
ایک زمانہ ہو گیا لیکن ان کے سنگ جو بیتے تھے
اب تک آنکھوں میں وہ سُندر مست نظارے پھرتے ہیں
جن کی یاد میں ڈوب کے ہم نے ساری عمر بتائی ہے
کیا جانے کس دیس میں وہ "چت چور" ہمارے پھرتے ہیں
کیا جانے کب بجھے گی آخر درشن جل کی پیاس طفیل
اک مدت سے آس لگائے مارے مارے پھرتے ہیں

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

तन का ध्यान न मन का ज्ञान
तू काहे का विद्यावान
इन्सानों से प्यार नहीं
फिर भी कहलाये इंसान
मन मन्दिर में झांक के देख
दूर नहीं तुझ से भगवान
दुनिया एक सराय है
तू है दो दिन का मेहमान
येह भी कोई जीवन है
लाखों दुख हैं और इक जान
तेरी जान के दुश्मन है
लोभ, क्रोध, माया, अभिमान
मन की दौलत पास नहीं
ओर कहलाये तू धनवान
आशाओं को तज कर देख
येह दुनिया है स्वर्ग समान
ध्यान महल में बैठ 'तुफ़ैल'
प्रीत को ही परमेश्वर जान

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

تن کا دھیان نہ من کا گیان
تو کا ہے کا ودیاوان
انسانوں سے پیار نہیں
پھر بھی کہلائے انسان
من مندر میں جھانک کے دیکھ
دُور نہیں تجھ سے بھگوان
دُنیا ایک سرائے ہے
تو ہے دو دِن کا مہمان
یہ بھی کوئی جیون ہے
لاکھوں دُکھ ہیں اور اِک جان
تیری جان کے دُشمن ہیں
لوبھ، کرودھ، مایا، ابھیمان
من کی دولت پاس نہیں
اور کہلائے تو دھنوان
آشاؤں کو تج کر دیکھ
یہ دُنیا ہے سورگ سمان
دھیان محل میں بیٹھ طفیلؔ
پریت کو ہی پرمیشور جان

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

तेरी खोज में बस्ती बस्ती जगल जगल छान फिरे
जैसे हम अनजान गये थे वैसे ही अनजान फिरे
दर्शन जल के प्यासे नैना बिन दर्शन पथरा भी गये
नैनों की जोती का आख़िर देकर हम बलिदान फिरे
खोज न पाया उस मन्दिर का जिसमें वास है पीतम का
पलक पलक पर क्या क्या लेकर पूजा का सामान फिरे
धूल पिया के चरन कमल की माथे तिलक लगाने को
मस्जिद मस्जिद मन्दिर मन्दिर हम इक इक स्थान फिरे
किस कारण आया था जग में आने का क्या मतलब था
भूल के सब कुछ धन दौलन के पीछे हर इन्सान फिरे
पी दर्शन की ख़ातिर हम ने भगवन भेस बनाया था
जोगी बन कर निकले थे हम रोगी लेकर जान फिरे
पी के रंग भवन तक पाया रस्ता सोच की लहरों का
दर्शन जल के प्यासे नैनां लेकर हम हैरान फिरे
रुप नगर में पी के कारण गये बड़े अरमानों से
रुप नगर के कुंज कुंज में खाकर नैंना बान फिरे
हम उसको पहचान ही लेंगे इक दिन मन के दर्पन में
लाख वोह गोरी सुन्दर मुख पर रुप का घूंघट तान फिरे
सच्ची जोत जलाकर देखे कोई मन के मन्दिर में
प्रेम भाव से पीछे पीछे बन्दे के भगवान फिरे

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

تیری کھوج میں بستی بستی جنگل جنگل چھان پھرے
جیسے ہم انجان گئے تھے ویسے ہی انجان پھرے

درشن جل کے پیاسے نیناں بن درشن پتھرا بھی گئے
نینوں کی جوتی کا آخر دے کر ہم بلیدان پھرے

کھوج نہ پایا اس مندر کا جس میں باس ہے پیتم کا
پلک پلک پر کیا کیا لے کر پوجا کا سامان پھرے

دھول پیا کے چرن کنول کی ماتھے تلک لگانے کو
مسجد مسجد مندر مندر ہم اک اک استھان پھرے

کس کارن آیا تھا جگ میں آنے کا کیا مطلب تھا
بھول کے سب کچھ دھن دولت کے پیچھے ہر انسان پھرے

پی درشن کی خاطر ہم نے بھگون بھیس بنایا تھا
جوگی بن کر نکلے تھے ہم روگی لے کر جان پھرے

پی کے رنگ بھون تک پایا رستہ سوچ کی لہروں کا
درشن جل کے پیاسے نیناں لے کر ہم حیران پھرے

روپ نگر میں پی کے کارن گئے بڑے ارمانوں سے
رُوپ نگر کے کنج کنج میں کھا کر نیناں بان پھرے

ہم اس کو پہچان ہی لیں گے اک دن من کے درپن میں
لاکھ وہ گوری سُندر مُکھ پر رُوپ کا گھونگھٹ تان پھرے

سچی جوت جلا کر دیکھے کوئی مَن کے مندر میں
پریم بھاو سے پیچھے پیچھے بندے کے بھگوان پھرے

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

येह संसार है तेरी रचना यह जग तेरी माया है
मुख पर पर्दा डाल के तूने कैसा खेल रचाया है
कितनी सुन्दर कितनी प्यारी फुलवारी है दुनिया की
फूलों और कांटों ने मिलकर कैसा रंग जमाया है
चन्द्रमा ओर सूरज दोनों तुझ से ही लेते हैं ज्योति
धरती और आकाश पे तेरे रुप का उजला साया है
उजियारों के संग अंधेरे फूलों के संग काँटे हैं
दिन का साथी रैन सुहानी धूप का साथी साया है
तारों की लिशकार में तूने फूलों की महकार में तूने
कैसे कैसे भेस में तूने अपना रुप छुपाया है
जिस ने तुझ को मन से चाहा जोत मिली है जोती में
रंग में तेरे जो भी डूबा जोती जोत समाया है
बस्ती बस्ती जंगल जंगल ढूंढ ढूंढ कर हार गये
मन मन्दिर के द्वार खुले तो तेरा दर्शन पाया है
तेरी महिमा तू ही जाने और न जाने दाता कोय
सोच सोच कर खोज खोजकर हाथ यही कुछ आया है

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

یہ سنسار ہے تیری رچنا یہ جگ تیری مایا ہے
مکھ پر پردہ ڈال کے تو نے کیسا کھیل رچایا ہے
کتنی سُندر کتنی پیاری پھلواری ہے دُنیا کی
پھولوں اور کانٹوں نے مل کر کیسا رنگ جمایا ہے
چندرما اور سُورج دونوں تجھ سے ہی لیتے ہیں جیوتی
دھرتی اور آکاش یہ تیرے رُوپ کا اُجلا سایا ہے
اُجیاروں کے سنگ اندھیرے پھولوں کے سنگ کانٹے ہیں
دن کا ساتھی رین سہانی دھوپ کا ساتھی سایا ہے
تاروں کی لشکاریں تو نے پھولوں کی مہکاریں تو نے
کیسے کیسے بھیس میں تو نے اپنا رُوپ چھُپایا ہے
جس نے تجھ کو مَن سے چاہا جوت ملی ہے جوتی میں
رنگ میں تیرے جو بھی ڈوبا جوتی جوت سمایا ہے
بستی بستی جنگل جنگل ڈھونڈ ڈھونڈ کر ہار گئے
من مندر کے دوار کھُلے تو تیرا درشن پایا ہے
تیری مہما تو ہی جانے اور نہ جانے داتا کوئے
سوچ سوچ کر کھوج کھوج کر ہاتھ یہی کچھ آیا ہے

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

लाखों विद्यावान मिले
सब तुझे से अनजान मिले
जिस को पी से मिलना हो
मन मन्दिर में आन मिले
साजन नैनाँ प्यासे हैं
दर्शन जल का दान मिले
छोटों की संगत में बैठ
फिर तुझको भगवान मिले
वोह ज्ञानी ही ज्ञानी है
जिसको मन का ज्ञान मिले
जगत पिता की पूजा कर
दुनिया में सम्मान मिले
वोह मन मूरख है जिसमें
क्रोध, कपट, अभिमान मिले
इन्सानों के जंगल में
काश कोई इन्सान मिले
मन की आँखे खोल 'तुफ़ैल'
तब पीका स्थान मिले

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

لاکھوں وِدّیا وان ملے
سب تجھ سے انجان ملے
جس کو پی سے مِلنا ہو
من مندر میں آن ملے
ساجن نیناں پیاسے ہیں
درشن جل کا دان ملے
چھوٹوں کی سنگت میں بیٹھ
پھر تجھ کو بھگوان ملے
وہ گیانی ہی گیانی ہے
جس کو من کا گیان ملے
جگت پتا کی پوجا کر
دُنیا میں سمّان مِلے
وہ من مُورکھ ہے جس میں
کرودھ، کپٹ، ابھیمان ملے
انسانوں کے جنگل میں
کاش کوئی انسان ملے
من کی آنکھیں کھول طفیلؔ
تب پی کا استھان مِلے

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

नील गगन से भी परे सैंय्याँ जी का धाम
दर्शन जल की कामना पत रखयो हे राम
क्या जाने किस रुप में साँवरिया मिल जाय
झुक झुक कर संसार में सब को करो सलाम
अब किस्मत के हाथ है इस बन्धन की लाज
मैने तो मन लिख दिया साँवरिया के नाम
पी के कारन ए सखी लिया है मैंने जोग
अपने मारें बोलियाँ ग़ैर करें बदनाम
वोह चातुर है कामनी वोह है सुन्दर नार
जिस पगली ने कर लिया पीतम का मन राम
जब से राधा श्याम के नैन हुये दो चार
शाम बने हैं राधिका राधे बन गई शाम
पग पग खाई ठोकरें घूमी देस बिदेस
अब तो बिनती मान ले अब तो बहियाँ थाम
तू नैनों की जोत है नैनों से मत रुठ
काल का सन्देस आ गया जीवन की भई शाम

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

نیل گگن سے بھی پرے سیّاں جی کا دھام
درشن جل کی کامنا پت رکھیو ہے رام
کیا جانے کِس روپ میں سانوریا مِل جائے
جُھک جُھک کر سنسار میں سب کو کرو سلام
اب قسمت کے ہاتھ ہے اس بندھن کی لاج
مَیں نے تو مَن لکھ دیا سانوریا کے نام
پی کے کارن اے سکھی لیا ہے مَیں نے جوگ
اپنے ماریں بولیاں غیر کریں بدنام
وہ چاتر ہے کامنی وہ ہے سُندر نار
جس پگلی نے کر لیا پیتم کا من رام
جب سے رادھا شیام کے نیَن ہوئے دوچار
شام بنے ہیں رادھکا رادھے بن گئی شام
پگ پگ کھائیں ٹھوکریں گھومی دیس بدیس
اب تو بنتی مان لے اب تو بہیاں تھام
تو نینوں کی جوت ہے نینوں سے مت رُوٹھ
کال کا سندیس آگیا جیون کی بھئی شام

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

जीवन एक अथाह समन्दर आर न जिस का पार
ज़ोर नहीं है कुछ नैय्या पर बस में नहीं पतवार
मौज मौज गर्दाब बनी है लहर लहर मझधार
प्यार की नैय्या बिना खिवैया कैसे उतरे पार
जाके कारन येह सब कुछ था जा के बसे परदेस
काहे डारूँ नैनन कजरा काहे करुं सिंगार
बेसुध होकर गिरवा लाई तन मन लिया जलाय
चन्दा समझी जिसे चकोरी निकला वोह अंगार
अब भी नैनों में जलती है उसके प्यार की जोत
बतलायें क्या किस ने लूटा सपनों का संसार
जान के जो दुख दर्द से मेरे बना रहा अनजान
उस बैरी के संग हुये हैं मैरे नैनाँ चार
जो दुख जान के मेरे दिल के बन जाये अनजान *'तुफ़ैल'*
उस बैरी के संग किये हैं मैने नैनाँ चार

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

جیون ایک اتھاہ سمندر آر نہ جس کا پار
زور نہیں ہے کچھ نیّا پر بس میں نہیں پتوار
مَوج موج گرداب بنی ہے لہر لہر منجدھار
پیار کی نیّا بناں کھِویّا کیسے اُترے پار
جاکے کارن یہ سب کچھ تھا جا کے بسے پردیس
کاہے ڈاروں نینن کجرا کاہے کروں سنگار
بے سُدھ ہو کر گروا لائی تن من لیا جلائے
چندا سمجھی جیسے چکوری نِکلا وہ انگار
اب بھی نینوں میں جلتی ہے اس کے پیار کی جوت
بتلائیں کیا کِس نے لُوٹا سپنوں کا سنسار
جان کے جو دُکھ درد دے میرے بنا رہا انجان
اس بیری کے سنگ ہوئے ہیں میرے نیناں چار
جو دُکھ جان کے میرے دل کے بن جائے انجان طفیلؔ
اس بیری کے سنگ کئے ہیں میں نے نیناں چار

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

ध्यान महल में भी जो गोरी आने से शरमाये
दर्शन जल से फिर कोई कैसे नैनन प्यास बुझाये
तारों की चिलमन से झाँके फूलों में मुसकाये
रुप नगर की इस रानी का घूँघट कौन उठाये
गोरे मुख पर काली लट कुछ ऐसी छवि दिखलाये
चाँद पे जैसे झूम झूम कर नाग कोई लहराये
दुधिया सारी में दमके है यूँ गोरी का रुप
जल धारा के नीचे जैसे कोई आग जलाये
चाँद है झूमर तारे उस की चोली के हैं फूल
गगन मण्डल पर बैठी है वोह अपनी सेज सजाये
हम हैं धरती के अंधियारे वोह आकाश की जोत
अंधियारा जोती से आख़िर क्यों कर नैन मिलाये
जनम जनम से मधुर मिलन की आई है यही रीत
जान करे जो हंस कर अर्पन दर्शन भी वही पाये

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

دھیان محل میں بھی جو گوری آنے سے شرمائے
درشن جل سے پھر کوئی کیسے نینن پیاس بجھائے
تاروں کی چلمن سے جھانکے پھولوں میں مُسکائے
رُوپ نگر کی اس رانی کا گھونگھٹ کون اُٹھائے
گورے مُکھ پر کالی لٹ کچھ ایسی چھب دکھلائے
چاند پہ جیسے جھُوم جھُوم کر ناگ کوئی لہرائے
دودھیا ساری میں دمکے ہے یوں گوری کا رُوپ
جل دھارا کے نیچے جیسے کوئی آگ جلائے
چاند ہے جھُومر تارے اُس کی چولی کے ہیں پھُول
گگن منڈل پر بیٹھی ہے وہ اپنی سیج سجائے
ہم ہیں دھرتی کے اندھیارے وہ آکاش کی جوت
اندھیارا جوتی سے آخر کیونکر نین ملائے
جنم جنم سے مدھر ملن کی آئی ہے یہی ریت
جان کرے جو ہنس کر ارپن درشن بھی وہی پائے

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

غزلیں

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

مجھے ہند و پاک کے مشاعروں میں پڑھنے کا حوصلہ دیا اور باذوق حضرات نے بیحد داد دی۔
دہلی کے ایک مشاعرے میں صدرِ جمہوریہ نے جو حوصلہ افزائی فرمائی، مجھے آج تک یاد ہے۔
انہوں نے فرمایا کہ "طفیل ہوشیارپوری کی غزلیں سُن کر سو سال کے بعد عبدالرحیم خانخاناں کی یاد آ گئی"۔ پاک و ہند کے اہلِ دل اور اہلِ نظر بزرگ شعرائے کرام نے مجھے دعاؤں سے نوازا۔ یوں میری حوصلہ افزائی ہوئی اور میں نے اس اسلوبِ کلام اور اندازِ فکر کو اپنی شاعری کے لئے موزوں سمجھا ____ اس کے نتیجے میں "سوچ مالا" وجود میں آئی۔
خدائے بزرگ و برتر کا ہزار ہزار شکر ہے جس نے مجھے اس رنگ میں شعر کہنے کی توفیق عطا فرمائی۔

طُفیلؔ ہوشیارپوری

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

محفلوں نے میرے ذوقِ سخن میں نکھار پیدا کیا اور مجھے فنی بلندیوں کا علم ہُوا۔

میرا بائی اور سہجو بائی کا کلام سنگیت کے روپ میں مَیں نے سب سے پہلے جہلم میں سُنا اور مَیں ہندی زبان کی کوملتا اور مٹھاس سے اتنا متاثر ہوا کہ مَیں نے اسی رنگ میں دوہے کہنے کا آغاز کیا۔ سب سے پہلا دوہا مَیں نے جہلم ہی میں کہا۔ یہ دوہا تھا:

جیسی کرنی ویسی بھرنی قدرت یہ بتلائے

کانٹے بونے والا جگ میں پھول کہاں سے پائے

زندگی کے سفر کے ساتھ ساتھ ادبی سفر بھی جاری رہا۔ پنڈت رام جوایا خنداں، پنڈت پرتھوی چندر اور راجندر ملہوترا کی محبت اور حوصلہ افزائی نے شعر کہنے کی ترغیب دی۔ ان دوستوں کی پرخلوص دعاؤں سے میری تخلیقات ہندوستان کے معروف رسائل اور اخبارات میں چھپنے لگیں اور ادبی دُنیا میں میرا بھی ذکر آنے لگا۔

اس سفر میں ایک نئی منزل مقدر بنی اور عزت و آبرو کے ساتھ درس و تدریس سے فارغ ہو کر آل انڈیا ریڈیو لاہور میں مُلازم ہو گیا۔ مجھے یہاں شعبۂ موسیقی میں ادبی مشیر کی خدمات سپرد ہوئیں۔ مَیں فنکاروں کے لئے شعرا کی غزلوں کا انتخاب کرتا۔ انتخاب کے سلسلہ میں ریڈیو کا عظیم کتب خانہ میرے لئے مشعلِ راہ بنا اور مَیں نے حتی الامکان عظیم ادب کا مطالعہ کیا۔

مَیں نے ملازمت کے دوران ریڈیو پر غنائی فیچر پیش کئے جن میں ساری نظمیں میری ذاتی تخلیق ہوتی تھیں۔ مَیں یہ کہنے میں حق بجانب ہوں کہ اس اسلوب کا آغاز مجھ سے ہوا۔ عظیم کتابوں کے مطالعے اور عظیم دانشوروں کی محفلوں نے میرے فکر و نظر کو جلا بخشی۔ اس دور کے محسنوں میں پنڈت ہری چند اختر کا نام نامی سر فہرست ہے۔

تلسی داس، میرا بائی، بہاری اور خان خاناں کے کلام نے میرے دِل پر انمٹ نقوش ثبت کئے۔ مَیں نے اردُو اور ہندی کی آمیزش سے غزل کو ایک نئی زبان سے متعارف کرایا۔ خدا مولانا صلاح الدین احمد کو کروٹ کروٹ جنت نصیب کرے انھوں نے میری اس غزل کو "غزل کا ہندی روپ" عنوان عطا کیا۔ اور اسے بڑے اہتمام سے ادبی دُنیا میں جگہ دی۔ یہ عنوان ان کی نوازش سے میری پہچان بن گیا۔ ان غزلوں کی مقبولیت نے

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

جہلم کے باشندوں کو پنڈت جی سے خاص عقیدت بھی اور حد درجہ اعتماد تھا۔ اسکول کے اوقات کے بعد مَیں دوستوں میں وقت گزارتا۔ میرے ان دوستوں میں علّامہ سیماب اکبرآبادی کے نامور شاگرد پنڈت رام جو ایا خنداں، ہربنس لال اور راجندر ملہوترہ کے علاوہ شہر کے شرفا بھی تھے جن کا ذوقِ ادب قابلِ ستائش تھا۔ شعر و سخن کے ساتھ یہاں موسیقی کی محفلیں بھی برپا ہوتیں۔ ان محفلوں میں میرا موسیقی کا ذوق پروان چڑھا اور مَیں سنگیت کے رموز سے آشنا ہوا۔

پنڈت پرتھوی چند رکندن گھاٹ کے ایک مندر میں اپدیش دیتے تھے۔ ان کا اپدیش راماین اور گیتا پر مشتمل ہوتا۔ لوگ دور دراز سے ان کا اُپدیش سُننے کے لئے ذوق و شوق سے آتے۔

پنڈت جی کے بیان میں میرا بائی کا یہ بھجن مَیں نے پہلی بار سُنا:

ہے ری مَیں تو پریم دیوانی میرا درد نہ جانے کو

بھگتی رس میں ڈوبا ہوا یہ گیت آج تک میرے ذہن پر چھایا ہوا ہے۔

کندن گھاٹ کے گوردوارے میں بھی گرنتھ صاحب کا پاٹھ ہوتا اور مَیں اُس سے بھی مستفید ہوتا۔ پاٹھ کی ایک محفل میں کبیر بھگت کا یہ دوہا سُنا جو آج تک میرے لئے دلیلِ راہ ہے۔

منوا اتنا شدھ بھیو جیسے نرمل نیر
پاچھے پاچھے ہر پھرے کہت کبیر کبیر

پنڈت جی اپنے اپدیش اور پاٹھ میں اکثر اوقات ہندی شاعروں اور بھگت لوگوں کا کلام سُناتے اور بڑے خوبصورت انداز میں ان کی تشریح بھی کرتے۔ یہ تشریح میرے دِل پر خاص اثر کرتی۔ اور مَیں عظیم لوگوں کے خیالات میں یک رنگی اور یکسانیت دیکھتا۔

راجندر ملہوترا کو شعر و سخن سے گہرا تعلق تھا۔ وہ ادب سے جنون کی حد تک شغف رکھتے تھے۔ چنانچہ میرے اور ان کے تعلّقات ادب کے وسیلے سے روز بروز بڑھتے چلے گئے۔ ادب آج بھی اُن کی زندگی کا جزو ہے۔ ان دنوں وہ ادب کی خدمت اور سماجی کاموں میں گہری دلچسپی لیتے تھے۔ چنانچہ شعر و ادب کا رشتہ میرے ان کے درمیان انسانی خلوص کی بنا پر موجود ہے جس پر مجھے ذاتی طور پر فخر ہے۔

مَیں شعر میں پنڈت رام جو ایا خنداں کے قیمتی مشوروں سے مستفید ہوتا۔ اُن کی

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

دیباچہ

تقسیمِ ملک سے پہلے زندگی کا سفر مجھے سیالکوٹ سے جہلم لے گیا۔ اس سفر کی وجہ جہلم کے ایک عظیم ودیاوان پنڈت پرتھوی چندر تھے۔ وہ جہلم کے ہندو سکھ تاجروں میں بڑے احترام کی نگاہ سے دیکھے جاتے تھے۔ انھوں نے تاجروں کو مشورہ دیا کہ جہلم میں کاروباری تربیت کیلئے منیمی اسکول کا اہتمام کریں۔ چنانچہ ان کی تجویز پر جہلم میں منیمی سیکھنے والے طلبہ کے لئے ایک ادارہ قائم ہُوا اور اس میں تدریس کی ذمّہ داری میرے سپرد کی گئی۔

یہ میرے بزرگوں کا آبائی پیشہ تھا۔ مَیں نے اسے محنت سے سرانجام دینے کا وعدہ کیا اور سیالکوٹ سے جہلم چلا آیا۔

جہلم میں کندن گھاٹ کا ماحول بڑا دلنواز تھا، جہاں صُبح و شام لوگ اپنے اپنے عقیدے کے مطابق عبادت میں مصروف رہتے۔ یہاں مسجد، مندر اور گوردوارہ بڑے اہتمام سے تعمیر کئے گئے تھے۔ کندن گھاٹ کے ایک عظیم مندر میں پنڈت پرتھوی چندر پجاری کی حیثیت سے مذہبی رہنمائی کا فریضہ انجام دیتے تھے۔

پنڈت جی نے میری رہائش کے لئے اپنے مکان کے دو کمرے وقف کردیئے۔ چنانچہ مَیں جہلم میں قیام کے دَوران وہیں مقیم رہا۔

مَیں اس شہر میں منیمی اسکول کے طلبہ کو پوری محنت اور خلوص سے تعلیم دیتا رہا۔ ان طلبہ کے مستقبل میں منیمی کی تعلیم بڑے کام آئی اور وہ کامیاب کاروباری شخصیات ثابت ہوئے۔

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

اس خصوص میں اضافہ تصور کیا جاسکتا ہے۔ کبیر کی طرح طفیل صاحب بھی وسیع المشربی کی ڈگر کے مسافر ہیں۔ یہ چیز میرے نزدیک ان کی شاعری کا اہم رُخ بھی ہے اس لئے کہ یہ اسلام کی اصل روح کے عین مطابق ہے۔

گفتگو طویل ہوگئی ہے اور اس قدر طویل بیانی مناسب نہیں۔ لہٰذا آخر میں مختصر طور پر اتنا عرض کرتے ہوئے اجازت چاہوں گا کہ مجھے اُن کے کام کا مطالعہ کرتے ہوئے باطنی مسرّت کا احساس ہوا۔ یہ مجموعہ میرے لئے ایک خوانِ نعمت کی حیثیت رکھتا ہے۔ یہ چیز بھی میرے لئے باعثِ اطمینان ہوئی کہ ان کی فکر ہمارے ان کلاسیکی شعرا سے گُتھی ہوئی ہے، جنھوں نے زندگی کے تعمیری پہلوؤں کو نظر میں رکھا ہے اور بنیادی انسانی رشتوں کی بازیافت میں اپنی ذہنی و فکری صلاحیتوں کو بروئے کار لانے کی سعی کرتے رہے ہیں۔ اگر میں یہ کہوں کہ ہمارے یہ بزرگ شعرا انسانیت کے علمبردار اور سلامتی، فکر و نظر کے نقیب رہے ہیں، تو کچھ غلط نہ ہوگا۔

اس موقع پر اگر مجھے ابنائے دہر کی انگشت نمائی کا خیال نہ ہوتا تو اس کے ساتھ ساتھ یہ بھی کہتا کہ اس ملکِ زرنگار میں اب ایک اور سنہری کڑی کا اضافہ ہو چلا ہے اور وہ سنہری کڑی ہے طفیل ہوشیارپوری۔

ڈاکٹر احمر رفاعی

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

انہوں نے اسی نقطۂ نظر سے یہ کہا ہوگا ؎

پھیڑے جو بھی بیج کو آخر کو پچھتائے
کیچ میں پتھر پھینکیے کیچ سے منہ بھر جائے

کم ظرف لوگوں کے ہاتھ میں دولت کی بہتات نے جو گُل کھلائے ہیں، اس سے ہر درد مند دِل متأثر ہوتا ہے۔ زندگی کے اس سانحاتی مرحلہ پر ایک صوفی منش انسان کیونکر کرب اور اذیت سے دوچار نہ ہوگا۔ یہ اشعار ایسے ہی دُکھی دِل کی آواز ہیں ؎

انگاروں میں لفظ ڈھلیں اور شعلوں میں جذبات
لب جل اٹھیں، آئے لبوں پر جب کلجگ کی بات

حرف حرف شعلوں میں ڈھلے اگنی بنے زبان
کلجگ کے برتانت کی جانب جس دم جائے دھیان

اردو شعراء میں اس خصوص میں ہادی مچھلی شہری کا یہ شعر مجھے بہت پسند ہے ؎

رنگ کسی حالت میں نہ بدلا قسمت کی کوتاہی کا
میری باری جس دم آئی ٹوٹ گیا پیمانہ بھی

اسی موضوع پر فانی مرحوم کا یہ شعر بھی دل کو چھو لیتا ہے ؎

تعمیرِ آشیاں کی ہوس کا ہے نام برق
جب میں نے کوئی شاخ چُنی، شاخ جل گئی

طفیل صاحب نے اس جہانِ فانی میں عمر کا ایک طویل عرصہ بسر کیا۔ یہاں کے متعدد نشیب و فراز اُن کی نظر میں رہے ہے۔ اس معاملہ میں اُن کی توجیہات اور ان کی نوعیت خواہ تجرباتی ہو یا مشاہداتی، انتہائی گراں مایہ ہیں۔ یہ نووارد انِ بساطِ ہوائے دل کے لئے کچھ رہنما اصول وضع کرتے ہیں۔ اس سلسلہ میں صرف ایک شعر درج کرتا ہوں ؎

اس میلے سنسار میں یوں رکھ دِل کو صاف
کیچ کے اندر جس طرح رہے کنول شفاف

بھگت کبیر کے بعض فرمودات کی توجیہہ انھوں نے دُوسرے زاویے سے کی ہے، جسے

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

گھونگھٹ گھونگھٹ چندا چمکے　　آنگن آنگن پھول کھلے
کنج کنج میں اس کی باتیں　　پنگھٹ پنگھٹ اس کی یاد
ٹیکہ بن کر سلگ رہی ہے　　ماتھے پر چندن کی آگ

ایک دوست کے قول کے مُطابق یہ اصل میں فضائے شعر میں ستارے اُچھالنے کا فن ہے۔ ان حسین و جمیل حیاتی ، ذاتی معاملات کے بین بین متعلقاتِ حیات کی حکیمانہ گرہ کشائیاں بھی اپنا جواب نہیں رکھتیں۔ ایسے مواقع پر اُن کا مشاہداتی شعور سربستہ رازوں کی گرہ کشائی کرتا ہے۔ فکر و شعور کو نئے بال و پر میسّر آتے ہیں اور ذہن کے گوشے یکبارگی روشن ہوتے دکھائی دیتے ہیں ــــ بظاہر یہ سادہ سے اشعار کتنی عظیم آفاقی سچّائیوں کو اپنے جلو میں لئے ہوئے ہیں ؎

سانس کی نازک ڈور پر اتنا مت اتراؤ
جیون ساگر میں بہے تنکے کی اک ناؤ

کیوں سینہ تانے پھرے ہے او مُورکھ انسان
پیار جو نربل سے کرے اسے کہیں بلوان

وقت وقت کی بات ہے سمے سمے کے بول
پھوٹیں بھاگ تو لعل بھی بکیں کوڑیوں مول

رُوپ، جوانی، کو ملتا ہے ایک حسین سمان
کلیاں کھِل کر کیوں مُرجھائیں لے ان سے تو گیان

کانچ کے منکے بازاروں میں بکیں موتیوں مول
کنکر کہلاتے ہیں ہیرے یہ ڈبیا مت کھول

عام زندگی کے معمولات میں ایک خاص قسم کی احتیاط پسندی کی روش درکار ہے۔ اس معاملے میں بعض اوقات خفیف سا توازن بھی بگڑ جائے تو زندگی تلخیوں سے بھر جاتی ہے۔ غالباً

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

کیا جانیں وہ چرن کنول کب مہکیں میرے آنگن میں
آشاؤں کی جوت جگا کر پگ پگ نین بچھائے ہیں

جلتا ہو جنگل میں جیسے بیڑ مہکتے چندن کا
پھونک رہی ہے ایسے مجھ میں آگ مری تنہائی کی

اور جذبات کی ترنگ میں لہراتا ہوا کیا ہی عمدہ شعر کہا ہے ؎

کون سُنے سندگار کی باتیں نینن بولی سمجھے کون
نرموہی! بن ترے کہانی کون کہے انگڑائی کی

ذیل کے اشعار میں جذبہ و احساس کی ایک اور طرفہ دلکشی ہے ؎

پریت جان کا روگ سہیلی پریت کا روگ لگائے کون
کون جلائے جل میں دیپک آگ میں پھول کھلائے کون
سانسوں میں کلیاں سی مہکیں ہونٹوں پر مُسکائیں پھول
انگ انگ سے خوشبو نکلے پیار کا بھید چھُپائے کون

من میں پریم کی جوت جلی نینن بیچ سمائے نین
کہہ دیا بیری من کا بھید مول نہیں شرمائے نین

نینن گھات کے بارے میں یہ شعر بھی خوب ہے ؎

پلکوں کی اوٹ میں رہتے ہیں یہ نین بڑے شرمیلے ہیں

اس شعر کو پڑھا تو معاً فانیؔ کا یہ شعر یاد آگیا ؎

وہ دِل کی آڑ میں رہتے ہیں فانیؔ تمنا ان کے میرے درمیاں ہے،

اُن کے بیشتر اشعار میں فکر و خیال کی وہ تجلّی آب لطافتیں بھی ہیں، جن سے ذہن یک بہ یک روشن ہو جاتا ہے اور چشمِ تصوّر وہ سب کچھ دیکھ لیتی ہے جسے جانِ تصوّر کہا جائے تو غلط نہ ہوگا۔ کیا اِن اشعار کی معنوی فضا اس خصوصیت کی حامل نہیں؟

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

تو یہ اشعار اُن کے لئے تازیانے سے کم نہیں ہے

اُس کو راجہ مت کہو زر کا کہو اسیر
جس راجہ کے راج میں لُٹنے لگیں فقیر

رعیت کا دِن رات ہو دھندہ لوٹ کھسوٹ
راج وہ کیا جس راج میں سچ بھی بولے جھوٹ

جس راجہ کے راج میں برکھا بانٹے آگ
اس راجہ کے راج میں دھن دولت سب تیاگ

جھوٹوں کو ساچے کہلائیں بد کہلائیں نیک
راج وہ کیا جس راج میں بُرا بھلا سب ایک

طفیل صاحب کی سوچ صحیح تعمیری خطوط پر استوار ہے جو اُن کے ایک سچے مسلمان اور ایک اچھے انسان ہونے کی دلیل ہے۔

ہندی شاعری کا ایک بنیادی وصف اس کا حد درجہ دل گداز پیرایۂ بیان ہے۔ اس میں محبت کا اظہار چونکہ صنفِ نازک کی طرف سے ہوتا ہے لہٰذا اس کی لطافت اور رقتِ گداز کا عالم ہی کچھ اور ہے۔ ان کی ہندی شاعری جذبات کے ان نازک و لطیف تاروں کو ایک دلپذیر انداز میں چھوتی اور چھیڑتی محسوس ہوتی ہے۔ اس طرح کے اشعار کی لطافت سے بھلا کوئی صاحبِ ذوق کیسے انکار کر سکتا ہے ہے

دور کہیں پردیس میں جب سے میرا ساجن رہتا ہے
ساون رُکنے کے بعد بھی میری آنکھوں میں ساون رہتا ہے

میرے بس میں نہیں مرا جیون پی کے ہاتھوں میں من کی ڈور رہی ہے
بن کرتے ہیں جل کی رکھوالی من ہے کیا روپ کی تجوری ہے

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

مکھ پر پردہ ڈال کے تو نے کیسا کھیل رچایا ہے

یہ شعر پڑھتے ہوئے بیساختہ اُستاذی علامہ سیماب اکبر آبادی کا یہ شعر ذہن میں اُبھر آیا ؎

یہ دُنیائے مجاز آئینہ خانہ ہے حقیقت کا
چھپا کر اپنی صورت پھینک دی ہیں اپنی تصویریں

اسی مفہوم کو قدرے وضاحت سے طفیل صاحب نے یوں بیان کیا ہے ؎

تاروں کی لشکار میں تو نے
پھولوں کی مہکار میں تو نے
کیسے کیسے بھیس میں تو نے
اپنا روپ چھپایا ہے

طفیل صاحب نے ایک جگہ فرمایا ہے ؎

پوتھی پڑھ لے پیار کی علم سے مُنہ کو موڑ
پنڈت بننا ہے اگر سب گرنتھوں کو چھوڑ

نظیر اکبر آبادی نے اسی بات کو دوسرے انداز میں کہا ہے ؎

سب کتابوں کے کھُل گئے معنی
جب سے دیکھی نظیر دل کی کتاب

انسان کی جبلی فطرت کے باب میں طفیل صاحب کے ارشادات ہندی، عربی، فارسی اور اُردو کے متعدد اساتذۂ فن کے وجدانی تحرکات سے ہم آہنگ دکھائی دیتے ہیں۔ مثلاً اُن کے یہ اشعار ؎

نیچ کبھی بن سکے نہ اُتم کتنا مان بڑھاؤ
کانچ کا منکا بنے نہ موتی پانی لاکھ چڑھاؤ

آداب سیاست و حکمرانی کے باب میں انھوں نے بڑے دردمندانہ انداز میں اظہارِ خیال کیا ہے۔ کم و بیش نصف صدی سے اس مُلک میں جو کچھ ہو رہا ہے، وہ ان کی نظر میں ہے۔ وہ حقائق سے چشم پوشی کیونکر کر سکتے ہیں۔ یہ ایک قسم کی بددیانتی ہے اور اُن جیسے خُدا ترس انسان سے اس کی توقع ہو بھی نہیں سکتی۔ اگر اربابِ اختیار ذرا بھی انسانی و اخلاقی اقدار کے حامل ہوں،

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

ہے۔ واہ واہ کیا شعر کہا ہے ؎

رات کو کیسے دِن کہہ دوں مَیں دِن کو کیسے رات طفیلؔ
اندھیارے اندھیارے ٹھہرے اُجیارے اُجیارے ہیں

اسی موضوع کے ذیل میں ان کے متعدد اشعار نے متاثر کیا ہے ؎

لوبھی بندے، کالے دھندے، کھوٹے کاروبار ملے
سچائی کی جنس سے خالی دُنیا کے بازار ملے
بات بات پر قسمیں کھائے بات بات پر بولے جھوٹ
نام اس کا ہتیارے جگ میں پھر بھی رام اوتار ملے
نردھن کی کوئی بات نہ مانے کوئی نہ پوچھے نربل کو
کونے کونے میں دُنیا کے دھن کی جے جے کار ملے
میٹھی میٹھی بھولی بھالی باتیں ہیں اس دُنیا کی
منہ میں رام بغل میں چھُریاں لے کے سب سنسار ملے

ان کی شاعری پڑھتے وقت ہندی شاعری کے بھگتی دور کے متعدد شعرا کی گونج سنائی دیتی ہے۔ علاوہ ازیں اردو اور فارسی کے کئی شعرا ذہنی افق پر ابھرنے لگتے ہیں۔ مثلاً طفیلؔ صاحب فرماتے ہیں ؎

دیکھ سکے تو مورکھ بندے من کی آنکھیں کھول کے دیکھ
کون ہنسے تاروں میں چھُپ کر پھُولوں میں مُسکائے کون

اصغرؔ نے اپنے عارفانہ جذب میں ڈوب کر اس مفہوم کو اس طرح ادا کیا ہے ؎

لالہ و گل تم نہیں ہو، ماہ و انجم تم نہیں
رنگِ محفل بن کے آخر کون اِس محفل میں ہے

فانیؔ نے اس خصوص میں عوام الناس کی کم نگہی کا ماتم کرتے ہوئے ہی کہا ہو گا ؎

سامانِ صد نگاہ ہے ہر ذرّہ خاک کا
لیکن یہ دیکھنا ہے کوئی دیکھتا بھی ہے

طفیلؔ صاحب کے ان اشعار پر نظر جم کر رہ گئی ؎

یہ سنسار ہے تیری رچنا یہ جگ تیری مایا ہے

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

سوچ مالا

طُفیلؔ ہوشیارپوری کی تازہ کاوش زیرِ نظر آئی تو غیر ارادی طور پر اس کے مطالعے میں ایسا محو ہُوا کہ دو روز تک لکھنے پڑھنے کا کوئی اور کام نہ ہو سکا۔ غالباً اس کا ایک سبب یہ بھی ہوگا کہ ہندی شاعری سے مجھے بچپن ہی سے یک گونہ دلچسپی رہی ہے۔ "سوچ مالا" پڑھتے وقت مجھے بار بار یہ احساس ہُوا کہ لاہور میں بیٹھ کر اس معیار کی ہندی شاعری طفیلؔ صاحب کس طرح کر رہے ہیں؟ یہ احساس باعثِ حیرت بھی تھا اور نشاط افروز بھی۔ ان کے ہندی کلام کا مُطالعہ کرتے ہوئے روح کو ایک عجیب قسم کی آسودگی نصیب ہوئی۔ وجہ غالباً یہ ہے کہ مَیں ادب و شعر میں خالص کلاسیکی طرز کا دلدادہ ہوں نیز زندگی کے تمام معمولات میں بھی اسی انداز اور اسی رکھ رکھاؤ کو پسند کرتا ہوں۔ اس کتاب کی ورق گردانی کے دوران یہ احساس برابر جاگتا رہا کہ طفیلؔ صاحب نے ہمارے کلاسیکی شعر و ادب اور تہذیب کی روایت کو قدم قدم پر ملحوظ رکھا ہے۔ خُدا ترسی کا تصور اس تہذیب کا وہ بنیادی عُنصر ہے جس نے ان کے کلام کو پاکیزگی کی وہ جوت عطا کی ہے جس سے من مندر کے در و بام روشن ہو جاتے ہیں۔ یہی وہ تصوّر ہے جس کے احترام کے نتیجے میں اُن کی فکر و نظر بہکنے یا بھٹکنے نہیں پاتی۔ اس معاملے میں ان کا ذہن آئینے کی طرح صاف و شفاف ہے۔ ترقی کے اس نام نہاد دَور میں جب رہگزارِ حیات کے ہر موڑ پر حرص و ہوس کے ناگ کنڈلیاں مارے بیٹھے ہیں اور ان کی زہریلی پھنکار سے تمام فضا دھواں دھار سی ہو چلی ہے، طفیلؔ صاحب بڑی ثابت قدمی سے اس ڈگر پر چلتے چلے جا رہے ہیں، جس پر فکر کے سرمدی اجالے پھیلے ہوئے ہیں۔ نورانی کرنوں کی سوغات ان کے لئے قدرت کی جانب سے ایک بہت بڑا انعام

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

کتابی شکل عطا کرنے پر رضامند ہوئے اور اس کا اردو ایڈیشن پاکستان سے شائع فرمایا۔ ساتھ ہی مجھ سے وعدہ لیا کہ بھارت میں اُن کی یہ"سوچ مالا" ہندی زبان میں شامِ بہار ٹرسٹ انبالہ کے زیرِ اہتمام شائع ہو۔ اُدھر قبلہ مرحوم کی عمر نے وفا نہ کی اور اِدھر چند ناگزیر وجوہات کی بنا پر" سوچ مالا" کی اشاعت میں تاخیر ہوئی۔ ورنہ سوچ مالا کی تعارفی تقریب اور رسمِ رونمائی مرحوم کے ہاتھوں ہی انجام پاتی۔

میرے لئے اور اراکینِ شامِ بہار ٹرسٹ انبالہ کے لئے سوچ مالا کی اشاعت ایک اہم فریضہ تھا، جس سے بار آور ہونے کی پوری کوشش کی گئی ہے۔ میں اس موقع پر بہت خوش ہوں کہ مرحوم سے کیا ہوا وعدہ پورا ہوا۔

راجیندر ملہوترہ

چیئرمین شامِ بہار ٹرسٹ انبالہ

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

وعدہ اور پیار کا قرض

گذشتہ سالوں کے دوران جب بھی پاکستان گیا تو مرحوم طفیل ہوشیارپوری کی خدمت میں حاضری میرے لئے ایک مقدس فریضہ کی مانند رہی۔ طفیل صاحب مرحوم کی ادبی محفلیں جو کبھی تو وستہ ندی یا کبھی دریائے جہلم کے کنارے واقع رام گھاٹ میں سجا کرتی تھیں، نہ صرف رونقِ شہر ہی تھیں، بلکہ سماجی اور ادبی طور پر بھی اپنا خاص مقام رکھتی تھیں۔ ان محفلوں میں آنجہانی پنڈت رام جوایا خنداں، درشن سنگھ آوارہ، سید ضمیر جعفری اور محترم جوگی جہلمی کے علاوہ مرحوم طفیل ہوشیارپوری کی قدآور شخصیت بھی شریک ہوا کرتی تھی۔ ان تمام بزرگوں کی نظرِ عنایت نے مجھے ہمیشہ اسیرِ کرم رکھا۔ طفیل صاحب ازحد وضع دار، فصیح البیان، سیکولر نظریاتی اور اردو ہندی کے بہترین شاعر تھے۔ ان کی مرصع و پاٹ دار آواز کا ترنم اور ہندی پر پورا عبور، آسان یعنی سہلِ ممتنع کی شاعری، قابلِ فہم اور پُراثر جو سننے والے کے دل و دماغ پر فوراً قابض ہو جائے۔ غرضیکہ وہ بہت سی خوبیوں کے حامل تھے۔ اس کا بہت ہی کم لوگوں کو علم ہوگا کہ منیمی پر اُن کو پورا عبور تھا اور انکا [illegible] جہلم میں ہندی منیمی کا اسکول جاری رکھا۔

یوں تو دوہے کی صنفِ سخن پر بہت سے شعرائے کرام نے طبع آزمائی فرمائی ہے، مگر جو شہرت مرحوم طفیل صاحب کے دوہوں کو نصیب ہوئی، وہ ان کا ہی حصہ ہے۔

وہ میرے بہت زیادہ زور دینے پر بڑی مشکل سے اپنے ہندی کلام اور دوہوں کو

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

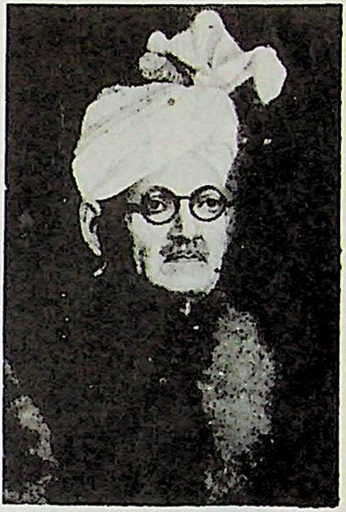

انتساب

اپنے محترم والدِ خلد آشیانی جناب باہری رام آسرہ مل ملہوترہ

اور

اپنی پیاری والدہ آنجہانی شریمتی لچھمی دیوی

کے نام

جن کی دعاؤں کے طفیل مجھے لفظ پڑھنے، سمجھنے اور لکھنے کی سعادت نصیب ہوئی۔

راجیندر ملہوترہ

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

حقوقِ اشاعت
بحق شامِ بہار ٹرسٹ، انبالہ
اشاعت: ۱۹۹۵ء

بہ اہتمام: کے۔ایل نارنگ ساقی

طباعت: اے ون آفسیٹ پرنٹرز
کوچہ چیلان، دریا گنج، نئی دہلی

پروڈکشن: میڈیا انٹرنیشنل
۲۳۶۶۔ باغیچی اچھے جی،
باڑہ ہندو راؤ دہلی ۱۱۰۰۰۶۔

ناشر: شامِ بہار ٹرسٹ، انبالہ
ملنے کا پتہ:
ہندوستان میں: شامِ بہار ٹرسٹ، پوسٹ بکس ۳۰ انبالہ ۱۳۳۰۰۱۔
پاکستان میں: احسان اکیڈمی، شیخ بلڈنگ، رائل پارک، لاہور۔
قیمت: ایک سو روپے

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

سوچ مالا

غزلیں، دوہے، گیت

طفیل ہوشیارپوری

مُرتّب
راجیندر ملہوترہ

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

شام بہار ٹرسٹ علم وفن کے فروغ کا ادارہ

راجندر ملہوترا چیئرمین

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitzed by eGangotri